मानवता पर व्यावहारिक अनुसंधान के उपरांत प्रस्तुत शोध प्रबंध

अनुसंधान का विषय- भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज और मानवता

शोधार्थी का नाम- राम कुमार कुम्हार

पंजीयन संख्या- HR/369/2 दिनांक- 8-05-2023

शोधार्थी का पता- रोनिजा जाट , लक्ष्मणगढ़, अलवर, राजस्थान

शोध पर्यवेक्षक/मार्गदर्शक – प्रो .(डॉ.) अजीत कुमार जैन

अनुसंधान अवधी- 3 वर्ष

दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र

DIVYA PRERAK KAHANIYAN HUMANITY RESEARCH CENTRE

An ISO 21001:2018 Certified Research Institution
Regd. Under Indian Trust Act 1882, Government of India
Regd. Under VHEP, Ministry of Education, Government of India
पंजीकृत कार्यालय- ठेकमा, जिला- आजमगढ़, उत्तर प्रदेश (भारत)

शोधार्थी घोषणा पत्र

मैं राम कुमार कुम्हार (शोधार्थी दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र) यह घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबंध "भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज का व्यक्तित्व और मानवता" जो व्यावहारिक अनुसंधान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है। इस शोध प्रबंध को प्रो.(डॉ.)अजीत कुमार जी जैन के पर्यवेक्षण/मार्गदर्शन में हमने पूरा किया है। मैं यह घोषणा करता हूँ कि इस शोध कार्य में किसी प्रकार की साहित्यिक चोरी नहीं की गई है तथा इससे पहले किसी अन्य डीग्री/ डिप्लोमा के लिए उपयोग नहीं किया गया है। यह भी प्रमाणित करता हूँ कि हमने अपना अनुसंधान कार्य **दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र** द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

दिनांक- 5 **मार्च, 2024**

शोधार्थी का हस्ताक्षर

नाम-राम कुमार कुम्हार

पर्यवेक्षक घोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र के अंतर्गत "भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज का व्यक्तित्व और मानवता" विषय पर शोधार्थी "श्री राम कुमार कुम्हार " द्वारा किया गया प्रस्तुत अनुसंधान मूल व अप्रकाशित भाग है । इनके द्वारा मेरे निर्देशन में यह शोध कार्य पूर्ण किया गया है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसंधान कार्य **दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र** द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है। मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनांक -5 मार्च,2024

पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर
नाम - प्रो.(डॉ.) अजीत कुमार जैन

भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज

कृतज्ञता ज्ञापन

मेरा अनुसंधान विषय - 'भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज का व्यक्तित्व और मानवता' है इस शोध अध्ययन के द्वारा समाज सेवा का समर्थन, मानवता का तात्पर्य , मानवता के रास्ते में आने वाली वैश्विक समस्याएँ ,मानवता की अवधारणा ,मानव सेवा की आवश्यकता व महत्व को समझने का एक सार्थक प्रयास किया गया है। बचपन से ही मेरा जीवन आध्यात्मिक विचारों और सनातनी संस्कारों से प्रभावित रहा है।
तुलसी ,मीरा ,रसखान, रैदास,कबीर जैसे महान कवियों के जीवन से मुझे विशेष प्रेरणा मिली है।एक शिक्षक और कवि के रूप में मुझे माँ शारदे ने सहृदयता और साहित्यिक अभिरुचि भी प्रदान की है। मैं माँ शारदे के चरणों में प्रणाम करते हुए यही प्रार्थना करता हूँ।

हे ! शारदे माँ ,हे ! शारदे माँ ।

अज्ञानता से हमें तारदे माँ।

राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित डॉक्टर अभिषेक कुमार जी से मेरा परिचय अंतरराष्ट्रीय भीम हॉल नई दिल्ली में कबीर कोहिनूर अवार्ड 2023 के समय हुआ। तभी मेरी मुलाकात भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज से हुई। उनके आध्यात्मिक दृष्टिकोण और मानवतावादी विचारों ने मेरी आत्मा को स्पर्श किया। तब से मेरे मन में मानवता पर कुछ नया करने की भावना जागृत हुई। उन्हीं की प्रेरणा और आशीर्वाद से मैंने यह अनुसंधान कार्य करने का मानस बनाया । मैं सर्वप्रथम असीम प्रभु परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ। जिन्होंने मुझे ऐसी मानवतावादी सोच और सामर्थ्य प्रदान की है। मैं महाराज श्री नानक दास जी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मेरा अहोभाग्य है जो मुझे उन पर अनुसंधान करने का पुनीत अवसर मिला है। मैं इस अनुसंधान कार्यक्रम के मैनेजिंग डायरेक्टर आदरणीय डॉ.अभिषेक कुमार जी का भी बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। जिनका मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा है । मैं सूचना एवं अनुसंधान अधिकारी आर सी यादव साहब का भी आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आभार व्यक्त करता हूँ आदरणीय प्रो.(डॉ.) अजीत कुमार जी जैन का जिनके मार्गदर्शन में इस अनुसंधान कार्य को पूर्ण किया गया है। मैं स्वामी केशवानंद शिक्षण संस्थान लक्ष्मणगढ़, अलवर के संस्थापक श्री मोरध्वज सिंह जी चौधरी का भी हृदय की अनन्त गहराइयों से धन्यवाद करता हूँ । जिनकी प्रेरणाओं ने मेरा उत्साहवर्धन किया है। कम्प्यूटर संचालक दयाराम जी सैनी का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ , जिन्होंने मुझे इस शोध कार्य को लिपिबद्ध करने में सहायता प्रदान की है।मेरे जीवन को ऊँचाई प्रदान करने में मेरे पूजनीय माता-पिता व मेरी अर्धांगिनी श्रीमती सीमा देवी का विशेष योगदान रहा है। मैं उनका भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं उन सभी लेखकों और प्रकाशकों का भी धन्यवाद करता हूँ। जिनका प्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि मेरे इस मानवतावादी अनुसंधान कार्य से समाज में सेवा ,समर्पण, त्याग,कर्म, शांति, प्रेम, व मानवतावादी सोच को बल मिलेगा। समाज में एकता व समरसता की भावना प्रतिष्ठित हो सकेगी।

शोधकर्ता

राम कुमार कुम्हार

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	प्रकरण	पृष्ठ संख्या
1	अनुसंधान का परिचय	1
2	शोधार्थी का घोषणा - पत्र।	2
3	पर्यवेक्षक घोषणा- पत्र।	3
4	महाराज जी का छाया चित्र।	4
5	कृतज्ञता- ज्ञापन।	5
6	अनुक्रमणिका।	6
7	सन्दर्भ ग्रंथ व साक्ष्य स्रोत सूची।	7
8	भूमिका।	8 -10
9	अनुसंधान कार्य की आवश्यकता क्यों?	11
10	मानवता पर शोध की उपयोगिता।	12
11	शोध कार्य की संभावनाएं।	12
12	सन्त नानक दास जी और मानवता का तार्किक विश्लेषण।	13 -14
13	संत नानक दास जी महाराज का व्यक्तित्व व कृतित्व परिचय	15-17
	(क) जीवन परिचय	
	(ख) कृतित्व	
	(ग) शिक्षक के रूप में योगदान	
	(घ) राष्ट्र निर्माण में योगदान	
14	मानवता वाद के हितार्थ संत नानक दास जी के विचार	18-24
15	संत नानक दास जी के	

	समाज सुधार हेतु किए गए कार्य।	25-32
16	संत नानक दास जी महाराज के सामाजिक उपदेश।	33-37
17	मानवता का परिचय।	38-46
	(क) मानवता वाद की आवश्यकता क्यों ?	
	(ख) हम मानवता का परिचय कैसे दे सकते हैं ?	
18	मानव धर्म सर्वोपरि है।	47-51
19	धर्म भावना का विकास कैसे करें।	52-54
20	जीवन में संवेदनशीलता का महत्व।।	55-59
21	सच्चे सुख तलाश करें।।	60-63
22	श्रेष्ठ दुनिया निर्माण में सन्तों का योगदान।	64-78
	(क) कबीर दास जी का समाज सुधार में योगदान	
	(ख) तुलसी दास जी के साहित्य में मानवता	
	(ग) भारत की राष्ट्रीय एकता में जैन सन्तों का योगदान	
23	मानवीय मूल्यों की आवश्यकता के सम्बंध में शोधार्थी का नजरिया।	79-82
24	मानवीय शोध का सार।	83-87

सन्दर्भ /साक्ष्य स्रोत

1 मानवता वाद - विकिपीडिया
2 नानक दास जी महाराज का व्यक्तिगत साक्षात्कार
3 कबीर पर उपलब्ध साहित्य पढ़कर
4 नानक दास जी के गाँव जाकर परिजनों से बातचीत करके
5 समाज निर्माण मे सद्गुरु कबीर का योगदान पुस्तक(लेखक डॉ. अभिषेक कुमार)
6 दिव्य प्रेरक कहानियाँ वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी
7 मानवता का विकास पुस्तक(डॉ. श्याम मनोहर व्यास)
8 कर्म की महिमा पुस्तक(डॉ. श्याम मनोहर व्यास)
9 राम चरित मानस
10 राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर समाचार पत्रों से प्राप्त जानकारी।

भूमिका

शांत और सुखी रहना आत्मा की प्रकृति है।

छल ,क्रोध और हिंसा आत्मा की विकृति है।

दुःख सहकर दूसरों को सुख देना कृति है।

जीओ और जीने दो , यह हमारी संस्कृति है।

भारत ऋषि, मुनि तपस्वी, कर्मयोगी महापुरुषों की जन्मस्थली रहा है। उन्हीं के पवित्र ज्ञान से यहाँ की संस्कृति और सभ्यता का विकास हुआ है। यही संस्कृति हमें संसार में दुनिया से अलग पहचान दिलाती है।हमारा भारत वर्ष सनातन काल से ही एक विशाल देश रहा है ।इसमें अनेक जाति ,धर्म, वर्गों, मान्यताओं ,विचारधाराओं और भाषाओं को मानने वाले लोग मिलजुल कर रहते आए हैं । यह हमारी सनातनी परम्परा रही है। जिस प्रकार एक पुष्प वाटिका की शोभा बहुरंगी पुष्पों से होती है, एक ही रंग के पुष्पों से नहीं। ठीक इसी प्रकार से हमारा देश अनेक विभिन्नताओं को समेटे हुए एक सुंदर उद्यान की तरह सुशोभित है। यहाँ हिंदू ,मुसलमान, सिख ,पारसी, इसाई ,जैन ,बौद्ध सभी धर्म के लोग अमन और प्यार से रहते हैं। यहां पंजाबी, मद्रासी बंगाली, कश्मीरी एक साथ रहते हैं। लेकिन पहले सभी भारतवासी हैं । भारत की विषमताएं भारतीय लोगों को तोड़ती नहीं बल्कि एक माला में पिरोये रखती है।ये विभिन्नताएं हमें कमजोर करने की अपेक्षा शक्तिशाली बनती हैं। यही हमारे देश की मूल ताकत है ।जिसका उदाहरण संकट के समय अनेक बार देखा भी गया है।यहाँ दीवाली,
दशहरा ,ईद ,क्रिसमस ,गुरु पर्व जैसे विभिन्न त्योहार पूरे राष्ट्र के लोग एक साथ मिलजुल कर हर्षोल्लास से मनाते हैं। यही एकता की भावना हम भारतीयों की विशेषता है । जो हजारों सालों से भारतीय सनातन संस्कृति में रची बसी हुई है। समाज के हर प्राणी के लिए मर्यादित रहना भी बहुत जरूरी है। चाहे वो स्त्री हो अथवा पुरुष। मर्यादा आध्यात्मिक ज्ञान से विकसित होती है। आध्यात्मिक ज्ञान हमें विनम्रता, सदाचार और अनुशासन प्रदान करता है।मर्यादा वो लक्ष्मण रेखा है जिसे लाँघने पर रावण जैसे दुराचारियों के साहस को बल मिलता है। हमें संकट के समय मर्यादित रहकर जाति पाँति की संकीर्ण सोच से बाहर निकाल कर राष्ट्रीय एकता का परिचय देना चाहिए। यही एकता की भावना हमें मातृभूमि के प्रति सच्चा प्रेम करना सिखाती है। सारे संसार के लोग एक परिवार की भांति प्रेम और सद्भाव के साथ रहे यही हमारी राष्ट्रीयता का मूल मंत्र है। हमारी सनातन संस्कृति की नैतिकता,परंपरा एवं एकता का श्रेय हमारे संतो, ऋषि- मुनियों को जाता है। क्योंकि संत अपने हृदय में वसुधैव कुटुंबकम की भावनाओं को लेकर आगे बढ़ते हैं। प्राचीन काल में शंकराचार्य, कबीर ,कपिल मुनि,वशिष्ठ ,रामानंदाचार्य ,तुलसी, नानक देव ऐसे ही संत थे । आज भी विश्व शांति दूत जैन मुनि श्री लोकेश जी महाराज ,सुधीर जी महाराज,सद्गुरु कबीर मठ मगहर ,काशी के संत श्री विचार दास जी

महाराज। विश्व शांति व वैश्विक एकता के लिए निस्वार्थ काम कर रहे हैं। मैं जिस प्रसिद्ध संत के बारे में बात करने जा रहा हूं, वे हैं भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज ,जो बड़ी खाटू ,जायल ,नागौर ,राजस्थान स्थित सदगुरु कबीर सेवा संस्थान के अध्यक्ष हैं। जिनका उद्देश्य विश्व के मानव मात्र को जोड़कर एक श्रेष्ठ व आदर्श दुनिया का निर्माण करना है।संत नानक दास जी के विचारों की आज मानव मात्र को महती आवश्यकता है। क्योंकि आज विश्व में मानवता को बांटने वाली ताकतें सक्रीय हो गई है ।कुछ स्वार्थी लोग अपने तथाकथित संगठन बनाकर मानवता को कमजोर करने में लगे हुए हैं। न तो उन्हें सनातन धर्म का ज्ञान है और न ही इतिहास का। ये लोग मानवता के रक्षक के स्थान पर भक्षक सिद्ध हो रहे हैं ।अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए भोले भाले लोगों को धर्म के नाम पर गुमराह कर रहे हैं। ऐसे में संत नानक दास जी महाराज विश्व एकता की ओर अपने अनवरत कदम बढ़ा रहे हैं। उनका यह यह प्रयास मानवता की दृष्टि से बहुत ही सराहनीय और सार्थक है। वे साहचर्यजनित सहयोग की भावना को बल देते हैं।एक सबके लिए और सब एक के लिए के सिद्धांत पर वे कार्य करते हुए दिखाई देते है ।समाज के प्रति समर्पण की भावना उनके कद और सम्मान को कई गुणा बढ़ा देती है। उनके मुखमंडल पर आध्यात्मिक तेज झलकता है, व्यवहार में शालीनता और विचारों में आशा और उत्साह का स्वर दिखाई पड़ता है।काम में तूफ़ान की सी स्फूर्ति दिखाई पड़ती है। आपके द्वारा किए गए मानवहितार्थ कर्म आपको मानव से महा मानव बनाते हैं। आपकी छवि केवल भारत में ही नहीं बल्कि वैश्विक पटल पर उभर कर सामने आ रही है। जो हमारे लिए बहुत ही गौरव का विषय है ।आपका सपना अखण्ड व श्रेष्ठ भारत निर्माण का है । जो प्रकृति के सभी जीवों का कल्याण चाहता हो ,पर्यावरण की रक्षा करना जिनका नित्य कर्म हो, मानव सेवा ही जिनका धर्म हो ,विश्व शांति और अहिंसा में अटल विश्वास हो, श्रेष्ठ दुनिया बनाने का जिनका स्वप्न हो, ऐसे उदार मना कर्मयोगी ,हृदयवत्सल ,परोपकारी,भारत भूषण संत के चरणों में मेरा कोटि-कोटि वन्दन और नमन।

मेरी लेखनी सफल हुई

मेरी ये क्षुद्र लेखनी हो कृतज्ञ,

जो लिखने गुरु का गान चली।

श्रद्धा से शीश झुका कर के,

अर्पित करने शब्दप्रसून चली।

हृदय वत्सल हैं गुरुदेव मेरे,

जो सदा हारे को गले लगाते।

वे देख सफलता शिष्यों की,

निज मन में फूले नहीं समाते।

वे जितने सहज -सरल से हैं,

उतने ही ज्ञान -सिंधु में गहरे।

अति मृदुल है वाणी जिनकी,

जो शिष्यों के दिल में ठहरे।

जो श्वेत-वस्त्र बदन पर पहने,

आभा-युक्त मुखमण्डल वाले।

भव -बन्धन कट जाते उनके,

जिन पर साहेब नजरें डाले।

आज मेरी लेखनी सफल हुई ,

जो करने गुरु को नमन चली।

शब्दों की पावन समिधा लेके,

जग हित में करने हवन चली।

राम कुमार प्रजापति

अलवर, राजस्थान

अनुसंधान कार्य की आवश्यकता क्यों ?

अनुसंधान या शोध कार्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। शोध से तात्पर्य है ज्ञान की खोज करना। किसी विषय की खोज करके उसकी तह तक जा कर मन की जिज्ञासाओं का समाधान करना ही अनुसंधान है। नए सिद्धान्तों की खोज करना व पुराने सिद्धान्तों का पुनः परीक्षण करना ही अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य है। शोध मनुष्य के ज्ञान को एक नवीन दिशा प्रदान करता है ।

प्राप्त ज्ञान भंडार को विकसित और परिमार्जित करता है। जिससे नए सिद्धान्तों को गढ़ने में आसानी रहती है। भविष्य के शोधकर्ताओं को एक आधारशिला मिलती है।

अब तक विभिन्न विषयों पर अनुसंधान कार्य तो बहुत हुए हैं लेकिन मानवता जैसे विषय पर अभी भी अनुसंधान करने की बहुत आवश्यकता है। मैं भारत भूषण संत श्री नानक दास जी के जीवन को व उनके सामाजिक कार्यों को मानवतावाद से जोड़कर विश्लेषण कर रहा हूँ। मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर सामाजिक कार्यों में सहयोग करना सीखता है। समाज उसके लिए सर्वोपरि होता है। उससे अलग रहकर उसका कोई अस्तित्व नहीं है। समाज में भाई चारा,आपसी प्यार ,प्रेम

सौहार्द की भावना बनी रहे। इसके लिए इस तरह के अनुसंधान होने बहुत जरूरी है। इसलिए मैंने भी मानवतावाद पर शोध कार्य करना आवश्यक समझा। मेरे इस कार्य से पाठकों को व भविष्य की पीढ़ियों को मानवता जैसे विषय को समझने में आसानी होगी।

मानवता पर शोध कार्य की उपयोगिता

मेरे इस मानवतावादी अनुसंधान कार्य से समाज में संदेश जाएगा कि हम सभी जाति ,पाति, भाषा ,मजहब की संकीर्णताओं से बाहर निकलकर मानवता के विकास के लिए कार्य करेंगे। चाहे रास्ते में कितनी ही चुनौतियां क्यों ना आए ? हम सब मिलकर उनका सामना करेंगे। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों का अंत होगा। जिससे समाज और राष्ट्र को एक नई दिशा मिलेगी। मेरा यह शोध पत्र सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक एकता में उपयोगी सिद्ध होगा। यह शोध पत्र भारत भूषण संत श्री नानक दास जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस शोध कार्य से पाठकों में सकारात्मक और सृजनात्मक अभिवृत्तियों का विकास हो पाएगा। इस तरह संपूर्ण मानवता के विकास की दृष्टि से मेरा यह शोध पत्र बहुत उपयोगी है।

शोध कार्य की संभावनाएं

प्रस्तुत कार्य का मुख्य उद्देश्य यह रहा है की समाज से सामाजिक संकीर्णताओं का अंत हो और मानव धर्म की स्थापना हो। मानव समाज में शाश्वत व नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना होगी। सभी अपने समाज, संस्कृति, धर्म राष्ट्र और मानवता के प्रति उदारता अपनाएंगे, अहिंसा का पालन करेंगे ,नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाएंगे, ऐसी अपेक्षाएं पाठकों से और वैश्विक समाज से की जाती हैं। इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने वैश्विक जगत में मानव धर्म को अपनाने का संदेश दिया है । समर्थ शक्तिवान लोग गरीब,असहाय, विकलांग ,दलित वर्ग के लोगों की सहायता करेंगे। ऐसी प्रेरणा प्रदान की गई है । जिससे मानवता का वास्तविक महत्व सिद्ध होगा । बहुत से शोध अब तक शोधकर्ताओं ने किए हैं लेकिन मानवता ऐसा विषय है जो अभी भी शोध कार्य से अछूता रहा है। इसलिए मैंने मन बनाया कि इस कार्य पर शोध होना चाहिए। जिससे लोग मानवता को समझे,जाने और अपने आचरण में ढालने का प्रयास करें। महंत श्री नानक दास जी और डॉ अभिषेक कुमार जी की मानवता वाद के क्षेत्र में की जा रही पहल सार्थक व सराहनीय है। जिसमें असीम संभावनाएं समाई हुई हैं। इसकी शुरुआत हम दिव्य कहानियाँ मानवता अनुसंधान संस्थान के माध्यम से कर रहें हैं।

मुबारक हो सीढ़ियाँ उन्हें,

जिन्हें छत पर जाना है...।

आसमां से आगे है मंजिल मेरी,

मुझे रास्ता खुद बनाना है...।

संत नानक दास जी महाराज और मानवता का तार्किक विश्लेषण

अनुसंधान शोधकर्ता की अथक मेहनत, लगन ,गहन खोज और तार्किक बुद्धि की उपज है। उसके द्वारा किया गया अनुसंधान सार्थक ,तथ्य परक व उपयोगी होना चाहिए। लेखन शैली ,सुस्पष्ट ,संक्षिप्त और भाव परक होनी चाहिए। भाषा ऐसी हो जो आम आदमी और पाठकों को आसानी से समझ में आ जाए। कठिन व रूढ़ शब्दों के प्रयोग से परहेज करना चाहिए । वाक्य का भावार्थ पाठकों को सहजता से समझ में आ जाना चाहिए। ऐसी भाषा का शोधकर्ता को उपयोग करना चाहिए। इस लिहाज से प्रस्तुत अनुसंधान मैंने सहज सरल शब्दों में लिखने का प्रयास किया है। जो एक हिंदी भाषी पाठक को आसानी से समझ में आ जाएगा। कुछ स्वरचित काव्य पंक्तियों का भी मैंने प्रयोग किया है। जो प्रेरक व पाठकों में रुचि पैदा करने वाली हैं ।समाज सेवा व मानवता के पथ पर चलना ऊँची सोच रखने वाले सेवाभावी इंसानों का एक महत्वपूर्ण गुण है। नानक दास जी का विजन कुछ ऐसा ही है , वो हमेशा नया करने की सोचते हैं। वे सत्य ही धर्म है और धर्म ही जीवन है की विचारधारा को अपने जीवन में पाले हुए हैं।

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी कहा है-

यही पशु प्रवृत्ति है , जो आप आप ही चरे।

वही मनुष्य है कि ,जो मनुष्य के लिए मरे।

भारत देश सदा सर्वधर्म समभाव को समेटे हुए पंथनिरपेक्षता का समर्थन करता रहा है।

नानक दास जी इसी परंपरा का निर्वहन कर रहे हैं। उनके संकल्प और प्रयासों से एक दिन जरूर ऐसा समय आएगा जब मान्यतावाद का अंत होगा और संपूर्ण विश्व में मानवतावाद का कमल अपनी सुगंधी बिखेरेगा। इस संसार में ऐसी कोई उपलब्धि नहीं है ,जिसे मनुष्य जीवन में प्राप्त नहीं कर सकता । आवश्यकता बस लगन और लक्ष्य को ध्यान में रखकर आगे बढ़ने की है। हम दीन - हीन ,बेसहारा,विकलांग लोगों की सहायता करके मानवता का परिचय दे सकते हैं। किसी व्यक्ति का परिचय जाने बिना उसकी सेवा, मदद कर देना ही सच्ची मानव सेवा है। शास्त्रों में नर सेवा को नारायण सेवा बताया गया है । मानवता की सेवा करना गृहस्थियों और संतों का आभूषण है। जिसके लिए त्याग और दान बहुत जरूरी है। त्याग वह नहीं है ,जिसे हम समझ कर बैठे हैं। यदि हमारे पास कोई वस्तु है और उसकी हमें भी आवश्यकता है। इसी वस्तु की दूसरे व्यक्ति को भी आवश्यकता है। हम अपनी आवश्यकता को त्याग कर दूसरे की मदद कर दें। यही सच्चा त्याग है, इसे ही दान कहा जाता है । ऐसे ही दान का फल मिलता है । ऐसा हिंदी के प्रसिद्ध लेखक धर्मवीर भारती जी ने लिखा है। नरसी भगत ने 56 करोड़ की संपत्ति गरीबों व बेसहारों में बाँट दी थी। तब जाकर वे भगवान श्री कृष्ण के प्रिय बन सके। फिर कृष्ण ने उसकी बहन के यहाँ भात भर के उस दान का मूल्य चुकाया था। दानवीर कर्ण,शिवि ,दधीचि की कहानियाँ सब जानते हैं। ठीक ऐसा ही त्याग नानक दास जी महाराज ने अपने जीवन में किया है । वे भी गरीब बेटियों की शादियों में मदद करते हैं। उनका सहारा बन कर मदद करते हैं। इसलिए मुझे उनकी विचारधारा बहुत पसंद है। मेरे शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य भी देश की भावी व वर्तमान पीढ़ी के मन में सेवा, समर्पण ,दया ,परोपकार जैसे उच्च मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना करना है।

समाज का कर्ज बहुत है हम पर, उसे चुकाना होगा।

मानव जीवन पाके, हमें सेवक धर्म निभाना होगा।

संसार में मानव मूल्यों की स्थापना के लिए जिन महापुरुषों ने अपना जीवन लगाया है। उनके जाने के बाद भी उनके विचारों और कार्यों की प्रासंगिकता बनी रहती है। कबीर, नानक ,रैदास, ईसा मसीह, महात्मा बुद्ध ,महावीर के विचार

आज भी मानव मूल्यों की दृष्टि से प्रासंगिक हैं। नानक दास जी महाराज की मानवतावादी सोच आधुनिक मानव समाज के लिए बहुत उपयोगी है और भविष्य में भी रहेगी। नानक दास जी के विलक्षण व्यक्तित्व में स्वतंत्रता ,सदाचार ,ओजमय विचार, उदारता , सेवा भावना के गुण मौजूद हैं। उनका व्यक्तित्व भले ही एक संत का है लेकिन उसमें समाज के लिए सेवा भावना का हित सम्माहित है। उन्होंने जो कबीर तालाब का निर्माण करवाया है, वह सार्वजनिक भलाई के लिए है । नानक दास जी अहिंसा और शान्ति पर आधारित साफ सुथरा समाज चाहते हैं । उनकी नजर में समाज एक है, समाज में एकता की भावना लाकर ही आपसी सौहार्द बढ़ाया जा सकता है । वह अपने आश्रम में रखकर निजी खर्चे पर जरूरतमंद, अभावग्रस्त बच्चों को पढ़ा रहे हैं। उन्हें गायन वादन जैसी कलाओं में निपुण बना रहे हैं। यह संस्कारों को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने का माध्यम है ।आज उनकी विचारधारा को देश-विदेश में हजारों लोग अपना चुके हैं । उन पर चलकर मानव हित में कार्य कर रहे हैं। उनके द्वारा मानवतावाद पर अनुसंधान संस्थान की स्थापना की गई है। जो मानवतावाद की दृष्टि से श्रेष्ठ और अप्रतिम पहल है । जब इस विषय पर लोग शोध करेंगे तो वह जरूर एक मानवतावादी इंसान होंगे । क्योंकि एक सच्चा मानवतावादी ही इस कार्य को कर सकता है। यदि वह नहीं भी है तो उसे बनना पड़ेगा । वे बहुत से नौजवान लड़कों को देश-विदेश में नौकरी व रोजगार दिला रहे हैं। इससे बढ़कर और सेवा का उदाहरण क्या हो सकता है ? समाज में व्यावहारिक तौर पर भेदभाव व व्यक्तिगत भिन्नता के कारण सांप्रदायिक कटुता बनी रहती है । नानक दास जी इस कटुता को मिटाकर भाईचारे का विकास करना चाहते हैं। उन्होंने अपने शब्दों में साफ कहा है कि राम और अल्लाह में जरा भी फर्क नहीं है। वे दोनों को एक ही मानकर भक्ति करते हैं। हिन्दू ,मुस्लिम,सिख,ईसाई, जैन, पारसी सभी उनके अनुयायी बने हुए हैं। इस बात से सिद्ध हो जाता है कि उन्होंने स्वयं को संकीर्णता की विचारधारा से ऊपर उठाकर आध्यात्मिकता के चरम शिखर को प्राप्त कर लिया है । उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से साफ झलकता है कि वे एक सच्चे मानवतावादी संत है । वे वैश्विक समाज को ऊँच- नीच ,जातिगत भिन्नता,हिंसा भ्रष्टाचार की कीचड़ से निकालकर आध्यात्मिक ,मानवतावादी आदर्श समाज के रूप में देखना चाहते हैं। उनके उपदेश सार्वजनिक ,सार्वभौमिक, मानवतावादी ,विश्व कल्याणकारी हैं। वे रोज लाइव आकर के लोगों को मानव सेवा के लिए प्रेरित और उपदेशित करते हैं । उनके द्वारा किये गए कई बड़े सामाजिक व धार्मिक आयोजन उनकी कार्यकुशलता और व्यापक सोच के परिचायक हैं। ये लक्षण जो मैंने गिनाए हैं यह सभी मानवतावादी सोच के हैं ।

जिससे स्पष्ट होता है की नानक दास जी महाराज के आचरण और विचारों में मानवतावाद कूट-कूट कर भरा हुआ है। मानवता वाद असीम सम्भावनाओं से युक्त एक उच्चस्तरीय विचार धारा है। जो चाहती है संसार में किसी भी प्रकार की अराजकता और अशांति न हो।सभी सहयोग और अमन के साथ जीवन यापन कर सके।ऐसा वातावरण नानक दास जी के विचारों से सम्भव दिखाई देता है। यही कारण है कि मैं नानक दास जी के विचारों का खुले मन से समर्थन करता हूँ।

भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज का व्यक्तित्व व कृतित्व परिचय।

हवाओं को , फिजाओं को ,घटाओं को

नाज़ है तुम पर।

बहारों को , सितारों को , नजारों को

नाज़ है तुम पर।

ओ ! विश्व जगत के दैदीप्यमान संत

भारत के गगन को,अमन के चमन को

नाज है तुम पर।

भारत में भक्ति आंदोलन के प्रणेता रहे जगतगुरु रामानंदाचार्य जी महाराज की द्वादश शिष्य परंपरा में निर्गुण भक्ति मार्ग के संत शिरोमणि कबीर दास जी महाराज के विचारों पर स्थित कबीर चौरा मठ मगहर की परंपरा में भारत भूषण संत श्री नानक दास जी महाराज बीजक पाठी का जन्म धोरों की धरती राजस्थान राज्य के नागौर जिले की जायल तहसील के धीजपुरा नामक गाँव जो अब बड़ी खाटू के नाम से प्रसिद्ध है के एक साधारण मेघवाल परिवार में हुआ था। आपके पिताजी मदनलाल मेघवाल माता श्रीमती धापू बाई धीजपुरा गाँव के मूल निवासी थे। जिनके यहाँ 30 सितंबर, 1975 को भारत भूषण महंत श्री नानक दास जी महाराज का मानव हितार्थ अवतरण हुआ।आप अपने पिता की 6 सन्तानों में दूसरी संतान थे। आपका बचपन का नाम नानूराम था। आपने राजकीय प्राथमिक विद्यालय धीजपुरा से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की । राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बड़ी खाटू नागौर से उच्च प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की । उच्च माध्यमिक विद्यालय छोटी खाटू नागौर से आपने 11 वीं और 12 वीं की परीक्षाएं उतीर्ण की। उसके बाद आप तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने नागौर आए और राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नागौर से आईटीआई की डिग्री प्राप्त की।आपने राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज धौडा भाटा अजमेर से पॉलिटेक्निक की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद आपने जनकल्याण के लिए 1 साल राजकीय चिकित्सालय नागौर में अपनी नि:शुल्क सेवाएं प्रदान की। आप 1008 श्री देवी दास जी महाराज के द्वारा गोद ले लिए गए तथा 1980 में आपने देवी दास जी महाराज से संन्यास की दीक्षा ली और अपने जीवन को पूरी तरह मानव सेवा में समर्पित कर दिया।संन्यास लेने के बाद आपने जैन विश्व भारती से पुन: 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण की और स्नातक और स्नातकोत्तर की परीक्षाएं भी पास की। आप बचपन से ही प्रज्ञा बुद्धि और बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं।

आपको दो बार मानव डॉक्टरेट की उपाधि सहित भारत भूषण संत के गौरवमयी सम्मान से सम्मानित किया गया है।

आपने आचार्य 1008 श्री भोलाराम जी महाराज के जीवित समाधि स्थल देवरी धाम में बीजक पाठ व सन्त वाणी का गहन अध्ययन किया। साथ ही संतों के सानिध्य में योग अभ्यास, मौन साधना व भजन सत्संग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संत समाज गुरु धाम पालनपुर तथा अखिल भारतीय कबीर पंथ शिरोमणि गुरुद्वारा काशी के 23 वे गाधीपति

आचार्य श्री गंगा शरण दास जी शास्त्री के द्वारा श्री राम नरेश आचार्य जी महाराज की पावन उपस्थिति में आपको सनातन धर्म की विधिवत शिक्षा प्रदान की गई। उसके बाद आपने अपना पूरा जीवन सत्संग, त्याग, तपस्या ,साधना में व्यतीत करते हुए सनातन धर्म संस्कृति ,मानव मात्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया । आपने पर्यावरण रक्षा के लिए आम जन में चेतना लाने का प्रयास किया। समाज के उत्थान और विकास के लिए नशा मुक्ति और सामाजिक समरसता ,सद्भावना आंदोलन चलाया। ऋषि काल के प्राचीन ऐतिहासिक स्थल टीकोरिया (बड़ी खाटू)का पुनः जन सहयोग से जिर्णोद्धार करवाया। इस तरह आपके प्रयासों से सन 2007 में बड़ी खाटू में छापरी की डूंगरी पर कबीर चौरा मठ परंपरा में अखिल भारतीय सदगुरु कबीर सेवा संस्थान की स्थापना की गई ।जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर 78/ नागौर राजस्थान सरकार एवं नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। आपके द्वारा प्रकृति, पर्यावरण के संरक्षण के लिए वन्य जीव एवं वन्य पर्यावरण ग्रामीण विकास संस्थान की भी स्थापना की गई है।आपने तत्कालीन जिला कलेक्टर नागौर के विशेष प्रयासों से 'जल ही जीवन है' के आदर्श वाक्य को सार्थक बनाने के लिए राष्ट्रीय संत कबीर सरोवर की स्थापना की ।आपके द्वारा किए गए यह सभी प्रयास जनहित और पर्यावरण को ध्यान में रखकर किए गए। आपके द्वारा किए गए इन उत्कृष्ट कार्यों के लिए देश-विदेश की सरकारों व संस्थाओं के द्वारा अनेक बार सम्मानित भी किया जा चुका है। आपको भारतीय धर्म ,संस्कृति परंपरा के जगतगुरु ,शंकराचार्य ,रामानंदाचार्य एवं योग गुरुओं ,जैन मुनियों द्वारा आशीर्वचन सम्मान पत्र एवं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ,राज्यपाल ,केंद्रीय मंत्रियों ,मुख्यमंत्री, सांसद ,विधायकों जैसे देश के प्रशासनिक अधिकारियों के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन ,शुभकामनाएं संदेश भेजकर आपके कार्यों को प्रोत्साहन प्रदान किया जाता रहा है। आप भारतीय धर्म संस्कृति और हिंदी भाषा का प्रचार करते रहे हैं। आप अपने मृदु भाषी व्यवहार ,आत्मीय प्रेम ,उत्साह, ओजस्वी विचार और अद्भुत कार्य कुशलता से शीघ्र लोगों का दिल जीत लेते हैं ।मैंने स्वयं आपको देखा है। जो व्यक्ति आपसे एक बार बात कर लेता है वह आप ही का हो जाता है ।यह गुण आध्यात्मिक शक्ति और वर्षों की तपस्या से अर्जित होता है। जो आपको सहजता से प्राप्त है।

आपकी पहचान देश-विदेश में मातृभूमि रक्षक और मानवतावादी संत के रूप में उभर कर सामने आ रही है। आपके मानवतावादी विचारों से ही बड़ी खाटू में संत कबीर उद्यान, संत कबीर सहज योग साधना केंद्र ,संत कबीर बीजक शोध संस्थान ,गुरुकुल संत कबीर महाविद्यालय, गो चिकित्सालय ,अनुसंधान केंद्र बनवाया जाना प्रस्तावित है ।जो की राजस्थान राज्य के बड़ी खाटू व छोटी खाटू के बीच छापरी की डूंगरी पर बड़ी खाटू एन एच-

458 पर स्थित है ।आपके द्वारा की गई वर्षों की अथक मेहनत से ही अंग्रेजी शासन काल के रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर संत कबीर रेलवे स्टेशन बड़ी खाटू हो गया है।यहाँ संत कबीर स्मृति चिह्न की भी स्थापना की जा रही है ।आपके कार्य और आपकी सामर्थ्य को देखते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री सी आर चौधरी जी के स्नेह से राजनीतिक सहयोगी के रूप में आपको नई जिम्मेदारियों का दायित्व सोपा गया है ।आप भारत सरकार में केंद्रीय टी बोर्ड ऑफ इंडिया के सदस्य (2019-2022) का कर्तव्य भी पूरी निष्ठा के साथ निभा चुके हैं। आपके विचारों से प्रभावित होकर आपकी देखरेख में राष्ट्रीय लेखक की उपमा से सम्मानित श्री डॉ अभिषेक कुमार जी द्वारा आधुनिक भारत निर्माण में सदगुरु कबीर साहेब का योगदान नामक पुस्तक लिखी गई है। जिसका 22 भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। यह पुस्तक भविष्य में विद्यार्थियों के लिए एक ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी।

आप और तरनाऊ गांव के सरपंच महोदय के प्रयासों से पूरे भारत के उत्कृष्ट समाज सेवको ,पर्यावरण प्रेमियों ,पदम श्री अवार्डियों ,कवि व साहित्यकारों का तरनाऊ गांव में भव्य व ऐतिहासिक स्वागत, सत्कार किया गया ।उन्हें राष्ट्रीय स्तर का डॉक्टर भीमराव अंबेडकर कीर्ति रत्न सम्मान 2023 पुरस्कार प्रदान किया गया।विश्व शांति ,सद्भावना ,सामाजिक समरसता व अहिंसा का भाव जगाने में आपने वैश्विक पटल पर एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। आपकी प्रशंसा विश्व शांति दूत जैन मुनि लोकेश जी महाराज ,भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ,काशी मगर पीठ के महंत श्री विचार दास जी महाराज ,अयोध्या के महंत श्री सुधीर जी महाराज भी कर चुके है। जून 2023 में आपको विश्व समरसता मंच नेपाल के सदस्य के रूप में मनोनीत किया चुका है।विश्व आइकन सम्मान से आपको गोवा में भी सम्मानित किया जा चुका है। 27 फरवरी, 2024 को आपने तृतीय कबीर कोहिनूर अवार्ड सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया। जिसमें देश की 100 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।इसके लिए शुभ कामना सन्देश के रूप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी, राष्ट्रपति महोदया द्रोपदी मुर्मू जी ,राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल जी सहित कई मुख्यमंत्रियों के आशीर्वाद संदेश प्राप्त हुए हैं। आप संपूर्ण विश्व के सामने वसुधैव कुटुंबकम की भावना को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व में एक सच्चे लोकनायक की छवि दिखाई देती है। जो भारत जैसे ऋषि परंपरा के देश के लिए बहुत गौरव का विषय है।ऐसे ही मानवता वादी विचारों की देश को आवश्यकता है।

मानवता वाद के हितार्थ नानक दास जी के विचार

1पर्यावरण प्रेमी के रूप में - संत नानक दास जी पर्यावरण प्रेमी व सच्चे वृक्ष मित्र हैं। उन्होंने राजस्थान राज्य के राज्य वृक्ष खेजड़ी के संरक्षण के लिए नागौर में बहुत काम किया है । वे स्वयं हर वर्ष सैकड़ो वृक्ष लगाकर उनकी देखभाल करते हैं।उन्हीं की प्रेरणा से पद्मश्री हिम्मताराम जी ने अपनी संपूर्ण जमीन पर वृक्षारोपण करके सघन वन में तब्दील कर दिया ।जिन्हें राष्ट्रपति महोदय द्वारा पदम श्री के सम्मान से सम्मानित किया गया ।बड़ी खाटू में जहाँ पानी की बहुत बड़ी किल्लत है वहाँ भी आपने टैंककरो से पानी पहुँचा कर हरियाली लाने का काम किया है।इस पुनीत कार्य को देखकर मुझे आपके अंदर एक श्रेष्ठ पर्यावरण प्रेमी की छवि दिखाई पड़ती है।आपके मन के सन्देश को यह पंक्ति चरितार्थ करती है-

बदले हम तस्वीर जहाँ की,

सुंदर -सा एक दृश्य बनाएं।

सन्देश ये सब हम फैलाएं,

आओ ! पर्यावरण बचाएं।

2 समाजसेवी के रूप में- संत नानक दास जी की पहचान सबसे पहले एक उच्च कोटि के समाजसेवी के रूप में है।आप सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। आप समाज में इस कदर घुल मिल गए हैं कि लोगों को आप परिवार का अभिन्न अंग महसूस होते हैं। समाज को जब - जब आपकी आवश्यकता पड़ती है आप सहर्ष बैसाखी बनकर खड़े हो जाते हैं। आपकी छवि समाज में साफ सुथरी व उत्कृष्ट है। आप स्वयं समाज सेवा करने वाले नौजवानों का सम्मान करके उन्हें प्रेरणा प्रदान करते हैं ।उनकी कार्य कुशलता को बढ़ावा देते हैं ।आपके प्रयासों से पशु कंपाउंडर महेंद्र सेन को कनाडा की संस्था की ओर से चयनित कर अच्छे पैकेज पर नौकरी दी गई है। इस तरह आप युवाओं के भी बहुत चहेते हैं।

समाज सेवा से बढ़कर कोई कर्म नहीं है।

और मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

3 परोपकारी संत के रूप में- नानक दास जी बचपन में ही 1008 श्री देवीदास जी महाराज के द्वारा गोद ले लिए गए। उन्हीं के द्वारा उन्हें महज 10 वर्ष की उम्र में संन्यास की दीक्षा प्रदान की गई। आप कबीर चौरा मठ परंपरा में दीक्षित एक निर्गुणी संत हैं । आपके द्वारा साधु के नित्य कर्म- ध्यान,सुमिरण,योग ,सत्संग ,भागवत भजन रोज बड़ी सादगी से किए

जाते हैं। इस तरह आपकी छवि एक परोपकारी ,उदारवादी संत के रूप में समाज में व्याप्त है। आप सदैव समाज की भलाई के लिए जीवन जीते हो। कहते हैं-

आम आदमी अपने और अपने परिवार के लिए जीता है।

सन्त समाज की भलाई और अच्छाई के लिए जीता है।।

4 प्रखर वक्ता व उपदेशक के रूप में- आपकी छवि एक प्रखर वक्ता के रूप में भी मौजूद है। आप सहज सरल शब्दों में बड़ी रहस्यमई बातें कह जाते हैं। वैसे आपकी वाणी ओजस्वी विचारों से ओतप्रोत रहती है। आपके सत्संग व प्रवचन कार्यक्रम में विचारों को सुनने के लिए लोगों का तांता लग जाता है। लोग आपकी बातों को सुनकर आचरण में ढालने का कार्य करते हैं। आप बड़े राजनीतिक मंचों पर बेबाक तरीके से अपनी राय रखते हैं ।आप अपने विचारों से लोगों को चुंबक की तरह अपने व्यक्तित्व से बांध लेते हैं ।यही कारण है की समरसता मंच के संस्थापक नेपाल के प्रथम राष्ट्रपति महोदय आपसे प्रभावित होकर मिलने आते हैं। देश के बड़े राजनेता आपके साथ विचार विमर्श करते हैं और जटिल मुद्दों पर सुझाव मांगते हैं।

5 श्रेष्ठ शिक्षा विद के रूप में- नानक दास जी महाराज का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ।फिर भी उन्होंने अपनी अथक मेहनत और लगन से पूर्ण शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने जैन विश्व भारती कॉलेज से स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई की।उन्हें उत्कृष्ट कार्यों व मानव सेवा के लिए दो बार पी एच डी की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। आज भी अपने आश्रम में कई बच्चों को नि:शुल्क वैदिक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। देश के जाने-माने कवि ,साहित्यकार ,लेखक उनसे प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त करके आगे बढ़ रहे हैं। उनकी देखरेख में 100 के लगभग शोधार्थी मानवता वाद पर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। आप भारत को शिक्षित भारत के रूप में देखना चाहते हैं। आपका विजन इस पंक्ति में परिलक्षित होता है-

अशिक्षित को शिक्षा दो अज्ञानी को ज्ञान।

शिक्षा से ही बनेगा मेरा भारत महान।।

'शिक्षक वह चिराग है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है।'

इस सूक्ति का भावार्थ मुझे जब समझ आया तब मैं खुद शिक्षक बना। अब मुझे पता है कि

कैसे एक शिक्षक विद्यार्थी के जीवन को अपनी ज्ञान रोशनी से प्रकाशित कर जगमग कर सकता है? सच्चे अर्थों में एक आदर्श शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है। किसी भी राष्ट्र की समृद्धि और विकास वहाँ के वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों, नेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों व अन्य कर्मचारियों के हाथों में होता है।परंतु इन सबको बनाने वाला एक शिक्षक ही होता है। शिक्षक एक किताब है ।शिक्षक और कलम ऐसे अहिंसक अस्त्र हैं जो दुनिया को बदलने की ताकत रखते हैं।इसलिए शिक्षक का दर्जा सबसे ऊँचा है।कबीर दास जी ने तो गुरु की महिमा भगवान से भी श्रेष्ठ बताई है-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े ,काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो मिलाय।

शैक्षिक जगत में जो योगदान पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन और राजस्थान के शिक्षा संत स्वामी केशवानंद जी महाराज का रहा है ठीक ऐसा ही योगदान राजस्थान के एक शिक्षाविद संत का रहा है।जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व से आपको रूबरू कराने का प्रयास कर रहा हूँ। यह जानकारी मैं आपको प्रत्यक्ष अनुभव और गहन अनुसंधान से उपलब्ध करा रहा हूँ। आशा करता हूँ आपके हृदय में उनके व्यक्तित्व को जानकर एक नई ऊर्जा और स्फूर्ति का संचार होगा। वैसे तो उनके बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है किन्तु फिर भी मैं उनके बारे में कहना चाहूँगा-

आसमान की बुलंदियों पर हमेशा नाम हो आपका।

चाँद - तारों की धरती पर सुंदर मुकाम हो आपका।

दिन दूना व रात चौगुना यश बढ़ता जाए आपका।

कद ऊँचा हो जहाँ में रोशन होवे नाम आपका।

अन्य बच्चों की तरह उनका बचपन भी निराला था। बचपन से ही उनका जीवन संघर्षों का पर्याय रहा है। धार्मिक व भारतीय सनातन संस्कार व जीवन मूल्य उनमें बचपन से ही रहे हैं। विपरीत परिस्थितियों में दूसरों की मदद करने के लिए वे सदैव तत्पर रहे हैं। वे गरीबी में पैदा होकर समाज व राष्ट्र के लिए संघर्ष करते रहें हैं। उन्होंने जीवन के नाना कष्ट व अभाव सहकर भी पूर्ण शिक्षा प्राप्त की है। वे अनेक बार अपने वक्तव्य में कहते हैं 'जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है बस करने का जुनून चाहिए । ज्ञान से ही व्यक्ति महान और वन्दनीय

बनता है।ऐसा हमारे महापुरुषों ने भी कहा है-

ज्ञान से जो मूरत गढ़ी जाती है।

वह पूरी दुनिया में पूजी जाती है।

उनका चेहरा हमेशा खिला खिला व परेशानियों की झुर्रियों से मुक्त रहता है। उम्र करीब 49-50 के लगभग है । फिर भी नई ताजगी व नई उमंग और युवाओं से भी ज्यादा उत्साह उनके चेहरे पर झलकता है। जब मैं उनसे पहली बार मिला। तब मुझे उन्हें देखकर लगा कि ये सख्त स्वभाव वाले व्यक्ति हैं ।लेकिन ऐसा नहीं है ।उनका स्वभाव नारियल के जैसा है। बाहर से सख्त और अंदर से उतने ही कोमल । वैसे तो सभी माता पिताओं को अपने बच्चों के भविष्य की चिंता रहती है , लेकिन महाराज श्री को अपने देश के बच्चों की चिंता कुछ ज्यादा ही है। वे हमेशा हमें सही राह दिखाते हैं । युवाओं का हौसला बुलंद करते हैं इसलिए बच्चे उन्हें अपना आदर्श मान करके जीवन का निर्माण करते हैं। उनकी अच्छी आदतें ,सकारात्मक सोच और जिजीविषा विद्यार्थियों को बहुत आकर्षित करती है । उनका नजरिया दुनिया से हटके है ।वे दुनिया की इस भीड़ को चीर कर आगे निकलने का हौसला रखते हैं ।उसी के आधार पर उनकी सफलता भी तय हो जाती है। समय का प्रबंधन करना सीखना है ।तो मेरी आपसे यही सलाह है कि आप महाराज जी से सीखें। वे एक ऐसे सन्त हैं। जिनकी दुनिया में एक अलग पहचान है। जीवन में कुछ करने से पहले यह नहीं सोचना चाहिए की सफलता मिलेगी या नहीं। यह हमने उनसे सीखा है ।वह हमेशा केशवानंद जी का कथन दोहराते हैं कि -

"तुम अपने पर विश्वास कभी कम मत होने दो।

तुम दुनिया में कुछ भी कर सकते हो" ।।

वाकई में ऐसा सकारात्मक विचार किसी की भी जिंदगी बदल सकता है। मैं सोचता हूँ यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसी अद्भुत प्रतिभा हमारे देश को विरासत में मिली है ।जिन्होंने समाज से थोड़ा लेकर उसे इतना अधिक प्रदान किया है।जिसकी तुलना नहीं की जा सकती । इस उम्र में भी वह नई-नई तकनीक के चलते स्वयं को अपडेट रखते हैं । किसी ने सही कहा है सीखने की कोई उम्र नहीं होती । व्यक्ति शरीर से जरूर बूढ़ा हो जाता है, लेकिन विचारों का नयापन किसी को भी प्रवाहित करने के लिए काफी है ।यह मैंने उन्हीं से सीखा है । वे कृषक ,खेतीहर परिवार से तालुक रखते हैं। उन्होंने खेतीहर परिवार के सभी दुःख- दर्द, हंसी–खुशी, हताशा -निराशा को बहुत नजदीक से देखा है। वह मानवीय जीवन मूल्यों की अहमियत को भली भांति समझते हैं । उन्होंने अपने जीवन में समय की

अहमियत को समझा और आज समय ने जो उनको अहमियत दी है, वह सब देख रहे हैं। आज उनकी संस्था जो आसमान की बुलंदियों को छू रही है । वह उनकी बेजोड़ ,बेमिसाल,अथक मेहनत का प्रतीक है। भारत के भविष्य निर्माण ,यानी युवाओं के भविष्य को संवारने में जो उनका योगदान है । वह शायद ही किसी ओर का रहा होगा। उनका विद्यार्थियों से जो लगाव -जुड़ाव है वह बच्चों के उत्साहवर्धन में यथासंभव बढ़ोतरी करता है । उनके जीवन मूल्य , उनकी आदतें व विचारों को यदि कोई अपने जीवन में अपना ले तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि उसका भविष्य उज्ज्वल होगा । इतनी छोटी सी जिंदगी में इतना अनुभव जुटाना उनकी जिंदगी की सबसे बड़ी पूंजी है । उनके व्यक्तित्व का एक ओर मूलमंत्र है जो मुझे बहुत प्रभावित करता है । वह है-

"मंजिल को पाने की चाह और स्वयं व ईश्वर पर अटूट विश्वास।"

उनका एक और कथन युवाओं में जोश भरता है वह है-

"जंग लगकर मरने से कुछ करके मरना ज्यादा अच्छा है।"

जीवन में कर्म की प्रेरणा हमें उनके जीवन से मिलती है। कर्म ही व्यक्ति को पूजनीय बनाता है। वे हमेशा कहते हैं रेलगाड़ी का इंजन बनों कभी भी डिब्बा बनने की कोशिश मत करो। इस संसार में ऐसी कोई उपलब्धि नहीं है। जिससे मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता । आवश्यकता बस लगन से करने की है। हम दीन, हीन ,बेसहारा लोगों की सहायता करके उनकी दुआओं को प्राप्त कर सकते हैं। किसी व्यक्ति का बिना कोई परिचय जानकर उसकी सेवा , मदद करना ही सच्ची सेवा है । कहते हैं - "नर सेवा ही नारायण सेवा है।" वे धार्मिक शास्त्रों के पढ़ने पर बल देते हैं। वे कहते हैं धर्म शास्त्र पढ़ने से नियम का निर्माण होता है। नियमों के पालन से संयम और धैर्य का विकास होता है। इसी संयम से अनुशासन का निर्माण होता है। अनुशासन से जीवन में मर्यादा आती है। मर्यादापालन से अच्छे संस्कारों की प्राप्ति होती है। यही संस्कार जीवन में उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

6 सुलझे हुए राजनीतिज्ञ- बेशक महाराज श्री सन्यासी हैं। लेकिन वे अपनी राजनीतिक पहुँच देश-विदेश तक रखते हैं। वे 2019 से 2022 तक भारत सरकार में केंद्रीय टी बोर्ड सदस्य भी रह चुके हैं । उन्हें भारत रक्षा मंच जोधपुर मंडल का अध्यक्ष चुना गया है । वे अन्तराष्ट्रीय समरसता मंच नेपाल के सदस्य भी मनोनीत किए गए हैं । उनकी विचारधारा का सम्मान पूर्व केंद्रीय मंत्री सी आर चौधरी जी , अशोक गहलोत जी वसुंधरा राजे ,सीपी जोशी जैसे बड़े नेता भी करते हैं । महाराज श्री धीरे-धीरे समाज सेवा के साथ-साथ राजनीतिक भागीदारी बढ़ा रहे हैं। उनकी राजनीतिक विचार धारा राष्ट्रवादी है। उन्हें

राजनीतिक षड्यंत्र के तहत जेल की सजा भी भुगतनी पड़ी है। लेकिन विजय सत्य की ही होती है। जो होकर रहेगी।

7 समाज सुधारक के रूप में- नानक दास जी महाराज को समाज में समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है । उन्होंने जाति-पांति व छुआछूत का भेदभाव मिटाकर सबको अंबेडकर साहब की विचारधारा पर चलने की प्रेरणा दी है। गरीब व मध्यम वर्गीय परिवारों की पूरी कमाई नशे व व्यसनों में चली जाती है । जिसे दूर करने के लिए महाराज श्री ने नशा मुक्ति अभियान गाँव -गाँव में चलाकर इस व्यसन से लोगों को छुटकारा दिलाया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे बाल विवाह, मृत्यु भोज व बाल श्रम पर भी लगाम लगाने के लिए अनेक प्रयास किये हैं। मैं उन्हें धन्यवाद स्वरूप कहना चाहता हूँ-

दरबार में बाबा नानक के दुःख दर्द मिटाये जाते हैं।

दुनिया के सताए लोग यहाँ सीने से लगाए जाते हैं।

8 सनातन धर्म संरक्षक के रूप में- महाराज श्री सनातन धर्म का डंका देश और विदेशों में बजा चुके हैं। उन्होंने स्वयं गीता जी का अध्ययन किया है। उसकी प्रतियाँ बनवाकर लोगों को मुफ्त में भेंट की हैं । जब भी कोई उनके आश्रम में आगंतुक आता है तो उसे गीता जी की प्रति भेंट कर सम्मानित करते हैं। वे लोगों को अपनी सनातन संस्कृति अपनाने की प्रेरणा देते हैं। सनातन रीति रिवाज ,खान-पान ,वेशभूषा के प्रबल समर्थक हैं । अब तक कई बड़े धार्मिक आयोजन आयोजित कर चुके हैं ।जिनमें कई विदेशी हस्तियों को भी आमंत्रित कर चुके हैं । वे सनातन धर्म संस्कृति के वाहक के रूप में काम कर रहे हैं। वे इंग्लैंड ,कनाडा, अमेरिका में डॉ परीन सोमानी जी (लन्दन) डॉ सौरभ पांडे जी के साथ मिलकर भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

हम सबका है एक ही सपना।

विश्व गुरु बनेगा भारत अपना।

9 सच्चे अवधूत के रूप में- संत नानक दास जी महाराज एक सच्चे अवधूत हैं। उन्हें किसी प्रकार की मोह माया से कोई लगाव नहीं है। वे काम ,क्रोध ,मद,लोभ,व धन से परे हैं। जिस प्रकार का फक्कड़पन कबीर ,निराला ,पंत व रविंद्र नाथ टैगोर में था। ठीक वैसा ही

फक्कड़पन व अनाशक्ति उनमें दिखाई देती है । सदा अवधूतों के मुंह से ही श्रेष्ठ रचनाएं सृजित होती हैं । श्रेष्ठ व नूतन सर्जन कोई अवधूत ही कर सकता है । वे सुख-दुख दोनों में एक समान रहकर कार्य करते हैं । भयंकर दुख में भी उनके चेहरे पर प्रसन्नता देखी जा सकती है। एक अवधूत के सभी लक्षण सन्त नानक दास जी महाराज़ में समाहित है। वे हमेशा आध्यात्मिक विचारों में तल्लीन रहते हैं ।आध्यात्मिक जीवन जीना उनका मूल संस्कार है। मैंने उनके पिताजी के निधन पर उन्हें भगवत भजनों में लीन देखा है। उनके चेहरे पर वही पहले जैसी प्रसन्नता देखी है। ऐसी अनाशक्ति और मानवीय करुणा की दिव्य चमक उनके चेहरे पर सदा एक साथ झलकती रहती है। जो सच्चे अवधूत की पहचान है। मेरे काव्य गुरु आदरणीय बलवीर सिंह जी करूण लिखते हैं-

हम ओघड़ अवधूत निराले...

हमें झूंठी माया से क्या लेना ?

कबीर ने भी कहा है-

कबीरा खड़ा बाजार में सब की माँगे खैर।

ना काहू से दोस्ती , ना काहू से बैर।।

10 श्रेष्ठ दुनिया के निर्माण में भूमिका-वसुधैव कुटुंबकम की भावना को अपने हृदय में रखकर आप मानव एकता के लिए काम कर रहे हैं। आपके द्वारा मानव सेवा के लिए काम करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों को एक मंच पर लाकर उनका सम्मान करना ,उन्हें मार्गदर्शित करना ,इसका साक्ष्य है । कबीर कोहिनूर कार्यक्रम आयोजित करके आपने दुनिया के लोगों को भाईचारे का संदेश दिया है । आप आध्यात्मिक विचारों से ओतप्रोत सामाजिक सदभाव वाले आदर्श समाज की रचना करना चाहते हैं। आपकी विचारधारा मानव सेवा ,अहिंसा ,वैश्विक कल्याण की है। जो आज के समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

अत: मैंने नानक दास जी महाराज की जो खूबियां आपको बताई हैं वे केवल प्रशंसा नहीं है वह उनका मानवता वादी जीवन दर्शन है। जिससे मैं और मेरे जैसे जाने कितने लोग उससे प्रभावित हुए हैं। इन्हीं विचारों के आधार पर मैं उन्हें पसंद करता हूं। इसीलिए मैंने अपने शोध कार्य का विषय उन्हें चुना है। मैं समझता हूँ अब आप भी धीरे धीरे उनके विचारों की सुगंध से भीगने लगें होंगे। मैं उनके समर्थन में कहना चाहूँगा-

सन्तों के आशीर्वाद से हमनें किस्मत बदलती देखी है।

प्रखर सूर्य के तेज से जमी ,वो बर्फ पिघलती देखी है।

कौन कहता है समाज की तस्वीर बदल नहीं सकती ?

हमने एक सन्त की दहाड़ से दुनिया बदलती देखी है।

नानक दास जी महाराज के मानवता हितार्थ कार्य

भारत के लिए तो कहा जाता है कि अनेकता में एकता ही हमारी पहचान रही है। अब चाहे वह कार्य हो या धर्म। सभी अलग–अलग होते हुए भी उनमें एकता पाई जाती है।

कु

नहीं लगते ।इसलिए हमें सदैव अपनी वाणी को मधुर बनाना चाहिए और निस्वार्थछ ऐसी ही हमारी भारतीय संस्कृति है ।ऊपर से देखें तो एक और भीतर से सभी की संस्कृति भिन्न-भिन्न है ।जैसे उत्तर में कश्मीरी, पश्चिम में राजस्थानी, पंजाबी, हरियाणवी, सभी की भाषाएं, वेशभूषा ,धर्म अलग अलग हैं। पर जब राष्ट्र के लिए या समाज उत्थान के लिए कोई भी कार्य करना हो तो सभी एक हैं ।भारतीय संस्कृति की परंपराएँ, मान्यताएं ,नैतिकता, प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इनका हमारे दैनिक जीवन में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।इसका श्रेय हमारे गुरुजनों ,साधु ,संतों मुनियों को दिया जाता है। जो मानव में समाज उत्थान की समझ विकसित करते हैं और स्वयं को अन्य से भिन्न बनाते हैं ।सन्त ही होते हैं जो एक व्यक्ति से लेकर संपूर्ण समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करते हैं। जैसे संत तुकाराम, राजगिरी ,गुरु वशिष्ठ, तुलसीदास ,राजा राममोहन राय ,स्वामी दयानंद सरस्वती, तिरुमलाई कृष्णमाचार्य ,रविंद्र नाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद इत्यादि जिन्होंने भारत को अलग-अलग क्षेत्रों में जागरूकता के कार्य किये हैं । एक उन्नत समाज निर्माण में अपना योगदान दिया है।

1 भक्ति सुधारक संत नानक दास जी का समाज निर्माण में योगदान - स्वर्गीय 1008 श्री देवी दास जी महाराज के यशस्वी शिष्य नानक दास जी ने भक्ति में आपसी सामंजस्य को बल दिया है।वे निर्गुण होते हुए भी सगुण के विरोधी नहीं दिखाई देते हैं।उन्होंने कहा, जिस प्रकार नमक के बिना खाना बेस्वाद और फीका

लगता है ठीक उसी प्रकार वाचाल व्यक्ति के कथन निस्सार होते हैं ।और किसी को रुचिकर भाव रखना चाहिए ।सन्त नानक दास जी कहते हैं कि ईश्वर भक्ति से ही फल की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति आघात सहन करते हुए भी अपनी सज्जनता नहीं खोता वही संत है। स्थापित विद्वान ज्ञान के अंधे वाहक होते हैं, जो इंसान सच का पालन करता है ,वही सच्चा इंसान है।प्रेम तो चित्र चित्र का अनुभव है ।प्रेम ना तो दिखाया जा सकता है और ना ही बोला जा सकता है। सत्य और असत्य की खोज करने वालों को अपने मन पर विचार करना चाहिए। धर्म के नाम पर अधर्म जारी है। ऐसे अनेकों विचार नानक दास जी ने दिए हैं।उन्होंने हमेशा समानता और सार्वभौमिक भाईचारे का संदेश दिया।

उन्होंने बिना किसी जाति,भेदभाव के शिष्य और भक्तों को स्वीकार कर शिक्षा दी।और तो और उनका मानना था कि जाति के अभिमान ने कभी भी किसी को पवित्र नहीं किया। वेदों और शास्त्रों में कहा गया है कि ईश्वर की सेवा किसी जरूरतमंद की तत्काल रक्षा करना ही है ना कि उसको देखकर उसी के हाल में पीड़ित छोड़ना संत नानक दास जी ने अपने जीवन काल में सन्त कबीर को आदर्श मानकर सेवा और समाज के सभी लोगों को अपना मान कर सभी को सेवा भाव, मदद और नैतिकता का पाठ पढ़ाया है। बादल वर्षा के समय यह नहीं देखता कि भूमि उपजाऊ है या ऊसर,वह दोनों को ही समान रूप से सीचता है। ठीक इसी प्रकार गंगा का पवित्र जल उत्तम और अधम का विचार किए बिना सभी की प्यास बुझाता है। इन के विचारों से हमें प्रेरणा मिलती है कि मदद करते समय किसी के प्रति किसी चीज का भेदभाव के बिना उसकी मदद करनी चाहिए और सभी के लिए करुणा और मानवता की भावना रखनी चाहिए । प्रेम हमारे हृदय में उत्पन्न पवित्र भाव है। राम चरित मानस में तुलसी दास जी ने कहा है-आप भगवान को जिस नजरिए से देखोगे वे आपको वैसे ही दिखाई देंगे।

जाकी रही भावना जैसी ।

प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।।

2 राष्ट्र निर्माण में योगदान- भारत में जन्मे एक ऐसे मतवादी संत जिन्होंने अपने

छोटे से जीवन काल में अपने कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त की है और अपने कार्यों के प्रति अपना दायित्व निभाते हुए भारतीय नवयुवकों की अभिप्रेरणा बने हुए है। नानक दास जी महान प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने अवगत कराया है कि हम सभी का और खासकर युवाओं का अपने राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य होता है ? उनका निर्वहन किस प्रकार किया जा सकता है ? तथा एक संप्रभु देश को एक युवक कैसे विकसित राष्ट्र बना सकता है ?

इन्होंने अपने विचारों को इतना प्रभावशाली बनाया हुआ है कि अगर निराश व्यक्ति भी उसे पढे तो उसके जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार हो सकता है। एक छोटे से तबके से निकलकर एक बड़े से बड़े समाज का उत्थान किया जा सकता है।

भारतीय उत्थान में इनका योगदान ठीक इसी प्रकार है जैसे महाराणा प्रताप ,गांधीजी ,वीर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और अनेक भारतीय नायकों का रहा है।जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर किए हैं ।परंतु सभी का तरीका अलग -अलग था कार्य करने का लेकिन उद्देश्य एक था भारत माता को स्वतंत्र कराना। इनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से समाज में व्यक्ति उचित तरीके से विकास कर सकता है।ठीक इसी प्रकार नानक दास जी महाराज अपने विचारों व मानवता वादी कार्यों से समाज का हित करने में लगे हुए हैं।

वे अक्सर युवाओं को सन्देश देते रहते हैं -उम्मीद ना छोड़ें, आत्मशक्ति को पहचाने और खुद को कमजोर ना माने , ताकतवर बने ,आत्मविश्वास बनाए रखें , अपने पैरों पर खड़े हो ,स्वार्थी नहीं सेवक बने ,संयम से कार्य करे।खुद जागे और अन्य लोगो को भी जगाएं।देश भक्त का देश प्रेम बुलबुलों की तरह होता है।

देश भक्त मरते हैं अपने वतन के वास्ते।

जैसे बुलबुले मरती हैं चमन के वास्ते।।

3 नानक दास जी सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका निभाते हैं - महाराज श्री का जीवन अध्यात्म और मानवतावादी दृष्टिकोण के रूप में हैं ।उन्होंने भारत में नैतिक व सामाजिक सुधार हेतु अपना समस्त जीवन समर्पित किया है।समाज

सेवा को सबसे बड़ी सेवा मानते हैं। समाज की विभिन्न समस्याओं के प्रति वे बहुत ही सजग रहते हैं ।पीड़ित की समस्याओं के लिए भी संघर्ष करते हैं ।और प्रशासन तक उनकी आवाज पहुंचाने में मदद करते हैं ।जब तक उन्हें न्याय नहीं मिल जाता तब तक उनका साथ नहीं छोड़ते हैं।मैंने स्वयं उन्हें किसानों की मांगों के लिए बिजली घर में धरने पर बैठते हुए देखा है।वे समाज के हर व्यक्ति के साथ मिलकर सच्चे जनसेवक बनकर काम करते हैं।

4 वर्ण व्यवस्था का विरोध - वे भारत की प्राचीन वर्ण व्यवस्था के विरोधी हैं। उनके अनुसार आधुनिक युग में वर्ण व्यवस्था सामाजिक अत्याचारों को प्रोत्साहन देने वाली है। वर्ण एवं जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को खोखला कर दिया है। उनके अनुसार सभी मनुष्य समान है। ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य और शूद्र का भेदभाव उचित नहीं। सभी का हर क्षेत्र में समान अधिकार होना चाहिए। यह जाति प्रथा केवल जाति का ही बटवारा नहीं करती अपितु मनुष्य व उसके व्यवसाय का भी अस्वाभाविक विभाजन करती है।जो समाज में गरीबी और बेरोजगारी का कारण बनती है।

मेरे भारत को न बाँटो,

जाति, मजहब की तलवारों से।

भोली मानवता को न पाटो,

दंगे , हिंसा की दीवारों से।

5 अस्पृश्यता की निंदा - उनका मानना है कि जाति के आधार पर भेदभाव सब व्यर्थ की बातें हैं। ईश्वर द्वारा निर्मित सब मनुष्य समान है । और तो और सन्न्यासी होते हुए भी वे जीवन में आस्था विश्वास से सामाजिक नियमों का उत्तरदायित्व भलीभांति से संभालते हैं।वे अस्पृश्यता की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।वे कहते हैं भगवान ने सब को एक समान बनाया है।फिर बाहर आकर हम अलग अलग कैसे हो गए ? ये अस्पृश्यता की समस्या मानवता का हनन करती है।इससे समाज में हीनता की भावना का जन्म होता है।जो राष्ट्र की अखण्डता के लिए बड़ा खतरा है।

6 सामाजिक उत्थान हेतु धार्मिकता की आवश्यकता -

महाराज जी सामाजिक उत्थान हेतु धार्मिकता को आवश्यक मानते हैं ।उनका कथन है कि भारत में समाज सुधार के प्रचार के लिए नवीन सामाजिक प्रथा के द्वारा जीवन को प्राप्त करना होगा ।भारत का प्रथम कर्तव्य धर्म का प्रचार हैं। धार्मिकता को ग्रहण करके भारत सुदृढ़ हो सकता है। यूरोप की संस्कृति उनके लिए श्रेष्ठ हो सकती है, उपयोगी हो सकती है। लेकिन वह हमारे लिए प्रासंगिक नहीं है। हमारे देश की अपनी संस्कृति व सभ्यता है।जो हमें अपने ऋषी मुनियों से विरासत में मिली है। हमें अपने मूल सिद्धांतों पर कायम रहना चाहिए। यदि यूरोपीय संस्कृति में कुछ अच्छी बातें हैं तो उन्हें हमें ग्रहण भी कर लेना चाहिए।

7 समाज में क्रमिक सुधार की आवश्यकता - महाराज जी समाज में क्रमिक सुधारों के पक्षपाती हैं।समाज में धीरे-धीरे करके ही परिवर्तन एवं सुधार लाया जा सकता है। तथा भारत में एकदम से समाज में परिवर्तन करना असंभव है। आध्यात्मिकता और धार्मिकता की भावना को ग्रहण करके जब प्रयत्न करेंगे तभी हम उन्नति कर सकते हैं।इसके लिए हमें कुछ सनातन धर्म के नैतिक मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता है। जो सिद्धान्त आधुनिक समाज के लिए प्रासंगिक हैं उन्हें अपनाएं।इसके लिए छोटे स्तर से सामाजिक बदलाव की आवश्यकता है।

8भारतीय संस्कृति में विश्वास - उनकी भारतीय संस्कृति में प्रबल आस्था है। उनका ऐसा मानना है कि भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है और भारतीयों को अपनी संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए ।प्राचीन काल में भारतीयों ने अपनी संस्कृति का समस्त संसार में प्रचार प्रसार किया है । भारत ने विश्व का आध्यात्मिक विकास किया है।यदि भारतीय अपनी इस आध्यात्मिकता को ग्रहण कर ले तो हम आज भी संसार के पथप्रदर्शक बन सकते हैं। परंतु वर्तमान समय को देखकर लगता है कि युवक किस प्रकार बड़ी तीव्र गति से पश्चिमी ,अंग्रेजी संस्कृति को अपनाता जा रहा है और भारतीय संस्कृति में उनका विश्वास किस प्रकार कम होता जा रहा है ? आधुनिक और तकनीकी युग में इतना खो गया है कि उसे भारतीय संस्कृति का क्या महत्व है ,पता ही नहीं? वह क्या थी ? क्या है? और हमारे लिए क्या रहेगी ?अत: इसे दोबारा जागरूक अवगत कराने की आवश्यकता है । हमें सभी

संस्कृतियों की अच्छी बातें अपनानी चाहिए लेकिन अपनी को भूलना भी नहीं चाहिए।यदि टाई बैल्ट बाँधना आना चाहिए तो धोती- कुर्ता भी पहनना आना चाहिए।

वे विवेकानंद जी की तरह कहते हैं -उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक अपना लक्ष्य प्राप्त ना कर सको। यह स्वामी विवेकानंद जी की एक ऐसी प्रेरणादायक पंक्ति है । जो युवाओं में नए उत्साह का संचार करती है।जिससे प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा लेकर भारतीय संस्कृति में अपने समाज का उचित तरीके से विकास कर उसको प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी रखने का प्रयास करना चाहिए ।नानक दास जी महाराज ने सामाजिक उत्थान में ही अपना योगदान नहीं दिया बल्कि उनके ऐसे प्रतिभाशाली कार्य हैं जो वैश्विक संस्कृति के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हैं। वे संत कबीर दास जी के महापरिनिर्वाण दिवस को एक बड़े उत्सव के रूप में मनाते हैं जिसमें देश के उत्कृष्ट कार्य करने वाले कोहिनूरों को कबीर कोहिनूर अवार्ड से सम्मानित करते हैं।जो आधुनिक युग दृष्टा युवा संन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृति की सुगंध को विदेशों में भी बिखेरने का कार्य कर रहा है।जैन मुनि विश्व शान्ति दूत लोकेश मुनि जी महाराज के विचारों का प्रभाव भी नानक दास जी के जीवन पर दिखाई देता है।आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के स्वर्णिम भारत का विजन भी उनकी आँखों मे साफ झलकता है।वे अपने मानवता वादी कार्यो से भारत को विश्वगुरु बनाने के मार्ग पर कदम बढ़ाते जा रहे हैं।

9शुद्रो का उद्धार - भारतीय समाज में धीरे-धीरे शुद्रो की स्थिति दयनीय होती चली गई । कुछ लोग उन्हें तिरस्कार की नजरों से देखने लगे थे ।उन्होंने हमेशा समाज में नीचे काम देना, शिक्षा न देने का अवसर, मंदिर में जाने की अनुमति न देना इत्यादि बहुत जगह सामान्य सा हो गया ।महाराज जी ने इसका विरोध किया व लोगों से अनुरोध किया कि वे सभी के साथ समान व्यवहार करें ताकि हिंदुओं में आपसी एकता बनी रहे।लोगो में सद्भावना व विश्वास कायम रह सके।इसके लिए समानता बहुत जरूरी है। निम्न आर्थिक स्थिति वाले लोगों को शिक्षा से जोड़कर उनका पिछड़ापन दूर करने में इन्होंने बहुत परिश्रम किया है।यह मैंने प्रत्यक्ष देखा है।

10महिलाओं को शिक्षा - वैदिक काल में स्त्रियों का स्थान बहुत सम्मानजनक था।

उन्हें भी शिक्षा का पूर्ण अधिकार था ।हिंदू धर्म में कोई भी यज्ञ स्त्री के बिना पूरा नहीं माना जाता था । राम जी को भी यज्ञ पूर्ण करने के लिए सोने की सीता बनानी पड़ी। ऐसा प्रमाण मिलता है ।देवताओं के साथ देवियों का भी उल्लेख मिलता है ।जिन्होंने समय-समय पर अपने ज्ञान और शक्ति का परिचय दिया किंतु समय के साथ-साथ महिलाओं को केवल घर की चौखट तक सीमित कर दिया गया था ।उन्होंने बाहर जाने या शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी ।शुरू से ही गृहस्थी के कामों में लगा दिया जाता था। नानक दास जी ने इस व्यवस्था का भी विरोध किया और महिलाओं को समान अवसर एवं शिक्षा प्रदान की बात कहीं।वे भी महिलाओं को उच्च शिक्षा देने के समर्थक हैं। जब तक हर घर की स्त्री शिक्षित नहीं होगी तब तक समाज का विकास अधूरा है।हो सकता है पहले नारी शिक्षा इतनी जरूरी न हो ।लेकिन आज इसके बिना काम नहीं चल सकता।अत: नारी शिक्षा बहुत आवश्यक है। इसकी जिम्मेदारी हम सबकी बनती है।

ना माँगू मैं धन और दौलत,

और ना सोने का हार।

दे सको तो दे दो हे प्रभु,

केवल शिक्षा का अधिकार।

हम सबकी है जिम्मेदारी ।

पढ़ी लिखी हो घर की नारी।

11बाल विवाह, सती प्रथा,पर्दा प्रथा, मृत्युभोज जैसी कुरीतियों का विरोध - भारत में कुछ जगह बाल विवाह करवाने की परंपरा आज भी बनी हुई है। जिस कारण बच्चे अपने जीवन के ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन नहीं कर पाते हैं।वेदों में मनुष्य के जीवन को चार आश्रमों में बांटा गया है । जिसमें ब्रह्मचर्य आश्रम जन्म से लेकर 25 वर्ष की आयु का होता है। इसमें मनुष्य को शिक्षा सैन्य, बल व अन्य काम सीखने होते हैं।जो उसे अपने गृहस्थ जीवन में करने होते हैं। किंतु जल्दी विवाह कर लेने से गृहस्थ जीवन ब्रह्मचर्य जीवन में बांधा बनता है। दूसरी और अल्प

अवस्था में जिम्मेदारियों का बोझ डाल दिया जाता है। जिससे बालक अपना संपूर्ण विकास नहीं कर पाता है। इसलिए उन्होंने इन कुरीतियों का भी विरोध किया ।बाल विवाह को रोकने के साथ-साथ समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को समाप्त करने का निश्चय किया ।सती प्रथा, पर्दा प्रथा जो विदेशी आक्रान्ताओं से अपनी बहन बेंटियों के सम्मान की रक्षा करने के लिए शुरू की गई थी। जिसका अब्र कोई औचित्य नहीं रह गया है। इसलिए नानक दास जी ने इन सभी प्रथाओं का विरोध कर समाप्त करने की समाज में एक आशा की नई किरण जगा दी है। जिससे देश की महिलाओं को बहुत सम्बल मिला है। तीन तलाक जैसी धाराओं के हटने से भारतीय महिलाओं को बहुत प्रसन्नता है। वह अपने आप को बहुत ही स्वतंत्र व भाग्यशाली महसूस कर रही हैं। यह सौगात उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद मोदी जी ने सौपीं है।वे भी विकास की मुख्य धारा से जुड़कर देश के उन्नयन में हाथ बटा रही है। अब महिलाएं अपने आप को अधिक सुरक्षित महसूस करने लगी हैं।

12 नशा मुक्ति के लिए कार्य- नशा नाश की जड़ है।कितने ही लोग नशे के कारण अपना जीवन बर्बाद कर चुके हैं।नशे की लत ने देश के युवाओं को अधिक जकड़ रखा है। महाराज जी इसके लिए अनेक मुहिमें चला चुके हैं।जन जागृति रैलियों के माध्यम से लोगों को जागरूक करते हैं।समय समय पर चिकित्सकीय परामर्श उपलब्ध कराते हैं।ऐसा वे इसलिए करते हैं ताकि देश का भविष्य सुदृढ़ रह सके। मैंने उनसे व्यक्तिगत बातें करके जाना कि वे कई लोगों की बुरी आदतें छुड़ा चुके हैं।वे स्वयं सभी प्रकार के व्यसनों से मुक्त रहकर सबको इनसे दूर रहने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

नशा नाश की जड बने,

नशा करे बदनाम ।

जीवन की आयु घटे,

जिंदगी करे हराम।

नानक दास जी महाराज के सामाजिक उपदेश

सन्त नानक दास जी महाराज कबीर दास जी के अनुयायी के तौर पर उनके विचारों व उपदेशों पर चलकर उन्हीं की विचारधारा को समाज के हर व्यक्ति तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। इसलिए उनके सन्देश ठीक वैसे ही हैं जैसे कबीर साहब के थे।जैसे -

1 स्वयं अपने को परखों दूसरों को नहीं- नानक दास जी महाराज अक्सर अपने प्रवचनों में कहा करते हैं कि हमें सदैव स्वयं को परखना चाहिए दूसरों की निंदा नहीं करनी चाहिए। जिस दिन हम स्वयं के कार्यों की ओर देखने लग जाएंगे उसी दिन से पर निंदा का कार्य बंद कर देंगे। दूसरों की निंदा करना आचरण का सबसे बड़ा दोष है।विद्वानों ने निंदक व्यक्ति को चलती फिरती जहर की गठरी तक कह दिया है।जो समाज को अपने कुविचारों से प्रदूषित करता है।इसलिए इससे बचना चाहिए। कबीर दास जी ने भी कहा है-

बुरा देखन मैं चला ,बुरा न मिलया कोय।

जो दिल खोजा आपना ,मुझसे बुरा न कोय।।

2 प्रेम करना ही सच्चा ज्ञान है- नानक दास जी कहते हैं की प्रेम इस प्रकृति का सबसे पवित्र शब्द है ।संसार में कितने लोग हैं जिन्होंने बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ी है ।लेकिन उन्हें तत्व का ज्ञान नहीं हो सका ।जब तक प्रेम का वास्तविक अर्थ नहीं जानेंगे तब तक स्वर्ग का रास्ता ही नहीं खुलेगा। प्रेम का अर्थ बहुत व्यापक है।इसे गहराई से समझने की आवश्यकता है।मनुष्य जिसे प्रेम कहता है वह तो मन का भ्रम और मोह है।प्रेम कहीं इससे आगे की वस्तु है।अवतार वाणी में कहा भी गया है-

बिन जाने यह मन नहीं माने,बिन मन माने प्यार नहीं,

प्यार बिना न भक्ति होवे, बिन भक्ति नैया पार नहीं।

प्रेम ज्ञान,विश्वास और समर्पण की उपज है। कबीर दास जी के विचार भी कुछ ऐसे ही थे।

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ,पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

3 बात का सही अर्थ ग्रहण करें- नानक दास जी कहते हैं कि हमेशा बात को पूरी सुने और उसके बाद उसे अच्छी तरह समझ कर व्यवहार में लाएं। जल्दी बाजी में कोई भी किसी प्रकार का निर्णय न ले। क्योंकि जल्दी का काम शैतान का होता है। अर्थ का अनर्थ जल्दी बाजी के काम में ही होता है। कबीर ने भी कहा है सज्जन को सूप की तरह व्यवहार करना चाहिए जो केवल सार को ही ग्रहण करता है ,निस्सार को नहीं।जो बातें उपयोगी और ग्राह्य हैं उन्हें ग्रहण करना चाहिए।बुराई की बातों को टालना चाहिए। कबीर दास जी ने भी उनकी इस बात का समर्थन इस तरह किया है।

साधु ऐसा चाहिए,जैसा सूप सुभाय।

सार सार को गहि रहे,थोथा देय उड़ाय।।

4 कोई भी मनुष्य छोटा या बड़ा नहीं होता- वे मानते हैं कि संसार का संचालन करता स्वयं ईश्वर है । हम सब उसकी संतान मात्र हैं। हम किसी भी इंसान को छोटा या बडा न समझे । क्योंकि सभी को ईश्वर ने बनाया है। सभी का अपना-अपना अस्तित्व है ।हमें छोटी घास के तिनकों को भी व्यर्थ नहीं समझना चाहिए ।यदि वह भी आँख में गिर जाए तो बड़ा दुखदाई हो सकता है । सभी इंसानों को जाति ,धर्म ,संप्रदाय से ऊपर उठ करके एक समान नजर से देखना चाहिए। भगवान के द्वारा बनाई गई हर छोटी, बड़ी वस्तु का अपना विशेष महत्व है। हमें उसे समझना चाहिए।

तिनका कबहु ना निन्दिये, जो पॉव तर होय।

कबहु उड़ी आँखिन पड़े,तो पीर घनेरी होय।।

5 संतोषी व्यक्ति सदा सुखी होता है- जीवन में दुख का कारण लालसाओं का होना है। ऐसा व्यक्ति कभी भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता जो इच्छाओं में जकड़ा रहता है । जो व्यक्ति माया, मोह ,लोभ, लालच से मुक्त हो जाता है वही व्यक्ति संसार में सुखी रहता है।मन की इच्छाएं कभी समाप्त नहीं होती हैं।अधूरी महत्वाकांक्षाएं

दु:ख का कारण बनती हैं। उनसे बचना चाहिए।

चाह मिटी चिंता घटी, मनवा बेपरवाह।

जिसको कुछ न चाहिए, वही शहंशाह ।।

6 अहंकार का त्याग करें-उन्होंने बताया है कि यह संसार क्षणभंगुर है ।इसलिए हमें अपनी धन, दौलत ,वैभव ,सुख सुंदर काया पर कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। हम सब गर्म तवे की बूंद जैसे हैं। न जाने कब सूख जाए। एक दिन सभी का मिट्टी में मिलना तय है। पांच तत्व का शरीर इस पंचतत्व की मिट्टी में विलीन हो जाएगा फिर इस पर घमंड क्यों किया जाए।अहंकार ईश्वर भक्ति में बाधक सिद्ध होता है। इस पर नियंत्रण होना जरूरी होता है।कबीर दास जी ने कहा भी है-

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोय।

एक दिन ऐसा आएगा मैं रौंदूगी तोय।।

कबीरा गर्व ने कीजिए,ऊँचा देख आवास।

काल पड़े भू लेटना, ऊपर जमसी घास।।

7 उचित समय का इंतजार करें- हमें कोई भी फैसला जल्दी बाजी में नहीं करना चाहिए। उचित समय आने का इंतजार करना चाहिए । जैसे माली अपने बगीचे के पौधों को धीरे-धीरे वर्षों तक सींचता है ,लेकिन उसमें फल लगते तभी हैं जब सही ऋतु आती है। क्योंकि उचित समय पर किया हुआ काम ही फलदाई होता है। समय अपनी अनवरत गति से चल रहा है ।हमें उसके साथ ही कदम बढ़ाने चाहिए व्यर्थ की जिद का त्याग करना चाहिए।उनके इस विचार का समर्थन रहीम दास जी के इस दोहें में चरितार्थ होता है-

धीरे-धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।

माली सींचे सो घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

8मन पर नियंत्रण रखें- मन बहुत चंचल है। मन अखिल का अंग तो है पर स्वयं

कुल नहीं है। इसलिए इस पर आत्मा का नियंत्रण रहना चाहिए। केवल मोतियों की माला का जाप करने से भक्ति नहीं होती। भक्ति के लिए मन को वश में करना बहुत जरूरी होता है।मन पर नियंत्रण रखकर ही मोह, माया,लोभ, लालच आदि से छुटकारा पाया जा सकता है।इन्द्रियों को संयमित करना साधक की सबसे बड़ी जीत होती है।इनसे बाहर निकलना कहना तो आसान है पर क़ाबू पाना

कठिन काम है।कबीर दास जी ने भी लिखा है-

माला फेरत जग भया, फिरा न मन का फेर।

कर का मन का डार दे,मन का मनका फेर।।

9 बोली को मधुर बनाना चाहिए- बोली मनुष्य की बहुत अनमोल संपत्ति है ।जो उसे प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाती है। मनुष्य को मृदुभाषी होना चाहिए। बोलने से पहले सोचना चाहिए ।बोली ही मित्र और बोली ही शत्रु बना देती है। बिना सोच समझकर बोलने वाला मनुष्य बाद में बहुत पछताता हैं।

मधुर वचन ते जात मिट उत्तम जन अभिमान।

तनिक सीत जल सों मिटे ,जैसे दूध उफान।।

वाणी और पानी दोनों में छवि नजर आती है।

यदि पानी स्वच्छ हो तो चित्र नजर आता है।

और वाणी मधुर हो तो चरित्र नजर आता है।' (नानक दास जी)

10 किसी प्रकार का दिखावा नहीं करना-वे अक्सर अपने प्रवचनों में कहा करते हैं कि कोई भी मनुष्य जाति या ऊँचे कुल में जन्म लेने से महान नहीं बनता है। महान बनने के लिए उसे गुणी और ज्ञानी होना चाहिए । कभी भी बाहरी दिखावे में नहीं आना चाहिए । जैसे हम तलवार खरीदते समय उसकी धार देखते हैं न की उसके चमकीले खोल को।कबीर ने अपने इस दोहें में ज्ञान को सर्वोपरि बताया है। इसी तरह नानक दास जी महाराज भी ज्ञान को महत्वपूर्ण बताते हैं।

जाति ने पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का ,पड़ी रहन दो म्यान।।

11 ईश्वर में आस्था श्रद्धा का भाव- ईश्वरी संसार रूपी उद्यान का सच्चा माली है जो उसे पलता है पूछता है और उसकी हर जरूरत को पूरा करता है हमें उसे पर पूरी श्रद्धा और निष्ठा का भाव बनाए रखना चाहिए । ईश्वर का हर समय धन्यवाद करते रहना चाहिए । ईश्वर भजन ही मनुष्य जन्म का मूल उद्देश्य है।तुलसी दास जी भी उनके इस विचार का समर्थन करते हुए प्रतीत होते हैं जैसे-

वारि मथे धृत होत है, सिकता ते वरु तेल।

बिन हरि भजन न भव तरै ,यह सिद्धांत अपेल।

रे! मन चिंता क्यों करें ,करले रब से प्रीत।

मन के हारे हार है ,मन के जीते जीत।।

12साधु संगति और सत्संग बहुत जरूरी- साधु पुरुषों की संगति और सत्संग यह वह दो साधन है जो मनुष्य को ईश्वर तक पहुंचाने का रास्ता दिखाते हैं। इसलिए मनुष्य को जीवन में साधु संगति को महत्व देना चाहिए और जितना हो सके सत्संग करते रहना चाहिए। सत्संग से विवेक बढ़ता है, भक्ति में प्रबलता आती है। भक्ति ज्ञान से पल्लवित होती है। और ज्ञान की प्राप्ति बिना सत्संग के संभव नहीं है ? राम चरित मानस में तुलसी दास जी लिखते हैं-बिना सत्संग के विवेक की प्राप्ति नहीं होती और बिना विवेक के ज्ञान की प्रप्ति सम्भव नहीं है। ये सभी ईश्वर की कृपा से प्राप्त होते हैं।

मात- पिता मिल जाएंगे , हर योनि के माय।

सन्त समागम हरिकथा ये मिलने की नाय।।

तुलसीदास जी ने भी सत्संग की महत्ता इस तरह बताई है।

बिनु सत्संग विवेक न होई।

राम कृपा बनु सुलभ न सोई।

भक्ति स्वतंत्र सकल गुण खानी।

बिनु सत्संग पाय नहीं प्राणी।।

मानवतावाद एक परिचय

इस संपूर्ण प्रकृति का सबसे मुख्य और बुद्धिजीवी घटक मनुष्य है। लेकिन मनुष्य में मानव होने के लिए कुछ नैतिक मूल्यों का समावेश जरूरी है। मानवतावाद एक ऐसा दृष्टिकोण व विचारधारा है ,जिसमें मानव और उसके नैतिक जीवन मूल्यों को महत्व दिया जाता है। किसी भी राष्ट्र की सरकार द्वारा जो नियम व कानून बनाए जाते हैं उनमें यही ध्यान रखा जाता है कि उनमें मानवीय मूल्यों का हित है या नहीं । मानवता में मनुष्य के सर्वांगीण विकास को महत्व दिया जाता है। मानवतावादी विचार धारा एक संपूर्ण जीवन दृष्टि का नाम है। जो मानवीय मूल्य, नैतिकता ,आध्यात्म और सार्वजनिक न्याय का समर्थन करती है। झूठ पाखंड, छद्म विज्ञान ,अंधविश्वास का सर्वथा निषेध करता है। मानवतावाद की नजर में प्रकृति का प्रत्येक प्राणी सर्वोपरि है। वह उसी से शक्ति भी प्राप्त करता है। इसलिए मानवतावाद का मुख्य उद्देश्य प्रकृति व मनुष्य की नि:स्वार्थ भाव से सेवा करना है ।मनुष्य के अंदर निवास करने वाली आत्मा परमात्मा का अंश व अद्वितीय कृति है । इसलिए मानवतावाद मनुष्य की सेवा पर बल देता है । मनुष्य न तो केवल मशीन है और न ही केवल जीव है। वह असीम संभावनाओं से युक्त ईश्वर की एक अनुपम श्रेष्ठ कृति है । वैसे मानवतावादी विचार धारा भारतीय सनातन संस्कृति का मूल आधार रहा है। सनातन संस्कृति भी मनुष्य का नैतिक उत्थान व कल्याण ही चाहती है।

सिंघानिया विश्वविद्यालय ,राजस्थान के पूर्व कुलपति प्रोफेसर डॉक्टर सोहन राज तातेड़ के अनुसार-

" मानवतावाद का अभिप्राय मनुष्य केंद्रित दर्शन से है जो पूर्व जन्म स्वर्ग नरक या परलोक की अवधारणाओं को स्वीकार नहीं करता"।

जैन और बौद्ध धर्म के अनुसार मानवतावाद-

मानवतावाद का मुख्य संबंध ही लौकिक जीवन से है न की पारलौकिक जीवन से। इसका मुख्य केंद्र वर्तमान जीवन और उसका उच्चतम निर्माण करना है ।जैन दर्शन का मुख्य मंत्र जियो और जीने दो, मानवतावाद का मुख्य आधार है ।बौद्ध दर्शन में तो ईश्वर की सत्ता के साथ-साथ आत्मा की अमरता का भी निषेध किया गया है। इस आधार पर मनुष्य और उसका वर्तमान जीवन ही सर्वोच्च रहता है।अष्टांग मार्ग की अवधारणा मानव कल्याण को ध्यान में रखकर ही बौद्ध धर्म में अपनाई गई है। कर्मकांडों का खंडन करके स्वावलंबी बनाने की प्रेरणा प्रदान करना मानवतावाद की ही एक अवधारणा है। जैन धर्म में कहा गया है -

"अहिंसा परमो धर्म: "

जिसे सभी धर्म दर्शनों ने मान्यता प्रदान की है। जातिगत भेदभाव का दोनों धर्म निषेध करते हैं। इस आधार पर कह सकते हैं की जैन और बौद्ध दोनों धर्म मानवतावाद के पक्षधर हैं।

मानवता के उत्थान के लिए संस्कार बहुत जरूरी हैं।संस्कार आध्यात्मिकता से आते हैं।संस्कार हमें विनम्रतापूर्वक सादगी से जीना सिखाते हैं।आज जो यह मार काट का हिंसात्मक वातावरण बन गया है, यह सब संस्कारहीनता के कारण है।समाज में आये दिन रिश्ते शर्मसार हो रहे हैं। अमानवीय हत्याएं हो रही हैं, युद्धों का वातावरण बन रहा है। इसे मानवता वादी सोच विकसित करके संयमित किया जा सकता है। ऐसी मेरी मान्यता है।

श्रीमद्भागवत गीता जी में मानवता वाद

गीता जी के अध्ययन से यह सार निकलकर सामने आता है कि गीता कोई सामान्य ग्रंथ नहीं है । उसमें संपूर्ण मानव को मानवता का संदेश दिया गया है। वह संपूर्ण जीवन दर्शन है ।उसमें यह बताया गया है कि मानव अपने कार्यों से देवता बन सकता है ।यह चमत्कार है । वह अपने नीच कार्यों से दानव भी बन जाता है। यह उसकी हार है । परंतु मानव बने रहने में उसकी जीत भी है ।गीता मानव को जीवन जीने की संपूर्ण कला सिखाती है। इसलिए वह आज सभी का लोकप्रिय ग्रंथ है। उस पर अनेक लोग शोध कार्य कर रहे हैं। सभी प्रमुख भाषाओं में उसका अनुवाद

किया जा चुका है । कई विश्वविद्यालय उसे अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर चुके हैं।

गीता जी के कुछ मानवता वादी सिद्धान्त ये हैं-

*ईश्वर सर्वोच्च व सर्वव्यापक है।

*जहाँ धर्म है वहाँ ईश्वर है।

*सिर्फ कर्म करो फल की इच्छा मत करो ।

* जैसा व्यवहार तुम स्वयं से चाहते हो वैसा व्यवहार दूसरों से करो।

* मनुष्य अपने कर्मों से अच्छा व बुरा बनता है।

* संसार नश्वर है। संसार में तुम्हारा कुछ भी नहीं है।

* भला करो भला होगा।

*अन्याय नाश की जड़ है।

मानवता के सम्बंध में विभिन्न विद्वानों के विचार

मानव समाज किस दिशा में जा रहा है ? इसकी चिंता करने वाला आज कोई नहीं है ? सबको अपने निजी स्वार्थों की पड़ी है। ऐसे में मानवता को जिंदा रखना कठिन हो गया है। युद्ध, गरीबी, अपराध, भूख आदि के कारण लोग मानवता से विमुख से होते जा रहें हैं। हर आदमी यही सोचता है जब ओरो को इसकी चिंता नहीं है तो मुझे दुनिया की चिंता क्यों करनी ? इसी सोच ने मानवीय मूल्यों का बंटाढार किया है। कुछ भी बदलता या बेहतर होता नहीं दिख रहा है, इसलिए हमें दुनिया को वैसे ही स्वीकार करना चाहिए जैसा वह है।

यद्यपि मौजूदा अन्यायों को स्वीकार करना और उन्हें गंभीर मुद्दों के रूप में देखना महत्वपूर्ण है जिन्हें हल करने की आवश्यकता है।

मानवता के महत्व को हम महापुरुषों के कुछ कथनों के माध्यम से आसानी से समझ सकते हैं।

जैसे,-

"आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक महासागर है; यदि समुद्र की कुछ बूँदें गंदी हैं, तो समुद्र गंदा नहीं हो जाता।" - राष्टपिता महात्मा गांधी ने कहा है।

"लोगों को उनके मानवाधिकारों से वंचित करना उनकी मानवता को चुनौती देना है।" - नेल्सन मंडेला का कथन है।

"प्रेम और करुणा आवश्यकताएं हैं, विलासिता नहीं। उनके बिना मानवता जीवित नहीं रह सकती।" - दलाई लामा

"एक व्यक्ति ने तब तक जीना शुरू नहीं किया है ,जब तक वह अपनी व्यक्तिवादी चिंताओं के संकीर्ण दायरे से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता की व्यापक चिंताओं तक नहीं पहुँच जाता।" - मार्टिन लूथर किंग जूनियर।

“सहिष्णुता क्या है ? यह मानवता का परिणाम है; हम सभी कमज़ोरी और त्रुटि से बने हैं; आइए हम पारस्परिक रूप से एक-दूसरे की मूर्खता को क्षमा करें - यही प्रकृति का पहला नियम है। - वोल्टेयर

“दुनिया मानवता की है, इस नेता, उस नेता या उस राजा या राजकुमार या धार्मिक नेता की नहीं। विश्व मानवता का है।” - दलाई लामा

"जब स्वतंत्रता का कोई उद्देश्य नहीं होता है, जब वह पुरुषों और महिलाओं के दिलों में अंकित कानून के शासन के बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहती है, जब वह अंतरात्मा की आवाज नहीं सुनती है, तो यह मानवता और समाज के खिलाफ हो जाती है।" - पोप जॉन पॉल द्वितीय

"किसी न किसी तरीके से, हम सभी को यह पता लगाना होगा कि इस समकालीन जीवन में हमारी मानवता के विकास को सबसे अच्छा क्या बढ़ावा देता है, और खुद को उसके प्रति समर्पित करना होगा।" -जोसेफ कैम्पबेल

"जीवन का एकमात्र उदेश्य मानवता की सेवा करना है।" - लियो टॉल्स्टॉय

"बुरी परिस्थितियों के दौरान, जो मानव विरासत है, आपको निर्णय लेना चाहिए कि आप निराश न हों। आपमें मानवता है, और आपको किसी भी चीज़ को उसे कम करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। हम यह जानने के लिए बाध्य हैं कि हम वैश्विक नागरिक हैं। आपदाएँ हमें याद दिलाती हैं कि हम विश्व नागरिक हैं, चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं।" -माया एंजेलो

"मानव जीवन का उद्देश्य सेवा करना, करुणा दिखाना और दूसरों की मदद करने की इच्छा दिखाना है।" - अल्बर्ट श्वित्ज़र

"मानवता की महानता मानव होने में नहीं, बल्कि मानवीय होने में है।" - महात्मा गांधी जी

ठीक इसी तरह नानक दास जी ने कहा है ' निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करना ही सच्ची मानवता है।

रामचरित मानस में मानवता वाद

रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास जी के द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रंथ है। रामचरितमानस जिसके नायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम स्वयं मानवता के आधार स्तंभ है। रामचरितमानस की चौपाइयां मानव का सर्वोच्च धर्म मानवता को बताती हैं। तुलसीदास जी ने कहा है-

परहित सरिस धर्म नहीं भाई ।

पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

रामचरितमानस की गणना संसार के 100 सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों में यूँ ही नहीं की जाती है । वह समन्वय की विराट चेष्टा से ओतप्रोत मानवतावादी महाकाव्य है ।जिसमें तुलसी ने राम को लोकव्यापी और मंगलमय स्वरूप प्रदान किया है ।परिवार और समाज में मर्यादा को स्थिर रखने वाला राम का चरित्र उभारा गया है ।जिसमें पिता का पुत्र के प्रति ,पुत्र का पिता के प्रति ,माँ के प्रति ,पत्नी के प्रति, भाइयों के प्रति ,समाज और प्रजा के प्रति क्या कर्तव्य होते हैं ? यह उसमें बताने का प्रयास

किया गया है। जो मानवतावाद से हमें सीखने को मिलता है। नीति संबंधी सिद्धांत रामचरितमानस के ताने बाने में बने हुए हैं। जिनके कारण उसे लोकमंगल का काव्य कहा जाता है।

इन सभी बातों से अनुमान लगाया गया जा सकता है कि रामचरितमानस हमें मानवता का पाठ पढाता है। जिन सिद्धांतों को आधार बनाकर मैं यह अनुसंधान कार्य कर रहा हूँ वे सभी सिद्धांत रामचरितमानस में समाए हुए हैं। इन सभी सिद्धांतों के माध्यम से संत श्री नानक दास जी महाराज लोक कल्याण करना चाहते हैं और वैश्विक समाज में शांति और साहचर्य की भावना विकसित करना चाहते हैं। इसीलिए मैं संत नानक दास जी महाराज की विचारधारा और उनके मानवतावाद का हृदय से समर्थन करता हूँ ।

मानवता वाद की आवश्यकता क्यों हैं?

नहीं सुरक्षित मन्दिर, मस्जिद, गिरजे या गुरुद्वारे।

निर्दोषों का खून बहाते घूम रहे हैं हत्यारे।

पता नहीं कब कहाँ मौत का अग्नि पुंज फट जाए ?

चिथड़े -चीथड़े लाशों से निर्दोष धरा कब पट जाए ?

आज संपूर्ण विश्व मानों बारूद के ढेर पर खड़ा हुआ है। कुछ तकनीक विकसित राष्ट्रों ने ऐसे ऐसे अस्त्र-शस्त्र ईजाद कर लिए हैं । जो न जाने इस संपूर्ण संसार को कब भाप बनाकर उड़ा दे । हम जापान के हिरोशिमा और नागासाकी का नृशंस कांड व रूस-यूक्रेन युद्ध का भयानक दृश्य पहले ही देख चुके हैं। हमने विज्ञान को मानव कल्याण के लिए अपनाया लेकिन आज उसका स्वार्थ पूर्ण दुरुपयोग अभिशाप साबित हो रहा है ।मानवीय मूल्यों का पतन व वैश्विक अशांति का भय चारों और मंडराता नजर आ रहा है।हमने विज्ञान का अविष्कार मानव कल्याण के लिए किया लेकिन वही अब धीरे धीरे स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण अभिशाप बनती जा रही है।मनुष्य विकास के नाम पर विनाश की ओर अग्रसर होता दिखाई दे रहा है। आतंकवाद एक विनाशकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है । यह गम्भीर चिंतन का

विषय है। ऐसे में मानवता की रक्षा के लिए मानवतावाद को अपनाने की महती आवश्यकता है ।मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मानवतावाद की आवश्यकता क्यों है ?

1 मानव मात्र की निस्वार्थ सेवा के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

2 मनुष्य व प्रकृति की रचनात्मकता को बनाए रखने के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

3 वैश्विक शांति की भावना स्थापित करने के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

4 आपसी भाईचारा व सौहार्द बढ़ाने के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

5 मानवीय नैतिक मूल्यों की संरक्षा के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

6 पर्यावरण व उसके घटकों की संरक्षा के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

7 आदर्श नैतिक मूल्यों को भावी पीढ़ी तक स्थानांतरित करने के लिए मानवता वाद की आवश्यकता है।

8 विश्व बंधुत्व व एकता की भावना स्थापित करने के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

9 संसार के प्राणी मात्र के चहुँमुखी विकास के लिए मानवतावाद की आवश्यकता है।

10 मानव सभ्यता व सनातन संस्कृति की संरक्षा के लिए मानवतावाद की महती आवश्यकता है।

पाकिस्तान ,अफ़गानिस्तान ,सऊदी अरब जैसे मुस्लिम देशों में स्त्रियों की दशा बहुत ही खराब है। पुरुषों के द्वारा उनका शोषण किया जाता है। उन्हें घर के कामकाज के लिए ही इस्तेमाल किया जाता है। उन्हें नौकरी करने तक की इजाजत नहीं है।सीमा हैदर की घटना तो सब जानते हैं ।वह वह अपने पति हैदर

के अत्याचारों से परेशान होकर भारत में पनाह लेती है। सचिन के साथ अपनी गृहस्थी बसाती है। भारत में भी मणिपुर जैसी घटनाएं मानवता को शर्मसार करने वाली हैं । भारत में कन्हैया लाल हत्याकांड, सुखदेव गोगामेड़ी जैसी हत्याएं हैं। भारतीय सनातन का अपमान और मानवता पर कलंक है। आज स्वार्थ में अंधा इंसान नृशंस हत्याएं और कुकर्म करने पर उतारू हो गए हैं। मानव अंगों की तस्करी, बाल शोषण ,आतंकवाद जैसी समस्याएं संपूर्ण विश्व के सामने हैं। जानवरों के प्रति क्रूरता का बर्ताव किया जा रहा है ।उन्हें केवल मनुष्य के भोजन के लिए ही पाला जा रहा है। मानव की इस क्रूर प्रवृत्ति के कारण आज कई जानवर प्रजातियां लुप्त होने की कगार पर हैं। पर्यावरण प्रदूषण जैसी वैश्विक समस्याओं के कारण प्रकृति में असंतुलन की स्थिति पैदा हो गई है। इसके संकेत हमें अपने आसपास के परिवेश में दिखाई दे रहे हैं ।ऐसे में हम मानवतावादी सोच विकसित करके मानवता के अस्तित्व को बचा सकते हैं।

हम मानवता वाद का परिचय कैसे दे सकते हैं ?

1 असहाय और दीन दुखियों की सेवा करके हम मानवतावाद का परिचय दे सकते हैं- समाज में सभी तरह के लोग रहते हैं ।कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अभावग्रस्त हैं। विकलांग ,कमजोर ,शक्तिहीन ,गरीब कई प्रकार के लोग समाज में रहते हैं । उनकी देखभाल और परवरिश करने की जिम्मेदारी समर्थ और शक्तिवान लोगों की होती है। जैसे हमारे घर में कोई विकलांग बच्चा पैदा हो जाए तो उसके पालन पोषण की संपूर्ण जिम्मेदारी उसके समर्थ बड़े भाइयों पर होती है। ठीक वैसे ही हमें भी अभावग्रस्त और जरूरतमंद लोगों की सहायता करनी चाहिए । आर्थिक, शारीरिक ,मानसिक, सहायता हम उन्हें प्रदान कर सकते हैं । जिससे उन्हें भी जीवन जीने में संबल मिलेगा और आपका मानव होने का कर्तव्य पूरा हो जाएगा।

2 अपने दैनिक भोजन में शाकाहारी पदार्थों को शामिल करके - मनुष्य समझदार होकर भी जंगली जानवरों का शिकार करके अपने भोजन का अंग बनाता है। इसके लिए वह रोज न जाने कितने जीवों की हत्या करता है ।ऐसे में उन्हें अन्य भोज्य पदार्थों को अपने भोजन में शामिल करके पेट की तृप्ति करनी चाहिए। जिससे हम जीव हत्या के दोष से भी बच जाएंगे और पर्यावरण का संतुलन भी

बना रहेगा ।आज बहुत से जीव लुप्त होने की श्रेणी में है। अपनी आदतों में सुधार करके हम उनकी रक्षा कर सकते हैं।

3 समाज में आपसी प्रेम और भाईचारे का बर्ताव करके - हमें समाज में प्रेम का संदेश देना चाहिए ।सभी प्रकार के वैर भाव भुलाकर एक दूसरे के साथ मिलना चाहिए ।अपने शत्रुओं को भी गले लगाना चाहिए। यही हमारी संस्कृति हमें सिखाती है जाति ,धर्म, लिंग ,नस्ल,भाषा के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए। एक दूसरे के त्योहारों में, उत्सवों पर हमें हिस्सा लेना चाहिए ।एक दूसरे के सुख दुःखमें सहायता प्रदान करनी चाहिए ।इस तरह मानवतावाद का परिचय दे सकते हैं।

4 अपने अपराधियों को क्षमा करके- जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के साथ गलत व्यवहार करता है ,तो प्राय लोग उससे बदला लेने की कोशिश करते हैं ।ऐसे में हमें लोगों को क्षमा करना चाहिए। क्षमा करने वाला स्वयं महान बन जाता है ।क्षमा करने से मनुष्य को संतोष की प्राप्ति होती है। क्षमा करना जीरो का और समर्थवान लोगों का आभूषण है।

5 ईश्वर का धन्यवाद करके- मनुष्य इस भौतिक संसार का सबसे बुद्धिमान और समझदार प्राणी है। ऐसे में उसे ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। लेकिन मनुष्य ईश्वर का धन्यवाद देने की बजाय उसे कोसता रहता है ।हमारे पास गाड़ी ,घोड़े ,बंगले, कार ,धन ,दौलत आदि होने पर भी संतोष धारण नहीं करता है।

6 बाढ़ ,भूकम्प,महामारी जैसी आपदाओं में लोगों की मदद करके- प्राकृतिक आपदाएं विश्व में कहीं ना कहीं आती रहती हैं।जब भी पर्यावरण में असंतुलन की स्थिति पैदा होती है तब ऐसी आपदाओं के संकट मानव को झेलना पड़ते है।ऐसे समय में हमें पीड़ितों को आर्थिक, शारीरिक ,मानसिक मदद देनी चाहिए।अभी 2023 में सुरंग निर्माण करते समय जो 41 मजदूर दबने की दुर्घटना घटी। उस समय भारत सरकार व अनेक लोगों ने मानवता का परिचय दिया।उन्हें बाहर निकालने में अपनी पूरी ताकत लगा दी।ऐसे अवसरों पर हमें भी सेवा के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

मैं नानक दास जी की विचारधारा और उनकी मानवता वादी सोच का इसलिए भी समर्थन करता हूँ क्योंकि उनमें ये सभी लक्षण हैं। वे अपने दैनिक कार्यों में इन सभी सिद्धान्तों का अनुसरण करते हैं। वे पर्यावरण और जीव मात्र के प्रति अति सजग और अति संवेदनशील हैं।

मानव धर्म सर्वोच्च है।

मानव धर्म सर्वोच्च है। यह बात कहने में तो बहुत सरल लगती है ,लेकिन इसे निभाते कितने लोग हैं?

हमारे पास धन,दौलत, परिवार, शिक्षा, सब कुछ मौजूद होने पर हम मानवता के बिना कुछ नहीं हैं।जैसे तालाब पानी के बिना, शरीर प्राण के बिना अधूरा है, ठीक वैसे ही मानवता के बिना मानव मानव नहीं होता है। आज नैतिक मूल्यों का पतन और नास्तिकता का जो लगातार प्रचलन बढ़ रहा है। उसका मूल कारण भी मानव धर्म का विस्मृत होना ही है। मानव इस प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी है। वह विवेक शील होने पर भी उसका पूरा उपयोग नहीं कर रहा है।मनुष्य के बारे में कहा गया है-

निद्रा,भोजन, भोग,भय,नर पशु एक समान।

अधिक ज्ञान है नरन में ,बिन ज्ञान नर पशु समान।

मानवता का उद्देश्य मनुष्य में मनुष्यत्व का भाव जगाना है।लेकिन आज इस विषय पर उपदेशक ज्यादा हैं,पालनकर्ता कम है।आज मनुष्य अपनी दानवीय प्रवृत्ति के कारण भोग ,विलास व आसुरी वासना की कठपुतली बनते जा रहे हैं।मैं सर्वशक्तिमान हूँ।मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ। मैं बहुत ज्ञानी हूँ।ऐसी अभिमानी वृत्ति मानव की बनती जा रही है। जबकि उसे खुद के अस्तित्व का ज्ञान ही नहीं है। मैं एक स्काउट शिक्षक हूँ । मैं रोज विद्यालयों में देखता हूँ । बच्चों में अनुशासन और नैतिकता नाम की कोई चीज ही नहीं रह गई है। अपने देश की संस्कृति ,राष्ट्र और धर्म के प्रति कोई अनुराग नहीं है। नैतिक शिक्षा का तो पतन -सा ही गया है। बच्चे एकाकी होते जा रहे हैं ।माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान नहीं करते ।मैं समझता हूँ

सिनेमा और मोबाइल ने देश का भविष्य बर्बाद किया है। विद्यार्थियों के लिए मोबाइल भस्मासुर बन रहा है। फास्ट फूड और जंक फूड के बढ़ते प्रचलन ने देश के भविष्य को शारीरिक रूप से कमजोर बना दिया है । बच्चों को सात्विक आहार न मिलने के कारण , वे मानसिक रूप से खिन्न दिखाई देते हैं ।क्योंकि कहते भी हैं-

जैसा पीये पानी,वैसी बोले वाणी।

जैसा खाए अन्न वैसा होय मन।

मानव धर्म कोई बाहर की वस्तु नहीं है । उसका संबंध हमारे अंतर मन से। है मनुष्य के भीतर सोई हुई मानवता को जगाना ही मानव धर्म है ।।मानव धर्म संसार में सर्वोपरि और सत्य धर्म है ।मनुस्मृति में मानव धर्म के 10 लक्षण बताए गए हैं ।जिनका पालन कर हम मानवता का परिचय दे सकते हैं।

धृति,क्षमा, दमोस्तेयं,शौच,मिनिंद्रयनिग्रहम।

धिविधि, सत्य क्रोधो दशकम धर्म लक्षणम।

(धैर्य ,क्षमा ,दया ,चोरी न करना, पवित्रता, इंद्रियों का संयम ,बुद्धि, विद्या ,सत्य, व क्रोध न करना ।ये 10 लक्षण मानवता के हैं)

मैंने इस अनुसंधान में यह जाना है कि उपर्युक्त सभी 10 लक्षण सन्त श्री नानक दास जी में मौजूद हैं । यही कारण है कि वे समाज में एक मानवतावादी सच्चे संत के रूप में पूजनीय है ।इसलिए मुझे उनकी विचारधारा से अधिक अनुराग है।

नानक दास जी की क्षमाशीलता की घटना

महाराज श्री एक रात एक कार्यक्रम से अपने आश्रम ,बड़ी खाटू लौट रहे थे । रात्रि के लगभग 12 बज रहे थे। कुछ हिंसक दानवीय प्रवृत्ति बदमाशों ने महाराज श्री को अरावली की पहाड़ियों के रास्ते में घेर लिया और उन पर पिस्तौल तान दी। इसकी घटना की सूचना महाराज श्री ने फोन करके अपने समर्थकों को दी। थोड़ी ही देर में वहाँ उनके समर्थक इक्कट्ठे हो गए। तब तक बदमाश फरार हो गए । बाद में बदमाशों का पता लगा लिया गया। फिर भी महाराज श्री ने उन्हें किसी प्रकार

का दंड देने की बजाय क्षमा करके अपनी मानवता का परिचय दिया। इससे पहले भी महाराज श्री के ब्रड़ी खाटू स्थित आश्रम में अज्ञात बदमाशों के द्वारा तोड़फोड़ मचाई गई थी ।उन पर हमला करने का प्रयास भी किया गया था ।लेकिन उस रात महाराज श्री वहां मौजूद नहीं थे । इसलिए अप्रिय घटना होने से बच गई । अपराधियों के प्रति भी किसी प्रकार का द्वेष न रखना सच्चे संत की पहचान है। कहते हैं-

खोद खाद धरती सहे, काट कूट वनराय।

कटुवचन ये सन्त सहे, और से सहे न जाय।।

नानक दास जी की तपस्या

नानक दास जी छोटी उम्र में ही स्वर्गीय महाराज श्री देवीदास जी के द्वारा गोद ले लिए गए।उन्होंने ही उन्हें शिक्षा और दीक्षा प्रदान की। उन्हीं के सानिध्य में रहकर वे पूजा ,पाठ,ध्यान व योगाभ्यास करते थे।उन्होंने नानक दास जी को एक मूली और एक बाजरे की रोटी देकर देवनगर की पहाड़ी पर तपस्या करने भेजा था।वहाँ नानक दास जी निर्भीक रहकर मानवता के कल्याण हेतु तपस्या रत रहे।इस दौरान उन्हें कई विचित्र अनुभवों की प्राप्ति हुई।वे निर्विकार हो कर साधना करते रहे।तभी उन्हें महाराज श्री देवीदास जी का मानसिक सन्देश प्राप्त हुआ।और वे उन्हीं के बुलावे पर आश्रम वापस लौट आए।

फिर से उन्हीं के सानिध्य में सेवा और सत्संग करते रहे।ऐसी बहुत सी दिलचस्प बातें नानक दास जी महाराज के जीवन से जुड़ी हुई हैं ।जो उन्हें एक साधारण बालक से महापुरुष बनाती हैं।

मानवता को सजीवता देने वाली एक ओर कहानी

संसार में कोई सबसे बड़ा धर्म है तो वह है मानवता का धर्म। जिस इंसान के अंदर मानवता है। वह सब धर्मों में श्रेष्ठ है। मानवता कभी भी किसी कि जाति या धर्म नहीं देखती बल्कि नि:स्वार्थ भाव से हर मानव की सेवा करना ही अपना धर्म समझती है। ऐसा ही कुछ संदेश दे रही है यह मानवता पर लिखी कहानी ।

नागार्जुन प्राचीन समय में एक महान रसायनशास्त्री हुए हैं। उन्होंने दिन-रात काम कर के कई असाध्य रोगों की दवा बनाई। काम इतना बढ़ गया कि उन्हें अब एक सहायक की आवश्यकता महसूस हुई। उन्होंने राजा से विनती की कि काम बढ़ जाने के कारण अब उन्हें एक सहायक की आवश्यकता है। राजा ने उन्हें कहा कि अगली सुबह वह दो नौजवानों को भेज देंगे। उनमे से जो ज्यादा योग्य हो उसे वे अपना सहायक बना लें।अगली सुबह नागार्जुन के पास दो नौजवान आये। दोनों ने बराबर ही शिक्षा प्राप्त की हुई थी। दोनों की योग्यता भी एक जैसी ही थी। लेकिन नागार्जुन को तो बस एक ही सहायक चाहिए था। यह देख नागार्जुन सोच में पड़ गए कि वे किसे अपना सहायक बनायें और किसे नहीं। कुछ देर सोचकर उन्होंने दोनों को एक पदार्थ दिया और कहा,

"ये कौन सा पदार्थ है इस बारे में आपको खुद ही जानकरी प्राप्त करनी है और एक रसायन बना कर लाना है। रसायन देखने के बाद मैं यह निर्णय लूँगा कि कौन मेरा साहयक बनेगा।"

दोनों नौजवान नागार्जुन को नमस्कार करने के बाद चलने ही वाले थे कि नागार्जुन ने कहा,

“जाते समय राजमार्ग से होते हुए जाना।"

नागार्जुन ने ऐसा क्यों कहा यह तो दोनों को नहीं पता लगा। फिर भी दोनों चले गए।

कुछ दिन बीते, दोनों फिर एक साथ नागार्जुन के पास पहुंचे। राजा भी नागार्जुन के साथ ही थे। उन नौजवानों में से एक उत्साहित और प्रसन्न नजर आ रहा था वहीं दूसरा उदास था।

नागार्जुन ने जब रसायन दिखाने को कहा तो पहले नौजवान ने अपना रसायन दिखाया। उसके गुण-दोष बताये। नागार्जुन उस नौजवान से प्रभावित हुए। सब कुछ पूछ लेने के बाद नागार्जुन ने दूसरे नौजवान से अपना रसायन दिखाने को कहा। इस पर उस नौजवान ने बताया कि वह रसायन तैयार नहीं कर सका।

नागार्जुन ने जब कारण पूछा तो उसने बताया,"आपके कहे, अनुसार मैं राजमार्ग से जा रहा था। वहाँ पर मैने एक बीमार व्यक्ति को देखा। जिसकी हालत बहुत ख़राब थी। कोई भी उस व्यक्ति की सहायता नहीं कर रहा था। मुझे उस व्यक्ति पर तरस आ गया। फिर मैं उसे अपने साथ ले गया। उसकी देखभाल की। ये सब करते हुए मुझे इस पदार्थ से रसायन बनाने का समय ही नहीं मिला।"

ये सब सुनने के बाद नागार्जुन ने कहा-"ठीक है कल से तुम मेरे साथ काम करोगे। मैं तुम्हें अपना सहायक नियुक्त करता हूँ।"

यह सुन राजा तुरंत बोले-

"लेकिन नागार्जुन इस नौजवान ने तो रसायन बनाया ही नहीं। तो फिर तुम इसे अपना सहायक क्यों नियुक्त कर रहे हो।"

इस पर नागार्जुन ने उत्तर दिया-

"महाराज मुझे पहले से इस बात का बोध था कि राजमार्ग पर एक बीमार व्यक्ति है। इसीलिए मैंने दोनों को राजमार्ग से होकर जाने के लिए कहा था। पहले नौजवान ने उस पर ध्यान नहीं दिया जबकि दूसरे नौजवान ने निःस्वार्थ भाव से उसकी सेवा की और मानवता धर्म निभाया। ऐसे रसायन का क्या लाभ जो किसी के प्राण न बचा सके। चिकित्सा करने के लिए मानव बनना बहुत आवश्यक है। जिस व्यक्ति में मानवता नहीं है ।वह किसी की चिकित्सा कैसे करेगा? इसीलिए मैंने दूसरे नौजवान को अपना सहायक नियुक्त किया।"

राजा नागार्जुन का उत्तर सुनकर और उनकी सोच देख कर बहुत प्रसन्न हुए।

आज यही कार्य परम् पूजनीय नानक दास जी महाराज कर रहे हैं।वे भी हमें पहले मानव बना रहे हैं। ताकि निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा कर सकें।

रामायण में गिलहरी की कर्मनिष्ठा की कहानी

बात उस समय की है ।जब भगवान राम अपने पिता दशरथ की आज्ञा पाकर वन चले गए।वहाँ लंकापति रावण ने उनकी भार्या सीता का हरण कर लिया। तब राम

ने हनुमान जी की सहायता से सीता जी का पता लगाया ।लंका पर विजय पाने के लिए उन्हें समुद्र पर पुल बाँधना था।पुल बनाने का कार्य वानर भालुओं की सहायता से चल रहा था।नल और नील नाम के दो वानर राम नाम लिखी सिलाए समुद्र पर तैरा रहे थे।सभी वानर भालू अपनी अपनी क्षमता का कार्य कर रहे थे।उनके साथ एक गिलहरी भी अपनी पूँछ में भरकर मिट्टी ला रही थी।उसे पसीने पसीने होते देखकर एक वानर ने पूँछा । तू व्यर्थ क्यों परेशान हो रही है ? तेरी इतनी सी मिट्टी से क्या हो जाएगा ? वह चुप रही।अन्य वानरों ने उसकी हँसी उड़ाना चाही।तभी उन पर भगवान श्री राम की नजर पड़ी।वे पास आए और बोले ।देखो समुद्र में गिलहरी के द्वारा लाई हुई मिट्टी के कण आपस में चिपककर चट्टान का रूप ले रहे हैं। जिससे तुम्हारे कार्य को बल मिल रहा है। महत्व इसके कम व ज्यादा काम का नहीं है।महत्व इसकी कर्मठता ,श्रद्धा और मेहनत का है। यह सुन सभी वानर भालू सन्न रह गए।तभी उन्होंने गिलहरी की पीठ पर तीन उंगलियों को फेरते हुए आशीर्वाद दिया ।जो आज भी उसकी पीठ पर रेखाओं के रूप में उभरी हुई हैं।

अतः सहयोग बड़ा हो या छोटा हो यह महत्वपूर्ण नहीं है महत्वपूर्ण वो भाव है जिससे प्रेरित होकर हम राष्ट्र हित सहयोग करते हैं। छोटा ही सही लेकिन नानक दास जी महाराज का सहयोग देश हित में गिलहरी के जैसे समर्पण की भावना से प्रेरित है। जो उन्हें एक अलग पहचान देता है।

कर्म की भावना विकसित करें।

इस भौतिकतावादी संसार में मनुष्य अकर्मण्य और आलसी होता जा रहा है। कर्म करना उसे अच्छा नहीं लगता। उपलब्धियां तो वह आसमान भर की छूना चाहता है ,लेकिन काम के नाम पर कुछ नहीं। मैं अक्सर देखता रहता हूँ। क्लर्क लोग दफ्तरों में छिपे बैठे रहते हैं, अध्यापक पढाना नहीं चाहते ,अधिकारी अपना काम दूसरों पर लादते रहते हैं, विद्यार्थी पढ़ने से जी चुराते हैं ,मजदूरों को बिना काम मजदूरी चाहिए ।यह सब किस तरह की मनोवृत्ति समाज की होती जा रही है ? कोई देश कितना उन्नत है। यह उसके नागरिकों की कर्म भावना पर निर्भर है।

जापान का ही उदाहरण ले लीजिए - वहाँ का हर एक बच्चा ,स्त्री, पुरुष देश के प्रति निष्ठा से समर्पित है और मन से काम करता हैं ।तभी तो वह इतना विकसित है। हमारे यहां एक काम करेगा 10 खाएंगे। कैसे विकास होगा ? जब तक हम स्वावलंबी नहीं बनेंगे तब तक देश की आर्थिक दशा नहीं सुधरेगी। हम जब भी कोई काम करें । यह इंतजार न करें कि कोई हमसे कहेगा या अनुदेशन देगा ,तब करेंगे । काम के प्रति स्वयं जागरूक बने, अपनी क्षमता, प्रशिक्षण ,कार्य कुशलता स्वयं बढ़ाएं। इसके लिए जरूरी है, स्वयं पर भरोसा और आत्म अनुशासन बनाए रखना।शिक्षा सन्त स्वामी केशवानंद जी ने कहा है -

"अपने पर भरोसा कभी काम मत करो"।

काम के प्रति सकारात्मक सोच और निष्ठा बनाए रखें ।निश्चित ही सफलता आपके कदम चुमेंगी । लापरवाही,टालू काम ,काम को बोझ मानने वाले लोग जीवन में कभी सफल नहीं हो सकते। कार्य समर्पण और दक्षता मनुष्य का सर्वोत्तम आभूषण है। जिससे मनुष्य जीवन में उन्नति करता है। कार्य से मनुष्य उच्च व निम्न बनता है । संसार में कर्म की पूजा है । कर्म से ही मनुष्य के आदर्शों का सही मूल्यांकन होता है।काम कोई छोटा या बड़ा नहीं होता । मनुष्य भी न अच्छा होता है और न बुरा होता है । कर्म ही उसे अच्छा और बुरा बनाते हैं। कार्य में सफलता के लिए कुछ सिद्धांतों का पालन करना जरूरी होता है। जैसे

1 रुचि से काम करना2 दक्षता अर्जित करना 3 प्रशिक्षण प्राप्त करना 4 प्रयास जारी रखना 5 काम के प्रति समर्पण 6 समय का उचित प्रबंध ।

उपर्युक्त बातों का सही पालन करने पर व्यक्ति जरुर सफलता को प्राप्त करता है। जब भी कोई कार्य करें तब पूरी ताकत और निष्ठा के साथ करें। लेकिन देखने में यह आता है कि शुरुआत तो बड़े उत्साह के साथ हो जाती है लेकिन धीरे-धीरे उत्साह का सूर्य अस्त होता चला जाता है ।आखिर पराजय का सामना ही करना पड़ता है।अक्सर लोग काम को जीवन यापन का व्यवसाय मात्र समझते हैं ।काम केवल व्यवसाय नहीं है ,जीवन निर्माता है, भाग्य विधाता है और मनुष्य का वास्तविक सम्मान है।काम की शुरुआत में कुछ गलतियां जरूर होती हैं। हमें उनसे

हताश और निराश नहीं होना चाहिए ।उन्हें सुधार कर आगे बढ़ना चाहिए। गलतियां तो करने वालों से ही होती है, जो करेगा ही नहीं ,उससे क्या गलती होगी ?इसलिए कर्म करते रहें। अकर्मण्यता पतन और विनाश की जड़ है। डॉक्टर श्याम मनोहर व्यास ने अपनी पुस्तक "कर्म की महिमा" में लिखा है -

"प्रत्येक मुसीबत अभिशाप नहीं होती ,मुसीबतें हमें सीख देती हैं, और साहसी बनाती हैं।"(पेज क्रमांक 62)

ईश्वर ने हमें ज्ञान बुद्धि बल विवेक से संपन्न श्रेष्ठ प्राणी बनाया है। इसका सदुपयोग अच्छे कर्मों में करें। स्वयं इंजन बनकर समाज के लिए कामकाज करें। रेल के डिब्बे बनकर दूसरों के पीछे न भागते रहें। अमेरिका ,ब्रिटेन, रूस जैसे विकसित देशों के पीछे भागते हुए तो बहुत वक़्त बीत गया। अब स्वयं अपने पैरों पर चलकर आगे बढ़ने की कोशिश करें ।तो कुछ बात बने ।

"सफलता क्या है ? सफलता है असफलता के संघर्ष की कहानी।"

सच्चे मन से की हुई श्रम साधना सफलता की कुंजी है ।जीवन में सर्वांगीण विकास के लिए कर्तव्य निष्ठा बहुत जरूरी है। कर्म ही जीवन है और जीवन ही कर्म है ।इस विचार को लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। इससे व्यक्ति महान बनता है। फल की इच्छा किए बिना निरंतर कर्म करते हैं। हरिवंश राय बच्चन जी ने भी कहा है -

लगातार जो चलते रहते निश्चय ही मंजिल पाते हैं ।

जो बीच राह में बैठ जाते , वे बैठे ही रह जाते हैं ।।

जिन्होंने कर्म किया है वे जानते हैं कर्म का महत्व क्या है? काम ने उसे क्या से क्या बनाया है। अंत में आपसे मैं यही कहना चाहूँगा कि प्यारे देशवासियों कर्म करते रहो, जब तक मत रुको तब तक सफलता न मिले। यही संदेश भारत भूषण सन्त श्री नानक दास जी देश के हर नागरिक तक प्रेषित करना चाहते हैं।उनके इस कर्म के सन्देश से जरूर लोंगो की मानसिकता बदलेगी। ऐसी मैं आशा करता हूँ ।महाराज श्री के विचारों का हृदय की गहराई से समर्थन करते हुए देश की आवाम

से कहूँगा-

मंजिलों के आगे मंजिले कुछ और भी हैं।

ये और नहीं अभी आखिरी दौर ओर भी है।

मत उलझते रहना जीत के फूल और हार के कांटो में।

तुम्हें वास्ते जिंदगी के ,रास्तें अभी और भी हैं।

व्यवहार को संवेदनशील बनाए।

जीवन में संवेदनशील होना बहुत जरूरी है। यह सहृदय लोगो का आभूषण हैं। जो मानव जीवन को सरसता प्रदान करता है।

प्रयोगवादी कवि अज्ञेय ने कहा है जीवन में अनुभव और अनुभूति का होना बहुत जरूरी है।अनुभव से ज्यादा आवश्यकता अनुभूति की है।अनुभूति मानवीय संवेदना से जन्मती है। सम्वेदनाओं के बिना जीवन मुर्दे के समान होता है।

संत नानक दास जी का मैंने साक्षात्कार लिया जिसमें उन्होंने बताया कि बिना संवेदनाओं के मनुष्य प्राण रहित शरीर है। दूसरों के दुःख को देखकर यदि हृदय न पिघले तो वह मनुष्य नहीं कोई मानव के वेश में राक्षस है।ऐसे राक्षस समाज में आज दिखाई दे रहें हैं। जिनसे समाज को बचाने की महती आवश्यकता है।

संवेदना जीवन जीने का आधार है। सुख -दुःख की अनुभूति किए बगैर जीवन बिताना नामुमकिन है । जिस प्रकार पानी और ऑक्सीजन के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है ठीक उसी प्रकार संवेदन के बिना मानवीय जीवन को उत्कृष्ट नहीं बनाया जा सकता है । संवेदन हमें असभ्यता से सभ्यता की ओर ले जाता है ।वस्तुतः सुख-दुख, गर्मी-सर्दी, अपने-पराये आदि का अनुभव होना ही संवेदन है। जीवन के स्तर पर यदि हृदय का स्पंदन न हो,तो वह जीवन नीरस है।संवेदन दैविक ,दैहिक, प्राकृतिक भी हो सकता है । हम अपने ज्ञान-चक्षु से उसका अनुभव करते हैं ।जैसे अज्ञेय को हिरोशिमा की चट्टान देखकर हुआ।

चूंकि संवेदन शब्द वास्तविक या अवास्तविक, वेदना या शीतलता के अर्थ में आया है, जिसका शाब्दिक अर्थ जीवन के प्रत्येक पहलू से परिस्थितीमय होना है। चिंता, चिंतन और अवलोकन तीनों ही संवेदन के अंतर्गत आते हैं और अपनी स्थिति के अनुसार अनुभव कराते हैं । जब हम काव्य की रचना करते हैं या किसी गंभीर विषय पर चिंतन करते हैं तो हृदय और मस्तिष्क में संघर्ष होता है, परिणामस्वरूप वास्तविकता प्रस्फुटित होकर बाहर निकलती है तत्पश्चात हमें दुःख या सुख का बोध होता है । इसे हम कतई ख़ारिज नहीं कर सकते हैं । प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संवेदन विविध स्तर पर उजागर होता है ।यदि भाषा के स्तर पर देखें तो हम जन्मजात भाषा-क्षमता के साथ पैदा होते हैं ।भाषा हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भ में अर्जित की जाती है ।इससे सीखने की प्रवृत्ति बढ़ती है ।भाषा हमारे मानवीय व्यवहार में परिवर्तन तो लाती ही है,साथ ही हमारी अंत:क्रियाएं उजागर होती हैं ।

सामाजिक स्तर पर हम नित्य परंपराओं, रुढ़ियों,मान्यताओं से रुबरू होते हैं ।इससे अलग हटकर हम एक संवेदनहीन समाज की कल्पना नहीं कर सकते हैं ।हम अपने-पराये, समानता-असमानता का तो अनुभव करते ही हैं, इससे सामाजिक समरसता आती है,साथ ही 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा मजबूत होती है ।

पारिवारिक स्तर पर बच्चे, युवा, वृद्ध सभी एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील होते हैं ।एक-दूसरे के नजदीक आकर उन्हें दुःख-सुख तथा अपने होने का बोध कराते हैं ।मानवीय व्यवहार, रिश्ते-नाते के अधीन सभी एक-दूसरे से बंधे होते हैं ।उनके बीच एक नाजुक, संवेदनशील और भावनात्मक संबंध होता है ।सभी एक दूसरे के सुख-दुख को अनुभव करते हैं और निर्णय लेते हैं।परिवार में सभी महत्वपूर्ण मसलों पर अपनी-अपनी राय देते हैं ।

धार्मिक स्तर पर परोपकार, दान,दया-भाव,कर्म-काण्ड,हिंसा-अहिंसा, सदाचार आदि जैसे शब्द विकसित हुए हैं।ये वो शब्द हैं जो मन को सुख -शांति प्रदान करते हैं साथ ही कभी-कभी दुःख भी पहुंचाते हैं। कुल मिलाकर धार्मिक स्तर पर संवेदन मानवतावादी होने को बल प्रदान करता है,जो हमारे सद्भावना और सम्मान का

द्योतक है।इससे सहानुभूति और प्रेम विकसित होते हैं ।

प्राकृतिक स्तर पर प्रायः हम बादलों को उठते हुए देखते हैं, झम-झम बारिश की कर्णप्रिय आवाज से प्रफुल्लित होते हैं, लू के थपेडों से दुखी होते हैं, अपने चारों ओर हरे-भरे रंगीन पर्यावरण को देखकर थोड़ा ठिठक जाते हैं , झीलों और लता-लतिकाओं से समृद्ध स्थानों का अवलोकन करते हैं तो इन सभी से हमारा लगाव बढ़ता है, वे हमें अपनी और आकर्षित करते हैं ।जंगल तथा जंगली जानवरों के करीब जाते हैं तो उनसे प्रेम बढ़ता है।इन सभी का हमारे जीवन पर अनुकूल असर होता है ।उनके बारे में जानने की जिज्ञासा बढ़ती है ।वहीं दूसरी तरफ बाढ़, भूकंप, आकाशीय बिजली, गिरने जैसी प्राकृतिक आपदाओं से मन दुखित हो उठता है ।इनका हमारे जीवन पर प्रतिकूल असर होता है ।

इस प्रकार देखें तो संवेदन वह गाछ है जिसके द्वारा स्थैतिक और अस्थैतिक दोनों प्रकार के प्रभावों का अनुभव होता है ।संवेदन कटु सच्चाई को सामने रखकर जीवन से रुबरू कराता है ।अतः यह स्वतः ही जान पड़ता है कि जिंदगी के लिए संवेदना बहुत जरूरी है ।सन्त नानक दास जी के हृदय में ये मानवीय सम्वेदनाएं स्पष्ट दिखाई देती हैं।जो उनके कृत्यों और आचरण से समझ आती ह

संवेदनशीलता की मिशाल उतर कांशी की सुरंग दुर्घटना

मानवता की मिशाल कायम करने वाली मानवीय संवेदना की एक घटना अभी आप सबने उत्तरकाशी में देखी है।जिसमें हमारे जाबांज वीरों ने जान हथेली पर रखकर मानवता का परिचय प्रदान किया।

देश के लिए बड़ी राहत और खुशी की बात है कि उत्तरकाशी सुरंग हादसे में फंसे 41 बहादुर कर्मयोगियों को सत्रह दिन बाद भगवान शंकर की कृपा से हमारे वैज्ञानिकों ने जीवित बाहर निकाल लिया है। सभी मजदूर अंधी सुरंग में सत्रह दिन से फंसे थे।इन सब को सुरक्षित बाहर निकाल कर भारत ने अब तक का यह अनूठा रेस्क्यू ऑपरेशन सफलता पूर्वक पूरा करके एक नई मिशाल कायम की है।

देव भूमि उत्तराखंड और भारत के मस्तक हिमालय में सुरंग निर्माण कार्य के समय

मलबा ढह गया था और इकतालीस मजदूर अंधी सुरंग में फंस गए थे।इन कर्मवीरों की सलामती के लिए पूरा देश दुआएं कर रहा था। मेरे अलवर में भी सभी लोग 41 जिंदगियों को बचाने के लिए भजन कीर्तन कर प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के टॉपर रहे गौ सेवक भानू प्रताप शर्मा ने अपने गौ धाम में लगातार गौ माता से प्रार्थना व यज्ञ हवन जारी रखे। पूरा देश चिंतित रहा।प्रधान मंत्री नरेंद्र भाई मोदी इस हादसे के बाद लगातार मजदूरों को बचाने के प्रयासों और सहायता कार्य की मॉनिटरिंग स्वयं कर रहे थे।उत्तराखंड के सीएम श्री धामी सारे काम छोड़कर मजदूरों को बचाने की रणनीति में वहीं रहकर जुटे थे। अमेरिका, आस्ट्रेलिया से न केवल संसाधन मंगवाए बल्कि वहां के विशेषज्ञों को भी बुलवाया।भारत के योग्य वैज्ञानिकों ने रात दिन मेहनत कर आखिर सुरंग को भेद डाला पहाड़ का सीना चीरकर मानवीय प्रयासों ने अंधी सुरंग में फंसे मजदूरों को सत्रह दिन बाद जीवित बाहर निकाल लिया। मेरे देश के इन कर्म योगी बहादुर लोगों को मैं सेल्यूट करता हूँ और कर्म वीर भाइयों की हिम्मत और हौसले को भी गहन संकट से लड़ने का जज्बा मानता हूँ।

दोस्तों देव भूमि उत्तराखंड में धार्मिक स्थल से छेड़ छाड़ को किसी अनहोनी को न्यौता दिया जाना माना जाता है। सुरंग हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने सुरंग निर्माण के लिए वहाँ के लोक देवता क्षेत्रपाल बोथ नाथ जी के मंदिर से छेड़छाड़ की बात कहते हुए देवता के रूष्ट होने के कारण संकट पैदा होने के तर्क दिए। हादसे के बाद सुरंग के प्रवेश द्वार पर एक कोने में बाबा का पुनः मंदिर बना और देशी विदेशी वैज्ञानिक और बचाव में जुटी सुरक्षा एजेंसियों के अफसर कर्मचारी क्षेत्रपाल बोथ नाथ जी महाराज को सिर नवां कर ही आगे बढ़ते रहे। आज सुबह सुबह देश के विश्वसनीय और सबसे अधिक देखे जाने वाले न्यूज चैनल आज तक ने बड़ा जोरदार कवरेज किया। अजूबे की बात यह थी कि सुरंग के पास झर झर बह रहे झरने के साथ पहाड़ पर अचानक शंकर भगवान का रूप यानी तस्वीर उकर आई।प्रभु शिव शंकर की कृपा से हमारे सभी कर्मवीरों का सुरक्षित रेस्क्यू ऑपरेशन जिंदगी जिंदाबाद सफल हुआ है। राम राम करने से पहले दोस्तों इतना ही कहूंगा कि घन घोर काली रात की सहर अच्छी रही।अंत भला तो सब भला की हकीकत सबके सामने है।आने वाला समय सुरंग में जिंदा बचे इन कर्म योगी लोगों

और सभी भारतीय लोगों के लिए नई उम्मीद लेकर आया है,41 जिंदगियां जीत गई हैं,मौत हार गई है । सुरंग फिर आबाद हो गई है। सही मायने में ये दुआओं और जज्बे की जीत है। यह मानवता का श्रेष्ठ उदाहरण है।

मित्रों सुरंग की बात आते ही मुझे गाजा की सुरंगे भी याद आ रही हैं। वहां हमास के आतंकवादियों ने कब्जा कर रखा था बहुत सारे बच्चों, महिलाओं को राक्षसी प्रवृति के आतंकियों ने बंधक बनाकर वो किया जिसका जिक्र तक करना मानवता को शर्म सार करने जैसा है।निर्मम हत्याओं और बलात्कार की ज्यादा कहानी लिखना इस पवित्र कलम को शोभा नहीं देता।पर ऊपर वाला सबका न्याय करता है। भले ही वर्ण संकर नस्ल इस बात को माने या न माने पर सत्य सनातन इस बात को दृढ़ता पूर्वक मानता है कि संसार को चलाने वाले सर्व शक्ति मान ईश्वर के यहां देर तो हो सकती है पर अंधेर नहीं है। गाजा में आतंक की सुरंग बरबाद होती हम देख रहे हैं और देव भूमि की सुरंग में जिंदगियों को पुनः आबाद होते हमने देखा है। यारों गाजा का बाजा बज गया है मिमयाते आतंक ने वहां छह दिन की मोहलत मांगी है।मोहलत इसलिए और बढ़ रही है कि हमास मौत के डर से बंधकों को सिर झुका कर रिहा कर रहा है।इजरायल ने युद्ध विराम को मंजूरी देते हुए कहा है कि बंधकों की रिहाई के बाद भी आतंकी संगठन हमास का खात्मा जारी रहेगा। आतंक और उसकी मां को नेस्तनाबूत कर के ही दम लिया जाएगा। इजरायल प्रमुख नेत्यनाहू का सार्वजनिक बयान है कि कोई यह न समझे कि इन आतंकियों की मौत टल गई है।इसी बीच संसार के सबसे ताकतवर प्रधान मंत्री और लोकप्रिय नेता विश्व की महाशक्ति नरेंद्र मोदी का भी विश्व पटल पर बयान आया है।पीएम मोदी ने कहा कि संसार में अब आतंक स्वीकार्य नहीं होगा।हम शांति चाहते हैं और बंधकों की रिहाई पर भारत ने संतोष जताया है। संसार के नायक मोदी ने टीवी पर आकर आतंकियों और विश्व भर को संदेश दिया कि आतंक किसी भी कोने में हो उसे खत्म किया जाएगा। आतंक को खत्म कर जियो और जीने दो का सिद्धांत शांति पूर्वक सभी जगह क्यों नहीं लागू किया जा सकता है? मोदी ने कहा कि शांति चाहने वाले मित्र देश ऐसा चाहेंगे तो यह अवश्य संभव होगा।मोदी जी ने यह भी कहा है कि हमारी ओर से मानवीय मदद जारी रहनी चाहिए ।कहीं भी किसी

नागरिक की इस तरह आतंक से मौत निंदनीय है। इसे बर्दास्त नहीं किया जा सकता है ।भारत का स्पष्ट मत है कि आतंक का सफाया हो ,पर मानवता की हत्या न हो।यही मत महंत श्री नानक दास जी महाराज का है। वे भी अहिंसा के साथ जीने में विश्वास करते हैं।वे भी नहीं चाहते कि मानवता का हनन हो।इसका सन्देश उन्होंने जैन मुनि लोकेश जी सहित देश विदेश की कई महान हस्तियों के समक्ष कबीर कोहिनूर अवार्ड 2023 में इंटरनेशनल अम्बेडकर भवन नई दिल्ली में दिया था।27 फरवरी 2024 को तीसरा कबीर कोहिनूर समारोह जो 100 मानवता के पुजारियों को प्रदान किया गया । जिससे देश मे मानवता की ज्योति अविरल जलती रहे।वे आतंकवाद जैसी घृणित सोच वाले लोगो को स्पष्ट शब्दों में ललकारते हुए कहते हैं - हम सब कुछ सहन कर सकते हैं लेकिन आतंक नहीं।हम मानव हैं तो केवल मानव बनकर जीए इसी में हमारी भलाई है।

सच्चे सुख की तलाश करें।

इस संसार में सुखी होना कौन नहीं चाहता ? हर कोई चाहता है कि वह सुखी ,प्रसन्न और स्वस्थ रहे ।लेकिन सच्चा सुख क्या है ?क्या धन ,दौलत ,वैभव ,नौकरी, गाड़ी ,घोड़े, बंगले का होना सच्चा सुख है। नहीं ,सच्चा सुख संतोष का धन है ।जिसे मनुष्य ज्ञान और समझदारी से प्राप्त करता है ।वरन तो संसार में हर प्राणी किसी ने किसी दुःख से घायल है। कहते हैं -

कोई तन दुःखी,

कोई मन दुःखी,

कोई धन से रहा उदास ।

थोड़े-थोड़े सभी दुःखी,

सुखी राम के दास ।

लेकिन आज का मनुष्य अपने दुख से नहीं दूसरों के सुख से ज्यादा दुःखी दिखाई देता है।

एक बार एक गरीब आदमी था ।उसके पास खाने को दाने तक नहीं थे ।रोज भीख मांग कर अपना गुजारा करता था ।उसके पास एक दिन एक फकीर आया ।उसने एक कपड़ा देकर उसे कहा कि यह कपड़ा आपको मालामाल कर देगा। जाते-जाते उसने यह भी कहा आप इस कपड़े को रोज सुबह बिछाकर इससे जो माँगोगे आपको यह वह सब देगा ।लेकिन एक शर्त ओर है। आपके पड़ोसी के घर आपसे दुगना सामान आएगा। यह कहकर वह फकीर वहां से चला गया ।अगले दिन उसआदमी ने कपड़ा बिछाया और कहा -हे! फकीर के कपड़े एक ऐसा कमाल कर दें। मेरा घर एक सुंदर सा महल बन जाए। आंखें खुली तो महल बनकर तैयार हो गया ।पड़ोसी के यहां जाकर देखा तो दो महल खड़े थे ।उसे यह देखकर अपने पड़ोसी से ईर्ष्या और जलन होने लगी। वह उसे मन ही मन में सबक सिखाने की सोचने लगा ।अगले दिन कपड़े को बिछाकर उसने कहा कि फकीर के कपड़े मेरे घर के सामने एक खाई खुद जाए ।देखा तो बड़ी खाई घर के सामने खुदी थी। लेकिन पड़ोसी के घर के सामने दो खाइयाँ बनी थी। अगले ही दिन वह फिर कपड़ा बिछाकर मांगने लगा कि मेरी एक आंख फूट जाए ।देखा तो एक आंख फूट गई ।लेकिन पड़ोसी की तो दोनों ही आंखें फूट गई। स्वयं तो गिरने से बच गया लेकिन पड़ोसी खाई में गिर गया। इस कारण उसका एक पैर टूट गया ।इसे देखकर वह ईर्ष्यालु व्यक्ति बड़ा खुश हुआ। हंसने लगा ।इस तरह का व्यवहार आज समाज में हो रहा है। मैं समझता हूं इस तरह की हंसी मानव की हंसी नहीं हो सकती ।यह दानवी लोगों की हंसी है ।ऐसे लोग सच्चे अर्थों में मानवता के नाम पर कलंक है।

संतोष संसार का सबसे बड़ा धन है। अपनी आवश्यकताओं को कुछ कम करके हम सुखी हो सकते हैं ।इसके लिए हमें संयम बरतने की आवश्यकता है। दूसरों के सुख को देखकर जले नहीं। जितना अपने पास मौजूद है , उससे संतुष्ट रहें। ऐसी संयमित सकारात्मक सोच विकसित करके ही हम सात्विक और परम सुख को प्राप्त कर सकते हैं। वैभव वाले सुख के पीछे भागना तो एक प्रकार की मृगतृष्णा ही है ।जैसे काले रंग का हिरण जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है। वह पानी की तलाश में रेगिस्तान में जगह-जगह भटकता है ।धूप में चमकती हुई रेत को पानी समझकर वह वहां जाता है। लेकिन वहां पहुंचने पर वह रेत ही पाता है ।फिर कहीं

दूसरी जगह चमकने वाली रेत को पानी समझा लेता है ।फिर वहां भी दौड़ कर जाता है ।फिर भी उसे वहां रेत दिखाई देती है ।ऐसे वह हिरण जीवन भर प्यासा भटकता रहता है ।पानी की तलाश में लेकिन कभी उसकी प्यास नहीं बुझती। ठीक इसी प्रकार से मनुष्य भी सुखी होने के लिए प्रयास करता है । मनुष्य सुख के सपने तो बहुत देखता है। लेकिन वह उन्हें पाने का रास्ता गलत चुन लेता है ।इस कारण उसका स्वप्न अधूरा ही रह जाता है।जय शंकर प्रसाद जी ने कहा है-

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते आते , मुस्कयाकर जो भाग गया।

सुख का संबंध आत्मा से भी है ।धन, संपदा ,पत्नी ,बच्चे ,परिवार, भवन यदि यही सच्चा सुख है तो यह स्वयं के साथ एक धोखा है।जीवन की सबसे बड़ी भूल है। यह सब तो एक दिन नष्ट हो जाएगा ।क्या फिर हमारे मन में दुःख नहीं होगा ?और यदि दुःखी होना पड़ रहा है तो यह वास्तविक सुख कहां हुआ ?वास्तविक सुख मिलता है ,आत्मिक ज्ञान और ईश्वरीय धन्यवाद से ।इसलिए जितना भी हमारे पास है, हम उसे खुश रहें ।ईश्वर का धन्यवाद करते रहें ।संसार में ऐसे भी तो लोग बहुत हैं जिनके पास हमारे बराबर भी नहीं है। और ऐसे भी लोग बहुत हैं जिनके पास हमसे ज्यादा है। निराश होने की आवश्यकता नहीं है ।स्वस्थ रहें प्रसन्न रहें, अपने जीवन को सकारात्मक रचनात्मक सोच के साथ आगे बढ़ाते रहे। इसी से परम सुख की प्राप्ति होगी। इंद्रियों के दास नहीं स्वामी बने। इंद्रियों पर आत्मा रूपी हथौड़े का दबाव रखें ।आत्मा ईश्वर का अभिन्न अंग है। उसे समझने का प्रयास करें ।सब मंगल होगा।खुशी और सुख पैसे का मोहताज नहीं है।

सुखी होने के लिए अपने जीवन में आत्मविश्वास, धैर्य,कर्म भावना, पुरुषार्थ, स्वावलंबन ,एकाग्रता और आत्मबल जैसे गुणों का विकास करें।

कर्मवीर बन कर जीए ।कर्म से आपके जीवन में सुख का संचार होगा। गुरुत्वाकर्षण शक्ति के खोजकर्ता न्यूटन ने कहा था- कि मैंने अपने जीवन में कर्म किया है ।कर्म के अलावा मैंने और कुछ किया ही नहीं है।

सुख क्या है ? सुख है, मन में दीर्घगामी स्वस्ति की अनुभूति होना ।शांति व संतुष्टि का पवित्र भाव भी सुख है ।मनुष्य सदैव इसी सुख को पाने की तलाश में रहता है ।एक बार उसे चखने पर हमेशा के लिए चाहने लगता है। इसलिए सुख का संबंध मन की सात्विक अनुभूति से है ।जिसे हम अंदर ही अंदर महसूस करते हैं। जैसे कोई गूंगा व्यक्ति गुड का स्वाद तो महसूस करता है, लेकिन उसे शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता ।ठीक ऐसे ही सुख केवल महसूस किया जा सकता है। सामान्यतः इंद्रिय जनित सुख को हम सुख समझ रहे हैं। सच्चे अर्थों में वह सुख नहीं है। सुख तो भौतिक और सांसारिकता से दूर की वस्तु है ।सांसारिक सुख के कारण अंततः दुख के कारण सिद्ध होते हैं। जैसे संपत्ति पाकर हम सुख की अनुभूति करते हैं। लेकिन वही संपत्ति भाई बंटवारे में गृह क्लेश और झगड़े का कारण बन जाती है। पुत्र का होना सुख का अनुभव है ।सुखद एहसास है ।लेकिन यदि वही पुत्र को कुपुत्र निकल जाए तो दुख का कारण भी बन जाता है ।इस तरह एक घटना एक परिस्थिति में सुख का एहसास दिलाती है तो वहीं घटना दूसरी स्थिति में दुःख का कारण बन जाती है।

ऐसे ही परम सुख की प्रेरणा हमें नानक दास जी के जीवन से मिलती है ।यही कारण है कि मैं उनका पक्ष आपके सामने रख रहा हूं। हम भी उनके सिद्धांतों को अपनाकर जीवन में अमर सुख की प्राप्ति कर सकते हैं।

"श्रेष्ठ दुनिया के निर्माण में सन्तों की भूमिका"

संत शब्द सादगी,पवित्रता, आध्यात्मिकता का अवबोध कराने वाला शब्द है। जो सांसारिक माया ,मोह,अहंकार को त्याग कर सत्य के आध्यात्मिक मार्ग पर चल पड़े वही सच्चा सन्त है। सच्चे सन्त जाति,धर्म,मजहब,वर्ण,सम्प्रदाय आदि से परे होते हैं।वे ईश्वर की भक्ती करते हुए लोगो के कल्याण के लिए निष्काम कर्म करते हैं।वे अपनी दूरदर्शिता से समाज में होने वाली विसंगतियों का अंदाजा पहले ही लगा लेते हैं। सामाजिक बुराइयों ,अंधविश्वासों ,व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए वे हमेशा आगे रहे हैं । संतो ने अपने ज्ञान ,विचार व सद्कर्मों से एक माली की भाँति इस जग को सींचकर पुष्पित, पल्लवित किया है। सन्तों के बारे कहा भी

गया है-

"आग लगी आकाश में ,झड़ झड़ गिरे अँगार।

सन्त न होते जगत में ,जल मरता संसार।।"

परोपकारी,करुणावत्सल सन्त ही समय समय पर संसार में अवतरित होकर अज्ञान की निद्रा में सोए संसार को जगाने का कार्य करते हैं।समाज को भगवद्भक्ति व निष्काम कर्म का रास्ता दिखाकर छुआछूत ,भेदभाव,धार्मिक असहिष्णुता ,राग-द्वेष जैसी बुराइयों को दूर कर मानव सेवा के लिए प्रेरित करते हैं। जब-जब भी समाज में सामाजिक बुराइयों का आतंक बढ़ा है । तब- तब संत महात्माओं ने आकर समाज की कमान अपने हाथ में संभाली है। उन्हें दूर कर के समाज को उनके आतंक से भय मुक्त किया है। संतो ने समाज हित के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन में अनेक कष्ट उठाए हैं। संकटों के आने के बावजूद भी उन्होंने अपना धैर्य व साहस कभी नहीं त्यागा। संत हमेशा समाज के उपकारक ,शुभचिंतक व श्रेष्ठ मार्गदर्शक रहे हैं।

"खोद खाद धरती सहे , काट कूट वनराइ।

कुटिल वचन साधु सहे ,दूजे सहा न जाइ।।"

दुनिया के प्रसिद्ध संत और उनका समाज निर्माण में योगदान

आदिगुरु शंकराचार्य की समाज निर्माण में भूमिका

हर युग में एक सर्वगुरु संत अवतरित होने की परंपरा रही है।788 ई में जगद्गुरु शंकराचार्य जी केरल के कालड़ी गाँव में जन्में थे । उनके पिता का नाम श्री शिव गुरु व माता जी का नाम सुभद्रा था।वे भगवान शंकर के अवतार के नाम से जाने गए।उनमें ईश्वर के प्रति प्रेम ,समर्पण तथा समाज के प्रति निष्ठा का भाव बचपन से ही था। उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया। उनका अधिकांश समय उत्तर भारत में व्यतीत हुआ था।

विश्व में जहाँ भी ऐसे सन्तों का अवतरण हुआ ।वहाँ उन्होंने भारतीय सनातन ज्ञान

का प्रचार -प्रसार कर समाज को आईना दिखाया है।आदि गुरु शंकराचार्य व उनके शिष्यों ने अद्वैतवाद का सिद्धान्त देते हुए संसार को नई राह दिखाई।उन्होंने पूरे भारत के चारो कोनो में चार मठो की स्थापना कर संसार को भक्ति मार्ग पर चलने का संदेश दिया। आज भी उनके शिष्य परंपरा के शिष्य उन चारों मठों पर पीठासीन है । उनके शिष्य शंकराचार्य कहलाते हैं ।उनके विचार आत्मा व परमात्मा की एक रूपता को बल देने वाले हैं। शंकराचार्य को सनातन धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने का श्रेय जाता है। वे सच्चे अर्थों में सनातन धर्म के रक्षक के तौर पर उभर कर सामने आए। उन्होंने सगुण और निर्गुण दोनों ही रूपों को स्वीकार किया। ताकि समाज में समरसता आपसी सौहार्द व एकता का भाव पैदा हो। लोगों के मन में हिंदू धर्म के प्रति व उनके देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा स्थापित करने के लिए मूर्ति पूजा का औचित्य सिद्ध किया। शंकराचार्य जी का सबसे बड़ा योगदान चार मठों की स्थापना करना था ,जो आज भी धर्म के अजेय स्तंभ है।

गोविंदापादाचार्य के शिष्य शंकराचार्य ने दशनामी सम्प्रदाय की स्थापना करके जातिवाद को मिटाने का प्रयास किया।उन्होंने देश के सभी सन्तों को इकट्ठा करके अखाड़ों की स्थापना की।ये सभी कार्य देश की एकता व अखंडता को बनाए रखने के लिए थे। उनके विचार एक मनुष्य या एक देश के लिए नहीं संपूर्ण मानव मात्र के कल्याण के लिए थे। इसीलिए आज शंकराचार्य के विचारों को वैश्विक इतिहास में बड़े ही सम्मान के साथ पढ़ा जाता है और ग्रहण किया जाता है।

कबीर दास जी की समाज निर्माण में भूमिका

निर्गुण भक्ति काव्य धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर दास जी का जन्म सन 1398 में काशी में हुआ। वे एक उच्च कोटि के समाज सुधारक,मार्गदर्शक ,ब्रह्मज्ञानी संत और एक श्रेष्ठ कवि थे। उन्होंने पहले पूरे भारत का भ्रमण किया और जाना कि भारत के लोगों की आम समस्याएं क्या है? उस समय समाज में छुआछूत, भेदभाव, पर्दा प्रथा ,मृत्यु भोज, पुनर्विवाह का निषेध, दास दासी प्रथा,जाति प्रथा , अनेक सामाजिक कुरीतियां व्याप्त थी। इन सभी बुराइयों को दूर करके वे एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे। इसके

लिए उन्होंने गांव-गांव जाकर सामाजिक चेतना आंदोलन चलाएं, सत्संग किया लोगों को निष्काम कर्म करते हुए ईश्वर भक्ति करने का संदेश दिया। उन्होंने सभी प्रकार के भेदभावों का अंत करते हुए कहा -

जाति- पांति पूछे नहीं कोई।

हरि भजे सो हरि का होई।।

कबीर दास जी के विचार और उनके सिद्धांत सारे संसार को वसुधैव कुटुंबकम की भावना से जोड़ना चाहते थे। वे संसार के मानव मात्र को एक ईश्वर का अंश मानते थे। उनका मानना था संसार के प्रत्येक मनुष्य में परमात्मा ही आत्मा रूप में मौजूद । संसार को एकता के सूत्र में बांधने के लिए व बुराई रहित समाज के लिए कबीर दास जी ने निम्नलिखित बातों पर बल दिया।

एकेश्वरवाद पर बल- कबीर दास जी एक ईश्वर को मानते थे ।उन्होंने संसार के लोगों से कहा कि ईश्वर एक है। वह सर्व व्यापक व सर्वशक्तिमान है ।हमें ईश्वर के नामों के चक्कर में न पड़कर उसके मूल को पहचानना चाहिए ।उसी की भक्ति करनी चाहिए ।उनका यह सिद्धांत सभी प्रकार के भेदभावो का अंत करने के लिए, मानवता को एकता के सूत्र में बांधने के लिए काफी था।

"हम तो एक एक करि जाना

दोई कहे तिन्ही को दोजख नाहिन हरि पहचाना।"

कबीर ने संसार को एक ईश्वर के नाम पर एकता के सूत्र में बांधकर मानव मात्र के कल्याण का संदेश दिया। हमें भी उनके विचारों पर चलकर सारे संसार को एक मानते हुए मानवता का परिचय देना चाहिए।

हिंसा का विरोध- कबीरदास जी अहिंसा वादी थे ।उन्होंने हिंसा का विरोध करते हुए तीन प्रकार की हिंसा बताई। मन, वचन और कर्म से किसी जीव को सताना ही हिंसा है। वे समाज में लोगों को हिंसा न करने का संदेश देते थे। उनका संदेश किसी मजहब विशेष के लोगों के प्रति नहीं संसार के सभी लोगों के लिए एक था।

"बकरी पाती खात है ,जाकी काढ़ि खाल।

जो जन बकरी खात है, तिनको कौन हवाल।।

आत्मा सो परमात्मा के सिद्धांत पर बल- कबीर दास ने आत्मा परमात्मा को एक ही माना था । वे कहते थे जिस प्रकार समुद्र से बिछड़ कर बून्द अलग हो जाती है लेकिन फिर वही बूंद समुद्र में मिलने पर समुद्र बन जाती है ।ऐसे ही आत्मा परमात्मा का बिछड़ा हुआ अंश है ।जब वह वापस परमात्मा में जाकर विलीन होती है तो आत्मा सो परमात्मा बन जाती है। जिसे मोक्ष कहा जाता है। यह सिद्धांत भी समाज में एकता की भावना पैदा करता है। उन्होंने कहा है-

"जल में कुंभ कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी।

फूटा कुम्भ जल जलहि समाना, यह तथ्य कथौ ज्ञानी।।"

सामाजिक रुढियों, कुरीतियों का विरोध- जिस बात को लोग कहने की तो क्या ?सोचने से भी डरते हैं। उन सभी बातों का विरोध कबीरदास ने अपने खुले मुख से किया। कबीर दास जी संत और कवि बाद में पहले सच्चे अर्थों में एक समाज सुधारक थे। समाज में व्याप्त बुराइयों को अपने प्रयासों से दूर करना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने अपने विचारों, भजनों व सत्संगों के माध्यम से समाज में जनचेतना पैदा की। वे स्वयं विधवा विवाह के समर्थक थे ।ताकि समाज की विधवा नारी को सम्मान मिल सके। धार्मिक पाखंड का विरोध करते हुए स्वयं कबीर ने कहा था कि ईश्वर को ढूंढने के लिए न मंदिर जाने की आवश्यकता है । न मस्जिद जाने की आवश्यकता है । वह तो हर मनुष्य के अंदर ऐसे समाया हुआ है। जैसे फूलों में रंग। हमारे तन के कपड़े शरीर से दूर हो सकते हैं। लेकिन परमात्मा कहीं इससे भी अधिक नजदीक है ।ऐसा संदेश उन्होंने मानव मात्र को दिया। कबीर ने जहां जहां समाज में पाखण्डों का बोलबाला देखा।वही उनकी निंदा की । चाहे वह हिंदू , मुस्लिम , जैन, बौद्ध व शाक्य कोई भी क्यों न हों ? कबीर दास जी के विचार जितने मध्यकाल में प्रासंगिक थे। उतनी ही प्रासंगिकता उनकी आज भी बनी हुई है।

तुलसी दास जी के साहित्य में मानवता

तुलसी दास जी समन्वय के कवि माने जाते हैं।मानवता वाद से उनका गहरा सम्बन्ध रहा है। वे लोक नायक वैसे ही नहीं कहलाते ?उनकी छवि जनमानस पर छाई हुई थी ।क्योंकि वे मानवता के पक्षधर थे।

भारतीय जनता के हृदयसम्राट गोस्वामी तुलसीदास ने समकालीन परिस्थितियों में व्याप्त घोर दरिद्रता को ही रावण मानते हुए उसके संहार को अपरिहार्य माना है । वे कहते हैं " दारिद दशानन दबाई दूनी दीनबंधु " - अर्थात दरिद्रता का रावण पूरी दुनिया को दबाये हुए है जिसके चंगुल से हमें जनता को मुक्त करना होगा ।

बुन्देली धरती के जनजीवन में व्याप्त दारिद्रय को देखकर कदाचित वनवासी राम ने 14 वर्ष के वनवासी काल का अधिकांश समय चित्रकूट में ही रमे रहकर व्यतीत किया और दरिद्रता के रावण का समूल नाश करने हेतु बुन्देलखण्ड की धरती पर ही आगत रामराज्य के सपने को हकीकत में बदलने का आधार दिया ।

रावण संहार के विजयोत्सव पर जब समस्त जनता भगवान राम का जय जयकार कर उठी तो तुलसीदास जी कहते हैं कि -" तुमरे बल में -रावण मारयो " अर्थात अयोध्या से लेकर लंका तक फैले उनके संघर्ष में लोग जुड़ते रहे और कारवां जीत की ओर अग्रसर होता गया । लोकनायक तुलसीदास जी भगवान राम के इस प्रण को दोहराते हैं कि - " निश्चरहीन करोंमहि भुज उठाये प्रणकीन्ह " क्योंकि जब तक मानवद्रोही शत्रुओं का खात्मा नहीं होगा , तब तक समता और न्याय आधारित रामराज्य की स्थापना नहीं होगी । इसलिए त्रेता की रामकथा के सहारे हमें आज की समस्याओं का समाधान करना होगा । तुलसीदास जी ने साफ -साफ आगाह किया कि जिस राजा या शासक के राज्य में प्रजा दुखी रहेगी , उसकी दुर्गति रावण और कौरवों के खानदान की तरह ही होगी । जो

राज करत बिनु काज ही , करें कुचालि - कुसाज

तुलसी ते दसकन्ध ज्यों , जइहें सहित समाज "

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी

सो नृप अवस नरक अधिकारी

तुलसी की भांति हमें अडिग विश्वास रखना होगा कि जनद्रोही तत्वों का अंत अपने आप नहीं जनता के संगठित पुरुषार्थ से ही होगा ।

तुलसी की रामकथा के इस मर्म को बुन्देलखण्ड की सामान्य जनता ने भलीभांति हृदयंगम कर लिया है इसलिए बड़े सटीक ढंग से यहां गाये जाने वाले लोकगीतों में कहा गया है -

"बन जाने हतो ,रावण मारने हतो ,

रामराज लाने हतो ,कैकेई खों वृथां दोष लगा दये ? "

गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस में अयोध्या काण्ड में जो वेदना का सागर लहराता हुआ दिखाई दे रहा है , सामंतीय समाज में उपेक्षितों की वास्तविक पीड़ा से ही उत्पन्न हुआ है। ध्यान देने की बात है कि तुलसी की भक्ति वर्ण, जाति, धर्म आदि के कारण किसी को बहिष्कृत और उपेक्षित नहीं करती। राम जब चित्रकूट पहुंचते हैं , कोल-किरातों से बीस पंक्तियों में राम से उनकी भेंट का वर्णन करते हुए, तुलसी यह टिप्पणी देते हैं -

"रामहि केवल प्रेम प्यारा,

जानि लेउ जो जाननि हारा "

केवट और निषादराज के प्रसंग में नीचे समझे जाने वाले लोग राम को प्यार करके भरत और लक्ष्मण का दर्जा पा जाते हैं, तब सब लोग उसका इस तरह आदर करते हैं मानो लक्ष्मण आ गए हों -

निरखि निषाद नगर नर-नारी,

भए सुखी जनु लखन निहारी

विदा करते निषादराज से स्वयं राम कहते हैं-

तुम मम सखा भरत सम भ्राता ।

रहे हु सदा पुर आवत जाता ।।

तुलसी ने समता और न्याय आधारित रामराज्य लाने के लिए सामंतीय युग में भक्ति (प्रेम) के आधार पर जो किया वही कार्य आज के लोकतांत्रिक युग में पुनर्जागरण के आधार पर जनता कर रही है।

तुलसीदास जानते थे कि " नहिं दरिद्र सम दुख जगमाहीं -गरीबी को उन्होंने उन्होंने स्वयं भोगा था। वे कवितावली में लिखते हैं-" आग बड़वाग्नि से बड़ी है , पेट आग की "

मानवतावादी प्रेम में डूबी तुलसी की भक्ति, शक्ति का ऐसा अमोघ अस्त्र है , जो संघर्षरत जनसामान्य को हताश-निराश नहीं होने देगी । केवट दुखी और उत्पीड़ित कोटि कोटि मानवों के सच्चे प्रतिनिधि हैं , जो निर्बल के बल आशाओं के केन्द्र भगवान राम के प्रति सब ओर से निराश होकर आशा भरी दृष्टि से निहार रहा है क्योंकि वह भलीभांति जानता है कि न्याय और अन्याय के संघर्ष में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम कभी तटस्थ नहीं रहते , हमेशा पतित पावन कमजोरों के पक्ष में खड़े हो जाते हैं ।

महात्मा तुलसीदास अपने युग के सबसे बड़े लोकनायक थे । उनकी भक्ति समाज से सन्न्यास लेते हुए भी समाज सापेक्ष थी । उन्होंने अपने प्रख्यात ग्रन्थ कवितावली में रामचरितमानस के अत्यन्त मार्मिक प्रसंगों को कवित्त शैली में प्रस्तुत किया है ।

गोस्वामी तुलसीदास के युग में आज की कोरोना महामारी से भी भयंकर दारुणदशा का चित्रण करते हुए दीन-हीन जनों के छिनते रोजगार और असमय में जीवन से हाथ धोने जैसी त्रासद स्थितियों से रूबरू किया है यथा -

एक तौ कराल कलिकाल सूल-मूल, तामें

कोढ़में की खाजु-सी सनीचरी है मीनकी ।

बेद-धर्म दूरि गए , भूमि चोर भूप भए ,

साधु सीद्यमान जानि रीति पाप पीनकी।।

दूबरेको दूसरो न द्वार , राम दयाधाम !

रावरीऐ गति बल-बिभव बिहीन की ।

लागैगी पै लाज बिराजमान बिरुदहि ,

महाराज ! आजु जौं न देत दादि दीनकी ।।

अर्थात - एक तो सारे दुखों का ऐसा भयंकर दुकाल और उसमें भी कोढ़ में खाज के समान मीन राशि पर शनिश्चर की स्थिति । वे कहते हैं कि वेद धर्म लुप्त हो गये हैं , लुटेरे ही राजा महाराजा बन गये हैं तथा बढ़ते हुए पाप की गति देखकर साधु समाज दुःखी है । वे दीनानाथ से विनय करते हैं कि हे दया के धाम भगवान राम कमजोर या दुर्बल जनों के लिए आपको छोड़ कोई दूसरा द्वार नहीं है । बल वैभवशून्य जनता के लिए सिर्फ एकमात्र आपकी ही गति है ।

उक्तानुसार महामारी से उत्पन्न दारुणदशा और उसके निदान हेतु जननायक गोस्वामी तुलसीदास जी के गीतों के मार्मिक स्थल क्रमश: प्रस्तुत आगे भी किए जायेंगे जिनमें रोग को भगाने और जन-जन को जगाने हेतु सहृदय कवि ने अपनी मार्मिक अपील की है ।

16 वीं शताब्दी में तुलसीदास जी के जमाने में देश में एक ओर घातक रोग का विशेष रूप से भगवान शंकर की नगरी वाराणसी में भयंकर प्रकोप चल रहा था और दूसरी ओर उसका भयंकर परिणाम तुलसीदास जी द्वारा रचित कवितावली में वर्णित उनके शब्दों में हालात इतने बद से बदतर हो रहे थे कि -

खेती न किसान को , भिखारी को न भीख , बलि,

बनिक को बनिज , न चाकर को चाकरी ।।

जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,

कहैं एक एकन सों ' कहाँ जाई , का करी ?

वेदहूं पुरान कही , लोकहूँ बिलोकिअत ,

साँवरे सबै पै , राम ! रावरें कृपा करी ।

दारिद-दसानन दबाई दुनी , दीनबंधु !

दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ।। कवितावली

अर्थात मानवतावाद के सबसे बड़े प्रवक्ता तुलसीदासजी का कहना है कि किसान खेती से हाथ धो बैठे हैं , भिखारियों को भीख तक नसीब नहीं है , दुकानदारी बिल्कुल ठप्प है , नौकर भी अपनी नौकरी से हाथ धो बैठे हैं । जीविका के संकट का समाधान दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा है । निरूपाय और असहाय जनता की आँखों के आगे इतना अँधेरा छा गया है कि " कहाँ जायें ? और क्या करें ? " वेद-पुराण शुरु से ही कहते आ रहे हैं कि आपके अलावा संकट को कोई दूर नहीं कर सकता ।

क्योंकि आपने सदैव जनता को परेशानियों से मुक्त किया है । आपको फिर दरिद्रता के दशानन जिसने पूरी दुनिया को जकड़ रखा है , हे निर्बल के बल राम जनता के हाहाकार को सुनो और उसका संहार करके जनविजय का मार्ग प्रशस्त करो ।

लगभग आज से 450 वर्ष पहले ऐसी पीड़ा और अपने दिल की गहराईयों से बाबा तुलसी ने जो आत्मनिवेदन कौशलाधीश प्रभु श्रीराम से किया है ,उस घोर दारिद्र को स्वयं कवि ने अपने बचपन से भोगा था । संसार से व्यथित होकर उन्होंने बिल्कुल सही कहा कि विशाल समुद्र की तलहटी में जो आग छिपी है वह उतनी बड़ी नहीं है जितनी कि जन-जन की पेट की आग है । वे सर्वसमर्थ राम से अपनी आँखों में आँसू भरकर कहते हैं - " तुम जनि मन मैलो करो , लोचन जनि फेरो " यानि हे प्रभु अगर तुम्हीं मन मैला करके जनता से आँख फेर लोगे , तो उसे डूबने से कौन बचायेगा । राम उनके लिए आशाओं का केन्द्र बन गये । अपमान और लांछन का मुकाबला करने के लिए एक अस्त्र बन गए । जब वे लोगों को दूसरों के सामने हाथ फैलाते हुए देखते हैं तो वे मना कर देते हैं और वे ललकारते हुए कहते

हैं - " जिन डोलहि लोलुप कूकर , ज्यों , तुलसी भजु कोसल राजहिं रे " अर्थात जन -जन को संगठित करके अपने युग के महानायक जैसे भगवान राम ने समता और न्याय आधारित ऐसे रामराज्य की स्थापना की थी कि जहाँ न तो किसी को रोग होता था और न ही किसी की असमय मृत्यु होती थी -

" अल्पमृत्यु नहि कवनिउँ पीरा।

सब सुन्दर सब विरुज सरीरा ।।

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ।

नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ।

वस्तुत: तुलसीदास जी वैश्विक विभूति थे । उनके विचार , वर्णित मनोदशाओं का एकसा अनुभव संसार भर के सभी प्रेमी समान रूप से करते हैं । रूसी भाषा के महान कवि और दार्शनिक वारन्निकोव ने तुलसीकृत रामायण और विनयपत्रिका का रूसी भाषा में पद्यानुवाद किया है । अंतिम सांस लेने से पूर्व उन्होंने अपने पुत्र से कहा था - " मेरी समाधि पर बालकाण्ड का यह दोहा जरूर अंकित करा देना -

भलौ भलाई पै लहै , लहै , निचाई नीचु ।

सुधा सराहहि अमरता , गरल सराहहि मीचू ।।

जिसका अभिप्राय स्पष्ट है कि वास्तव में संसार में दो ही जातियां हैं , एक बहुसंख्यक अच्छों की दूसरी मुट्ठी भर बुरों की । अमृत और विष की तरह उनकी पहचान अमरता और मरणता के अपरिहार्य परिणाम में सन्निहित है । इस तरह गोस्वामी तुलसी दास जी के साहित्य में मानवता कूट कूट कर भरी हुई है।कुछ इसी तरह की मानवता नानक दास जी के कृत्यों में परिलक्षित होती है।

भारत की राष्ट्रीय एकता में जैन सन्तों का योगदान -

भारत की संस्कृति की नैतिकता, परंपरा, एकता का श्रेय हमारे गुरु ,संतो तथा मुनियों को भी जाता है। क्योंकि संतों का ही भारत को एकजुट करने में बड़ा योगदान है। हमारे भारतवासी वर्तमान में भी संतों को भगवान का रूप मानते हैं

।क्योंकि संत ही है, जो एक व्यक्ति से लेकर संपूर्ण समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करते हैं ।जैसे हिंदू धर्म में तुलसीदास, गुरु वशिष्ठ, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, संत तुकाराम आदि संत हैं ।जिन्होंने भारत के क्षेत्रों का उत्थान किया, प्रत्येक समाज के निर्माण में अपना योगदान दिया ।आपने इन संतो के बारे में तो बहुत सुना है लेकिन जैन संतो के बारे में मैं आपको बताता हूँ।

जैन धर्म के संतों का योगदान - जैन धर्म में जैनियों का मूल मंत्र है अहिंसा परमो धर्म: अहिंसा ही परम धर्म है। जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर स्वामी है ।वे 24 वे तीर्थंकर है ।जैन धर्म का कहना है चोरी नहीं करना, झूठ नहीं बोलना, मन ,वचन व कर्म को शुद्ध करना ,इंद्रियों को वश में रखना तथा एकता में रहना। जीवन का लक्ष्य मोक्ष को मानते हैं। जैन धर्म के साधु संत भी समाज को एकजुट करते हैं ।वह भी समाज की उन्नति के लिए हमेशा अग्रसर रहते हैं ।जैसे परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर लोकेश मुनि जी महाराज साहब ,तरुण सागर जी ,विद्यासागर जी, राजेश मुनि जी, महाश्रमणजी, रत्न संघ के आचार्य श्री हस्तीमल जी ,हीराचंद्र महाराज साहब आदि भी कई साधु संत है ।ये संत हिंसा व भ्रष्टाचार को दूर करने वाले हैं ।ये संत निर्मल, पवित्र, कषाएं मुक्त, क्रोध ,मान ,माया,लोभ , राग ,द्वेष आदि से मुक्त है। यह किसी भी जाति व धर्म में मतभेद नहीं करते ,यह संत समभाव की साधना में लीन रहने वाले हैं।।। इन संतों का भी यह कहना है कि हमारे समाज में एकता रहे । यह संपूर्ण विश्व को एकता के बंधन सूत्र में बांधना चाहते हैं।

आचार्य प्रवर लोकेश मुनि महाराज - ये महाराज विश्व शांति दूत के नाम से विख्यात है। देश विदेशों तक अपनी बात पहुंचा रहे हैं।इनका कहना है कि अहिंसा ,शांति ,सद्भाव, समानता व भाईचारे को आगे रखें। इनका मानना है कि धर्म ने ही समाज को एक साथ रहना सिखाया है। अंतर धार्मिक संवाद के क्षेत्र में मिसाल कायम की है। विश्व जनमानस के लिए आचार्य प्रवर एक आशा की किरण है जो विश्व के आतंकवाद, हिंसा एवं मतभेद को समाप्त करने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। उनका कहना है कि भगवान महावीर जितने बड़े आध्यात्मिक पुरुष थे, उतने ही मनोवैज्ञानिक भी थे। उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक रहा है जो अपने आप में अद्वितीय है। भगवान महावीर ने 15 प्रकार के सिद्धत्व का विधान

किया है। तीर्थ महावीर के अनुसार सिद्धत्व का संबंध ना देश से है ना राज्य से है।महावीर की वाणी तो यह सिखाती है कि भले कोई इस्लाम धर्म में जन्म क्यों ना ले ,अगर उसके विचार क्रोध ,मान ,माया ,लोभ ,राग, द्वेष से रहित हैं ,पवित्र है कषाय मुक्त है तो इस्लाम धर्म के भी लोग मुक्त हो सकते हैं। और अगर कषाय मुक्त नहीं है तो वह संन्यास धारण करके भी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता । वे कहते हैं कि हम अपने अस्तित्व को दूसरे के अस्तित्व की तरह स्वीकार करें। हमें अपने विचारों की तरह दूसरे के विचारों और दूसरे धर्म का अपमान नहीं करना, तिरस्कार नहीं करना, उनका भी सम्मान करना चाहिए। आचार्य प्रवर कहते हैं कि जैन धर्म अहिंसा एवं शांति युक्त हैं। उन्होंने अहिंसा विश्व भारती संस्था की शुरुआत की। इसलिए उनको विश्व शांति दूत के नाम से भी जाना जाता है।

आम आदमी अपने और अपने परिवार के लिए जीवन जीता है जबकि संत संपूर्ण मानव मात्र के लिए जीवन जीता है। संत का दृष्टिकोण व्यापक होता है। उसके हृदय में वसुधैव कुटुंबकम की भावना पलती है ।सत्य का आचरण करने वाला संत होता है ।जिसने अपने आचरण, व्यवहार से परम सत्य को पहचान लिया वही संत कहलाता है ।तत्व ज्ञानी संत की वाणी सांसारिक मनुष्य के लिए एक औषधि का कार्य करती है ।संत जाति, मजहब, संप्रदाय, परिवार से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता के लिए जीता है। देश पर जब भी कोई संकट आता है तब संत ही सर्वप्रथम आगे आते हैं और उसका समाधान खोजते हैं । भारत तो आरंभ से ही ऋषि परंपरा का देश रहा है। यहाँ की संस्कृति और सभ्यता को उन्होंने अपने ज्ञान से सींचा है ।हमारा देश तो इतना भाग्यशाली रहा है, जब भी कोई विपरीत परिस्थिति पैदा हुई है तब कोई संत विभूति कुसमय की धारा को मोड़ने के लिए अवतार रूप में प्रकट हुई है। सच्चा संत कभी पक्ष विपक्ष के चक्कर में नहीं पड़ता। वह तो अखिल भुवन को एक नजर से देखा है। ईश्वर भजन ,सेवा में आस्था, सदैव ध्यान लगाए रखना । यही सच्चे संत के लक्षण होते हैं। कबीर दास जी ने कहा है-

पखा पखी के कारणे, सब जग रहा भुलान।

निरपॅख होय के हरि भजे सोई संत सुजान।

आज मैं ऐसे ही एक विश्व प्रसिद्ध जैन संत से आपको रूबरू कराने जा रहा हूँ जिनका नाम संसार भर में विश्व शांति दूत के नाम से मशहूर है। वे हैं आचार्य प्रवर लोकेश मुनि जी महाराज।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी और प्रखर वक्ता आचार्य लोकेश मुनि जी विश्व शांति दूत के रूप में मानवता की सेवा के लिए अनवरत कदम बढ़ा रहे हैं । विश्व शांति ,मानव भलाई के लिए बीस हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा भी कर चुके हैं। अपने मौलिक विचारों को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने अहिंसा विश्व भारती की स्थापना नई दिल्ली में की है ।सामाजिक कुरीतियों पर वे बेबाक बोल जाते हैं। सबके आदर्श जैन संत का जन्म 17 अप्रैल 1961 को बाड़मेर के पचपदरा शहर में हुआ था । 8 अगस्त 1983 को बालोतरा में आचार्य तुलसी के द्वारा आपको भिक्षु बनाया गया। आपने अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी करने के बाद जैन, बौद्ध और वैदिक दर्शनों का गहन अध्ययन किया। वे हिंदी, संस्कृत अंग्रेजी, गुजराती और कई देशी- विदेशी भाषाओं के अच्छे जानकार हैं। आचार्य लोकेश मुनि जी की पहचान एक अच्छे लेखक और कवि के रूप में भी है। उन्होंने गद्य- पद में लगभग एक दर्जन श्रेष्ठ रचनाओं का सृजन किया है। वे विश्व धर्म संसद को भारत की ओर से संबोधित भी कर चुके हैं। विदेशी राष्ट्राध्यक्षों के द्वारा उन्हें कई बार अपने देश में आमंत्रित किया जा चुका है। उन्हें अब तक निम्नलिखित सम्मानों से नवाजा जा चुका है।

राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव पुरस्कार 2010,एम्बेसडर ऑफ पीस अवार्ड 2014, गुलजारी लला नन्दा फाउंडेशन के नैतिक सम्मान से राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा सम्मानित, संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में अमेरिका द्वारा भारत गौरव पुरस्कार, नेशनल कम्युनल हार्मनी अवार्ड 2010 प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

आचार्य लोकेश मुनि के द्वारा किए गए लोककल्याणकारी कार्यों की प्रशंसा भारतीय प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री और विदेश के कई राष्ट्रियाध्यक्ष भी कर चुके हैं और सम्मानपूर्वक आपके आदर्शों की अनुपालना करते हैं। वे अपने

प्रवचनों में अक्सर कहा करते हैं कि अगर दुनिया को बदलना है तो पहले उनकी मानसिकता को बदलना होगा। आज समाज में शिक्षा अच्छी शिक्षा पाकर अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक तो बन रहे हैं लेकिन सच्चे इंसान नहीं बन रहे हैं ।अच्छा इंसान बनने के लिए नैतिक मूल्यों पर आधारित शांति युक्त शिक्षा प्रदान करने की महती आवश्यकता है। इसे प्राथमिक स्तर से ही अपनाना होगा ।तभी हम दुनिया को बेहतर बना सकेंगे। क्योंकि इंसान पढ़ने से नहीं गढ़े जाते संस्कार युक्त सिद्धांतों से गढ़े जाते हैं ।उनकी लिखी पुस्तक "द अनबॉर्न कर्स" सामाजिक कुरीतियों पर सीधा प्रहार करती है ।जिसने समाज को आईना दिखाने का काम किया है। इस पुस्तक के हिंदी संस्करण को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने और अंग्रेजी संस्करण को कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी के द्वारा रिलीज किया गया है। इस किताब की भूमिका पूर्व गृहमंत्री शिवराज पाटिल और पूर्व प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी के द्वारा लिखी गई थी। हाल ही में 28 मार्च 2024 को महाराज जी सिंगापुर में लोकमत ग्लोबल इकोनामिक कन्वेंशन को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर चुके हैं। इसके लिए उन्हें लोकमत ग्लोबल ट्रेलब्लेजर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। महाराज श्री का कहना है कि अहिंसा, शांति, सद्भाव ,समानता व भाईचारे से सभी को रहना चाहिए ।इनका मानना है कि धर्म को अपने हृदय में धारण करना चाहिए ।धर्म हमें मिलजुल कर रहना सीखाता है ।आचार्य प्रवर वैश्विक समाज में उभरती हुई एक आशा की किरण है, जो विश्व से आतंकवाद, हिंसा ,मतभेद, असमानता को मिटाने के लिए प्रयास करते हैं। जिस तरह का व्यापक दृष्टिकोण महावीर स्वामी का रहा था, ठीक ऐसा ही व्यापक और उदार दृष्टिकोण महाराज श्री का है। यदि हम अपना अस्तित्व बरकरार रखना चाहते हैं तो दूसरे का अस्तित्व स्वीकार करना सीखें । इस विचार के अनुपालन से समाज में अहिंसा की स्थापना होगी। यदि हम अपने प्रति अच्छे व्यवहार की उम्मीद रखते हैं तो स्वयं दूसरों के प्रति अच्छा व्यवहार करना सीखें।यह हमें उनके विचारों से सीखने को मिलता है।जो गीता का भी संदेश है।

चार वेद छह शास्त्र में बात लिखी हैं दोय।

सुख देते सुख होत हैं दुःख देते दुःख होय।

पर्यावरण के उपासक, मानवता के पुजारी , सच्चे राष्ट्रभक्त , आध्यात्मिक संत , विश्व शांति दूत जिनका श्रेष्ठ दुनिया बनाना स्वप्न हो , मानव सेवा ही जिनका नित्य कर्म हो ,आध्यात्मिक जीवन धर्म हो ,ऐसे उदार मना, कर्मयोगी , आचार्य प्रवर लोकेश जी महाराज के श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

क्रांतिकारी संत तरुण सागर जी महाराज -

ये संत कड़वे प्रवचन एवं क्रांतिकारी संत के नाम से भी विख्यात हैं। इनका जन्म मध्य प्रदेश के दमोह जिले में 26 जून ,1967 को हुआ ।उनके पिता प्रसन्नचंद्र, माता शांति बाई थी ।उनकी बहन माया ने बताया कि वे बचपन से ही धार्मिक थे। 8 मार्च 1981 को छत्तीसगढ़ में 14 वर्ष की उम्र में विद्यासागर जी पुष्पदंत सागर जी से उन्होंने दीक्षा ग्रहण की । ये हिंसा एवं भ्रष्टाचार को दूर करने वाले संत थे। इनको गुजरात मध्य प्रदेश में राजकीय अतिथि सम्मान प्राप्त हुआ। ये कड़वे प्रवचन देने वाले सन्त के नाम से विख्यात हैं।

रत्न वंश की शान आचार्य प्रवर श्री हीरा चंद्र जी महाराज साहब -

ये संत भी बडे निर्मल स्वभाव के हैं इनके चेहरे पर हमेशा शांति का तेज चमकता रहता है। इनका जन्म पीपाड़ (जोधपुर) में हुआ इनकी माता मोहिनी ,पिता मोती थे। इनको दीक्षा आचार्य प्रवर शोभाचंद्रजी व हस्तीमल जी ने दी। यह रत्न संघ के अष्टम पक्षधर है। इनका फरमान है। "व्यसन मुक्त हो सारा देश "यह चाहते हैं कि हमारा भारत देश व्यसनों से मुक्त हो अर्थात शराब गुटखा व सभी व्यसनों से मुक्त हो। जिससे कि हमारा देश आगे बढ़े और एक साथ मिलकर रहे। क्योंकि अनेकता में एकता का भाव ला कर हिंसा और भ्रष्टाचार को मिटाना है ।ये महाराज श्री क्रोध ,मान ,माया ,लोभ ,राग ,द्वेष से रहित हैं ।यह किसी भी जाति व धर्म में मतभेद नहीं करते। यह समभाव की साधना में लीन रहते हैं।

जैन धर्म का सार - जैन धर्म भी एक सर्वश्रेष्ठ धर्म है इस धर्म में अहिंसा को परम धर्म माना है। यह धर्म शांति ,सद्भावना, समानता व भाईचारे का है। यह किसी भी जाति में मतभेद नहीं करते और यह एकता में बंधे रहते हैं। हिंसा और भ्रष्टाचार को दूर करना चाहते हैं ।इस धर्म के लोग किसी का अपमान एवं तिरस्कार नहीं करते

बल्कि सभी धर्मों को सम्मान देते हैं ।यह जैन धर्म अहिंसा एवं शांति युक्त है।

"जिसके सिर पर हाथ गुरु का ,जीवन से तर जाए, मंजिल तो क्या चीज जगत में, खुद भगवान बन जाए "

ठीक इसी तरह के कार्य महाराज नानक दास जी राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर कर रहे हैं।पूरे देश के साहित्यकारों को एक सूत्र में बांधकर जो उन्होंने मानवता वादी साहित्यिक गतिविधियां शुरू की हैं वे निश्चित रूप से राष्ट्र को मजबूत बनाने वाली है।जहाँ भी राष्ट्रीयता की बात आती हैं वहाँ महाराज श्री आगे खड़े दिखाई देते हैं।इसलिए मैं उनकी राष्ट्रवादी सोच का समर्थन करता हूँ।

मानवीय मूल्यों की आवश्यकता के सम्बंध में शोधार्थी का नजरिया

मैं बचपन से ही संतो ,महापुरुषों के चरणों का अनुगामी रहा हूँ ।इसलिए मेरा नजरिया मानवता वाद से प्रभावित रहा है।कुछ मैंने संत कबीर साहेब,तुलसी दास जी और सूरदास जी सहित तमाम भक्तिकालीन कवियों को पढ़ा है। इससे मेरी सोच मानवीय गुणों से प्रभावित होती चली गई।

इस शोध के लेखन में मेरा मानवीय दृष्टिकोण ही प्रबल रहा है।

जिसमें मैंने संत नानक दास जी के चरित्र को व उनके व्यक्तित्व को मानवता से जोड़ कर उभारने का प्रयास किया है।जो सर्वथा उचित भी है।उनके व्यक्तिगत साक्षात्कार व उपलब्ध स्रोतों से प्राप्त जानकारी अनुसार यह सिद्ध होता है कि वे एक मानवता वादी संत हैं। उनके रोम रोम में मानवता पर्यावरण में वायु की तरह समायी हुई है।वे निरन्तर मानवता के आयामों को छूते जा रहें हैं। वे मोह ,माया,राग,द्वेष ,से स्वयं को मुक्त कर चुके हैं। वैसे सांसारिकता के मोह ने किसे नहीं जकड़ा ? इससे तो राजा महाराजा ऋषि मुनि भी प्रभावित हुए हैं।मन बहुत चंचल है।इस पर किसी का वश नहीं है।

कबीर दास जी ने कहा है-

मन मरा न माया मरी,मर मर गया शरीर।

आशा तृष्णा ना मरी ,कह गए दास कबीर।।

मन अति चंचल है, किसी एक अभिलाषा की पूर्ति होने के उपरांत मन में तुरंत ही नवीन अभिलाषा के अंकुर प्रस्फुटित होने लगते हैं। वस्तुतः लालसा कभी कम नहीं होती। निरंतर नवीन इच्छाओं के भंवर में फंसा हुआ मन, चाहकर भी इससे बाहर नहीं निकल पाता। कामनाओं के बवंडर का दुष्प्रभाव यह होता है कि मन में अशांति, तनाव के भाव घर बना लेते हैं। परिणामस्वरूप मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास पूर्णतया बाधित हो जाता है।मन का अस्वस्थ होना लक्ष्य प्राप्ति के लिए चल रही यात्रा में सबसे बड़ा अवरोध बन जाता है। ईर्ष्या एवं द्वेष जैसे भाव मन को अति महत्वाकांक्षाओं की ओर धकेल देते हैं, जिससे मन चाहकर भी शांति को प्राप्त नहीं कर पाता। प्रायः धनोपार्जन की लालसा ही मन की बेचैनी का मुख्य कारण है। मनुष्य का मन भौतिकवादी दृष्टिकोण का शिकार हो चुका है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए एक आपाधापी- सी मची हुई है। इस होड़ में मानवीय मूल्य पूर्णतया उपेक्षित हो चुके हैं। ऐसे में मानवीय मूल्यों की उपयोगिता कुछ ज्यादा ही बढ़ जाती है।मानवीय मूल्य उन नैतिक ,सामाजिक गुणों व सिद्धान्तों को दर्शाते हैं जो हमें उत्तम और सहज जीवन जीने के लिए अग्रसित करते हैं। इन जीवन मूल्यों में शामिल हैं-दया,क्षमा, त्याग,ईमानदारी, सद्भावना, अनुशासन, न्याय,समानता,स्वतंत्रता, नैतिकता,समझदारी,सहानुभूति, संवेदना, परोपकार की भावनाएं आदि।ये मानवीय मूल्य हमारे आचरण और व्यवहार को उज्ज्वल बनाते हैं।जिससे समाज में समरसता व आपसी सौहार्द का निर्माण होता है।समानता ,सद्भावना और परोपकार जैसे नैतिक मूल्य समाज में उच्च स्तरीय जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। ये ही जीवन मूल्य मनुष्य को मानव बनाते हैं।ये जीवन मूल्य ही हमारी सनातन भारतीय संस्कृति के सम्पूर्ण जीवन दर्शन को परिभाषित करते हैं। भारतीय वेद,उपनिषद व सभी धार्मिक ग्रंथ मानव मूल्यों का पाठ पढ़ाते हैं। ये हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने में मददगार सिद्ध होते हैं।सम्पूर्ण संसार में भरतीय संस्कृति को अलग पहचान दिलाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। आज संसार में शान्ति और अहिंसा का भाव जगाने में इनकी बहुत आवश्यकता बनी हुई है। मानव मूल्य समाज की पहली

आवश्यकता हैं। इन्हें समाज में यथा सम्भव लागू करना चाहिए।समय के साथ मानव मूल्य भी अपना स्वरूप बदलते रहते हैं।इनके बदलते स्वरूप का भी हमें ध्यान रखना चाहिए।

श्री राम और हनुमानजी का जीवन दर्शन हमें बताता है कि जीवन को सार्थक बनाना चाहिए । हमारे कर्म , आचरण ऐसे हो जिससे कि हम दूसरों की सेवा कर सके, सुख दे सके । सफलता, विफलता जीवन का अंश हैं। सभी सफलता ही चाहते हैं, लेकिन बिना परिश्रम व मानवीय मूल्यों के पाई हुई सफलता विफलता से भी भयानक है। परिश्रम व मानवीय मूल्यों का महत्व समझकर , विफलता से भी कुछ सीखें, तो विफलता भी गुरु बन जाती है।ऐसा भाव हमें नानक दास जी के जीवन चरित्र को पढ़कर समझ में आता है।

संघर्षों की आँधी में मानवता का दीप जलायेंगे।

तूफानों की क्या मजाल जो जलते दीप बुझाएंगे?

सम्बन्धों का भी अपना अलग महत्व है। सम्बन्धों का सूत्रधार ईश्वर ही है । अगर हमें अपने जीवन में प्राकृतिक व मानवीय मूल्यों को आत्मसात करना है तो भौतिक जगत में अपनी भूमिका और सम्बन्धों का निर्वहन भी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करना होगा। मेरा मानना है कि इस धरा पर सम्बन्धों का स्वरूप ईश्वर को खोजने का माध्यम बन सकता है। यदि हम यह विश्वास रखते है कि सब कुछ ईश्वर प्रदत्त है तो हमें उसके अनुसार प्रकृति के प्रत्येक सोपान पर अपनी सहृदयता और समर्पित भाव को रखना ही होगा,उसी कड़ी में मानवीय सम्बन्धों का भी अपना-अपना मूल्य है । इसी विश्वास ने माँ को ईश्वर सदृश स्वीकारा है । सच कहूँ तो प्रत्येक सम्बन्ध में ईश्वर का वास है। अगर हम ईश्वरीय सत्ता में विश्वास रखते हैं तो हम सम्बन्धों के महत्व को बड़ी सहजता और सरलता से निभाना चाहिए ।

प्रत्येक सम्बन्ध की अपनी गरिमा और सार्थकता उसके निर्वहन में ही है ।सम्पूर्ण रामचरित मानस मानवीय मूल्यों और रिश्तों की मर्यादा सीखाने वाला महाकाव्य है।हमें उससे सीख और प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।ऐसी ही मानवीय संवेदना संत

नानक दास जी के व्यक्तित्व व कृतित्व में दिखाई पड़ती है।इसीलिए मैं उनके विचारों का समर्थन करता हूँ। उनका व्यवहार ऐसा है कि वे एक बार रिश्ता जोड़ने पर उसे जल्दी तोड़ते नहीं है।अपने शिष्यों के हर दुःख दर्द या खुशी में उनके साथ खड़े नजर आते हैं।ऐसा व्यवहार दुनिया का कौन साधु करता है ? उनकी इस आदत मे फादर बुल्के के जीवन की एक आदर्श छवि दिखाई देती है।सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने फादर बुल्के को इसी विशेषता के कारण मानवीय करुणा की दिव्य चमक कहकर संबोधित किया है। उन्होंने भारत को अपनी कर्म भूमि बना कर जीवन समर्पित कर दिया था।वे भारतीय धरती पर विदेशी होने के बावजूद भी संस्कारो से भारतीय थे।उनके निधन पर हजारों भारतीयों की आंखें नम थी। ऐसा उनकी मानवीय वृत्ति के कारण था। क्योंकि मानवता वादी व्यक्ति एक देश का न होकर सम्पूर्ण विश्व के लिए जीता है । ऐसा ही कुछ नानक दास जी में दिखाई पड़ता है।महाराज नानक दास जी को भी " मानवीय करुणा की दिव्यात्मा " कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होंगी।ऐसा मेरा मानना है।मेरा दुनिया को यही संदेश है-

हमको मिलकर इस धरती पर,

एक नया सवेरा लाना है।

जड़ -चेतन को अब तो यारों,

जीवन- राग सुनाना है।

याद रखो तुम मेरे साथी,

कभी हौंसला मत छोड़ो।

दुनिया नई बनानी है तो,

मानव से मानव को जोड़ो।

मानवीय शोध का सार

अनुसन्धान लेखक के अनुभव ,कौशल और तार्किक बुद्धि की उपज

होता है। जो उसके मन की अमूर्त भावनाओं का मूर्त रूप बनकर शोध प्रपत्र में सबके सामने आता है। लेखकों में ईश्वरीय अंश जन्मजात होता हैं। गीता के 10 वें अध्याय में कहा गया है कि " मैं लेखकों में वेदव्यास हूँ और कवियों में शुक्राचार्य " । कवि व लेखक का नजरिया स्वत: ही मानवीय गुणों से ओतप्रोत रहता है। ऐसा ही सहृदय मुझे भी विधाता ने भेंट किया है। इसके लिए मैं ईश्वर का शुक्रगुजार हूँ। इस शोध में मेरा मानवीय दृष्टिकोण उभर कर सामने आया है। वैसे आज दुनिया में मानवता को शर्मसार करने वाली दुर्घटनायें बहुत हो रही हैं लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि मानवता नष्ट हो गई। मानवता अभी भी संसार में मौजूद हैं । बस उसे सकारात्मक दिशा देने की आवश्यकता है। यही कार्य आज दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसन्धान संस्थान कर रहा है। आज जब हम आए दिन अखबार में छपी घटनाओं को देखते हैं तो ऐसा लगता है। जैसे संसार से मानवता गायब हो गई है। मानवता को शर्मसार करने वाली अनेक घटनाएं रोज हमारे सामने आ रही हैं। ऐसे में मानवता के प्रति लोगों में रुचि जगाना हम जैसे लेखकों का पहला धर्म बनता है। कहा भी है-

यही हर धर्म , हर मजहब , हर ईमान कहता है।

खिदमत कर इंसान की जिसमें भगवान रहता है।

मनुष्य में मनुष्य होने के लिए मनुष्यता का होना बेहद जरूरी है। मनुष्यता के बिना मनुष्य बिना नीर की नदी के समान है। जिसका ना तो कोई महत्व है और नहीं कोई सार्थक उपयोग। मानवता पर शोध कार्य पहले से ही बहुत कम हुए हैं। लेकिन डॉक्टर अभिषेक जी के द्वारा चलाई गई यह मुहिम भविष्य में बहुत ही सार्थक सिद्ध होगी ।

मनुष्य का एक ही पवित्र कर्म है और एक ही धारण करने योग्य धर्म है, वह है मानवता।

जो व्यक्ति अपने जीवन को मानवता की सेवा में समर्पित कर दे, वही सच्चा सेवक है। यह हमें महंत नानक दास जी की कर्म निष्ठा से सीखने को मिलता है। आज ज्यादातर लोग

भौतिक वस्तुओं को पाने के लिए अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देते हैं, लेकिन जब वे इस दुनिया से विदा होते हैं तो वे अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा पाते। उनकी सारी कमाई यहीं रह जाती है। अगर वे कोई चीज अपने साथ ले जाते हैं तो वह है , उनके अच्छे कर्म और लोगों की असीम दुआएं।

हम इस दुनिया में इंसान बनकर आए हैं तो सिर्फ इसलिए कि हम मानव सेवा कर सकें। पूरे विश्व में ईश्वर ने हम सभी को एक समान बनाया है। राम चरित में भगवान राम कहते हैं -

"सब मम प्रिय सब मम उपजाए ।

सबसे अधिक सन्त मोहि भाए"।।

फर्क बस इतना है कि स्थान और जलवायु के हिसाब से हमारा रंग-रूप, खान-पान और जिंदगी जीने का अलग-अलग तरीका है। आत्मभाव से हर मनुष्य एक समान है। गुरु नानक दास जी कहते हैं कि एक पिता की संतान होने के बावजूद हम ऊंचे -नीचे कैसे हो सकते हैं ? हम सब एक ही मिट्टी के बने हैं।पंच तत्व हम सबके भीतर मौजूद हैं। जिस दिन यह सच्ची बात हमारे मन में समझ आ जाएगी उसी दिन ये सारे भेद भाव स्वतः ही मिट जाएंगे। तब हम इंसानियत की राह पर अग्रसर होकर भाई-चारे से श्रेष्ठ व आदर्श समाज की स्थापना कर सकेंगे। कोई धर्म शास्त्र आपस में बैर रखना नहीं सिखाता। कहते हैं -मजहब नहीं सिखाता ,आपस में वैर रखना। लेकिन आज संसार की दशा कुछ ऐसी हो गई है-

आदमी में आदमी को ढूंढ रहा है आदमी।

आदमी की खोज में खुद खो गया है आदमी।

आदम से आदमी बनने के लम्बे सफ़र में।

न जाने कहाँ भटक गया है आदमी।

सभी एक ही संदेश देते हैं कि मानवता की सेवा ही सच्चे अर्थों में नारायण की सेवा है। तभी हमारे मानव होने की सार्थकता है। वर्तमान में हमने मानवता को भुलाकर

अपने को जाति-धर्म, गरीब-अमीर जैसे कई जटिल बंधनों में बांध लिया है और उस ईश्वर को अलग-अलग बांट दिया है। धर्म के नाम पर हमने कई तथाकथित संघठन बना लिए हैं।इस शोध में आपको समझ में आएगा कि धर्म एक पवित्र अनुष्ठान भर है, जिससे आत्मिक चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म मनुष्य में मानवीय गुणों के विचारों के प्राकट्य का स्रोत है, जिसके आचरण से मानव अपने जीवन को चरितार्थ कर पाता है। मानवता के लिए न तो पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होती है और न ही धन की, बल्कि सेवा भाव तो मनुष्य के आचरण में होनी ही चाहिए। जो गुण व भाव मनुष्य के आचरण में न आए, उसका कोई मतलब नहीं रह जाता।इसलिए ज्ञान का हमारे व्यवहार और आचरण में उतरना बहुत जरूरी है।

कहते हैं-

" ज्ञान कर्म में ढल जाए तो जीवन का शृंगार बने।"

मेरे द्वारा किया गया यह शोध कार्य संसार में मानवता को जगाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा । समाज में भ्रातत्व भावना ,समरसता ,एकता, शांति ,अहिंसा ,स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना जगाने में यह अनुसंधान कार्य बहुत ही उपयोगी है।इस शोध प्रपत्र में नानक दास जी महाराज और उनके व्यक्तित्व में समायी मानवता को वैश्विक पटल पर उभारने का कार्य किया है।उनके सामाजिक अखंडता सम्बन्धित विचार इसमें मेरे द्वारा समाहित किए गए हैं। इस शोध में नानक दास जी महाराज का व्यक्तित्व, उनके मानवता के लिए किए गए कार्य ,उनके उपदेश और उनकी विचारधारा को मानवता से जोड़कर देखा गया है। इसमें मानवता का अर्थ उसका स्वरूप ,विस्तार, वर्तमान भविष्य में उसकी उपयोगिता, मानवता का पालन कैसे करें? मानव धर्म क्या है?कर्म भावना का विकास कैसे किया जाए ? श्रेष्ठ दुनिया के निर्माण में हमारे सन्तों व महापुरुषों का योगदान क्या रहा है ?आदि विषयों को मैंने गहन अनुसन्धान और अपने अनुभव से समझ कर स्पष्ट करने का एक सार्थक प्रयास किया है। संसार नैतिकता व बिना मानवीय आदर्शों के सही दिशा में पुष्पित व पल्लवित नहीं हो सकता ।

इसके लिए मर्यादापालन व आत्मानुशासन बहुत जरूरी हो जाता है। यह हमें इस शोध कार्य से सीखने को मिलेगा। राजतंत्र का दीपक वर्षों पहले बुझ चुका है ।अब लोकतंत्र के दीपक में भी कम ही तेल बचा है। उसमें भी मानवीय मूल्य लुप्त प्राय: से हैं। ऐसे में काम ,क्रोध, मद , लोभ,अहंकार,स्वार्थ, छल,प्रपंच , झूँठ,फरेब से उपजे हृदय विदारक घावों को मानवता का मरहम लगाना अति आवश्यक हो गया है। मेरा यह शोध कार्य इस दृष्टिकोण से बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। महंत श्री नानक दास जी जो इस शोध कार्य के केंद्र बिंदु हैं । वे स्वयं सामाजिक समरसता और मानवता के पुरोधा रहें हैं। जिनके जीवन से हमें नि:स्वार्थ मानवहित कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। मैं आशा करता हूँ कि मानवता कि यह परम् ज्योति जो नानक दास जी महाराज और डॉ. अभिषेक कुमार जी ने जलाई है। यह अविरल जलकर संसार को वर्षों -वर्षों तक इसी तरह जगमग और प्रकाशित करती रहेगी।

नहीं चाहिए नफ़रत हमें ,

शांति और प्यार चाहिए।

बेशक़ छोटा ही हो मगर,

द्वेष मुक्त संसार चाहिए।

इति श्री